सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 118, नई दिल्ली, सोमवार 07 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 दिल्ली में लाडली योजना के लाभार्थियों में आई लगभग 60 प्रतिशत की कमी
06 ब्रेन हेल्थ और एजिंग की समझ
08 सरकारी एम्बुलेंस सेवा की रेटिंग की जाएगी

दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल क्या सच में दिल्ली की जनता के समय सीमा समाप्त वाहनों को बचवाना चाहते हैं, आइए जाने कुछ तथ्यों से

संजय बाटला

नई दिल्ली। आपकी जानकारी के लिए सर्वप्रथम आपको बता देना चाहता हूं की एनजीटी के आदेश के खिलाफ एमओआरटीएच द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष सिविल अपील संख्या 6686-6688/2019 दायर कर रखी है।

यहां यह जानना अति आवश्यक है की माननीय उच्चतम न्यायालय में इस तरह की अपील लगाने का और लगी अपील को लिस्टेड करवाने के लिए राज्य सरकार और दिल्ली में उपराज्यपाल ने क्यों नहीं बात उठाई भारत सरकार के सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा लगाई गई अपील को लिस्टेड करवाने के लिए उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग में से किसी ने भी प्रयत्न नहीं किए आज तक। फिर किस आधार पर आज उपराज्यपाल, दिल्ली सरकार जनता के बीच इस बात का दावा कर रहे है की वह जनता के समय सीमा पूरे हो चुके वाहनों को प्रदूषण के आधार पर स्क्रैप करवाएंगे ना की उम्र के आधार पर।

यहां आपकी जानकारी हेतु याद करवा दें दिल्ली में वाहनों को उम्र के आधार पर चलने से रोक माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) दिल्ली में 26 नवंबर 2014 में 15 साल पूरे होने पर लगाई थी और 07 अप्रैल 2015 में डीजल के वाहनों को दिल्ली की सड़को पर चलने की सीमा 10 साल की थी और इसके बाद 29 अक्टूबर 2018 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी दिल्ली एनसीआर की सड़को पर

डीजल के वाहनों को 10 साल एवं पेट्रोल के वाहनों को 15 साल पूरे होने पर सड़को पर चलने से रोक लगा दी थी।

अब प्रश्न यह उठता है कि

1. जो कार्य दिल्ली के प्रशासक उपराज्यपाल, दिल्ली सरकार और दिल्ली परिवहन विभाग को 2015 में एनजीटी के समक्ष रखना चाहिए था और 2018 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष रखना चाहिए था तब क्यों नहीं रखा ?

2. जब सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय द्वारा एनजीटी और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी आदेश के खिलाफ 2019 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष अपील लगा दी तब भी दिल्ली प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली सरकार और दिल्ली परिवहन विभाग ने उसे लिस्टेड कराने के लिए भी प्रयत्न क्यों नहीं किया ?

3. आज दिल्ली परिवहन विभाग से सेवा निवृत उपायुक्त बढ़ चढ़ कर अखबारों, मीडिया और डिजिटल सेवा के माध्यम से उपराज्यपाल और दिल्ली सरकार द्वारा घोषित बयानों पर बयान कर रहे है तब तो परिवहन विभाग में कार्यरत थे तो इस मुद्दे पर चुप क्यों रहे ?

4. उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग ने अपनी ताकत का दुरूपयोग कर जनता के घरों में भी खड़े समय सीमा समाप्त के वाहनों को बलपूर्वक उठवा कर स्क्रैप डीलरो जो की बाहरी राज्यों में पंजीकृत है को सुपुर्द कर दिए और उनकी स्क्रैप कीमत तक वाहन मालिकों को नहीं मिली और साथ ही स्क्रैप सर्टिफिकेट को भी बाजार में बिकवा दिए तब क्यों चुप थे?

5. आज अन्य समाचार पत्र उपराज्यपाल, दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग से सेवा निवृत उपायुक्त के बयानों को जनहित में बता कर छाप रहे है पर किसी ने इनसे एक बार भी नहीं पूछा की जो अपील भारत सरकार के सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय ने 2019 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष दायर की थी उसको लिस्टेड करवाने के लिए क्या प्रयत्न किया गया था और आज भी क्या कर रहे हो ?

6. कुल मिलाकर ऊपर दिए गए तथ्य स्पष्ट रूप से सिद्ध कर रहे है की उपराज्यपाल दिल्ली जो भी बोल रहे हैं अगर उसे सच मान लिया जाए तो सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय ने सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष अपील लगाई थी और उस समय से इसी पद पर यह आसीन थे तो इनके द्वारा उस सिविल अपील को लिस्टेड करवाने का कार्य क्यों नहीं किया गया और जनता को परिवहन विभाग द्वारा गैर कानूनी तरीके से लुटते हुए देखने के बाद भी कोई कार्यवाही क्यों नही की गई ?

दिल्ली की जनता उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली सरकार के समय सीमा समाप्त हो चुके वाहनों पर दिए गए बयान पर तब तक प्रसन्न नहीं हो जब तक माननीय उच्चतम न्यायालय इस पर कोई आदेश पारित नहीं कर दे और वह पारित होगा जब सिविल अपील जो 2019 से लिस्टेड के लिए रुकी हुई है वह लिस्टेड होगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

उम्र पूरी कर चुके वाहनों को मिलेंगे ईंधन? प्रतिबंध से राहत देने की तैयारी; दिल्ली सरकार और एलजी ने बताया अव्यावहारिक

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में पुराने वाहनों को लेकर राहत की उम्मीद है। प्रदूषण नियंत्रण के प्रयासों को देखते हुए पुराने वाहनों को जब्त करने का अभियान वापस हो सकता है। पर्यावरण मंत्री ने अभियान रोकने का आग्रह किया है जबकि एलजी ने इसे अव्यवहारिक बताया है। सीएक्यूएम इस मामले पर विचार कर रहा है और जल्द ही घोषणा कर सकता है।

नई दिल्ली। उम्र पूरी कर चुके (ईओएल) वाहनों के मामले में जल्द ही राहत मिलने के आसार हैं। प्रदूषण से जंग में दिल्ली सरकार द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासों और शहर की वायु गुणवत्ता में सुधार को देखते हुए फिलहाल के लिए ऐसे वाहनों को ईंधन न देने एवं उन्हें जब्त करके स्क्रैपिंग के लिए भेजने के अभियान को वापस लिया जा सकता है। एक दो दिन के अंदर ही वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) द्वारा इसे लेकर घोषणा कर दिए जाने के संकेत हैं।

सिरसा के बाद एलजी वीके सक्सेना ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखकर पुराने वाहनों पर प्रतिबंध को अव्यवहारिक करार दिया है। साथ ही दिल्ली सरकार को इस संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट का रूख करने की सलाह दी है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक दिल्ली सरकार के पत्र पर तीन दिन से चुप्पी साधे हुए सीएक्यूएम सारे हालातों पर निगाह रखे हुए है। इस दौरान दिल्ली सरकार के उपायों व प्रदूषण की स्थिति के साथ- साथ हरियाणा और पंजाब के अधिकारियों संग भी समीक्षा बैठक की गई है। सीएक्यूएम ने प्रदूषण से जंग में हर स्तर पर हो रहे प्रयासों पर संतोष जताया है।

अभी तक 93 वाहन किए जा चुके हैं जब्त

गौरतलब है कि सीएक्यूएम के आदेश पर दिल्ली में 15 साल पुराने पेट्रोल और 10 साल पुराने डीजल वाहनों को 'एंड ऑफ लाइफ' मानकर एक जुलाई से उन्हें ईंधन न देने और जब्त कर स्क्रैप करने का अभियान चल रहा है। अभी तक 93 वाहन जब्त किए जा चुके हैं। इससे वाहन चालकों के मन में डर एवं चिंता का माहौल है।

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने इसी के मद्देनजर बृहस्पतिवार को सीएक्यूएम अध्यक्ष के नाम पत्र लिखकर इस अभियान को रोकने का आग्रह किया है। सिरसा ने पत्र में पेट्रोल पंपों पर लगाए गए एएनपीआर कैमरों में गड़गड़ी का तर्क रखते हुए इसमें परिचालन व ढांचागत चुनौतियां भी बताई हैं।

वर्तमान में इस आदेश को लागू करना संभव नहीं: सिरसा

यह भी कहा है कि वर्तमान में इस आदेश को लागू करना संभव नहीं होगा। इसीलिए सीएक्यूएम से यह आग्रह किया गया हैं कि निर्देश संख्या 89 के क्रियान्वयन को तब तक तत्काल प्रभाव से रोक दिया जाए, जब तक कि एएनपीआर प्रणाली पूरे एनसीआर में एकीकृत न हो जाएं।

सिरसा के बाद एलजी वीके सक्सेना ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखकर पुराने वाहनों पर प्रतिबंध को अव्यवहारिक करार दिया है। साथ ही दिल्ली सरकार को इस संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट का रूख करने की सलाह दी है।

सीएक्यूएम ने प्रदूषण से जंग में हो रहे प्रयासों पर संतोष जताया

आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक दिल्ली सरकार के पत्र पर तीन दिन से चुप्पी साधे हुए सीएक्यूएम सारे हालातों पर निगाह रखे हुए है। इस दौरान दिल्ली सरकार के उपायों व प्रदूषण की स्थिति के साथ- साथ हरियाणा और पंजाब के अधिकारियों संग भी समीक्षा बैठक की गई है। सीएक्यूएम ने प्रदूषण से जंग में हर स्तर पर हो रहे प्रयासों पर संतोष जताया है।

सीएक्यूएम सूत्रों ने बताया कि आयोग के अध्यक्ष राजेश वर्मा सोमवार को आयोग के अन्य सदस्यों एवं मामले से संबद्ध हितधारकों के साथ सभी पहलुओं के मद्देनजर चर्चा करेंगे। इस बैठक के बाद संभव है कि सोमवार को ही यह अभियान फिलहाल स्थगित करने की घोषणा कर दी जाए और नहीं तो अगले एक दो दिन में कर दी जाएगी।

बताया जाता है कि दिल्ली सरकार के अनुरोध पर इस अभियान को अब दिल्ली-एनसीआर में एक साथ क्रियान्वित किया जा सकता है। साथ ही दीर्घावधि में पुराने वाहनों को स्क्रैप करने के लिए उम्र के बजाए उत्सर्जन मानकों को आधार बनाकर नीति में बदलाव के लिए विचार करने के लिए भी सोचा जा सकता है।

अब नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का बदलेगा नाम! बीजेपी सांसद ने रेल मंत्री को भेजा प्रस्ताव; ये हो सकता है नया नाम

दिल्ली में रेलवे स्टेशनों के नाम बदलने की मांग तेज हो गई है। चांदनी चौक के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का नाम पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह भारत की राजधानी का प्रमुख द्वार है और वाजपेयी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने उनके योगदान और नेतृत्व को सराहा।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भी रेलवे स्टेशनों का नाम बदलने की मांग तेज हो गई है। कुछ दिन पूर्व दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन का नाम 'महाराजा अग्रसेन रेलवे स्टेशन' करने के मांग की थी।

वहीं, अब चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखने का आग्रह किया है।

खंडेलवाल ने अपने पत्र में कहा कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन भारत की राजधानी का प्रमुख रेल द्वार होने के साथ-साथ देश का सबसे व्यस्त और प्रतिष्ठित स्टेशन भी है। ऐसे में इसे भारत रत्न और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखना उनकी अद्वितीय सेवाओं और योगदान को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी के नाम पर करने की मांग

उन्होंने लिखा कि अटल बिहारी वाजपेयी जी एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने भारत को आर्थिक सुधार, अवसंरचना विकास और वैश्विक मंच पर मजबूत स्थिति दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उनके समावेशी राजनीतिक दृष्टिकोण, गरिमापूर्ण नेतृत्व और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता ने उन्हें सभी दलों और देशवासियों में अत्यंत सम्मान दिलाया।

प्रवीण खंडेलवाल ने अपने पत्र में कई बातों का किया उल्लेख

प्रवीण खंडेलवाल ने अपने पत्र में यह भी उल्लेख किया कि देशभर में कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक संस्थानों और परिवहन हब का नाम राष्ट्रीय प्रतीकों और महान नेताओं के नाम पर रखा गया है। जैसे मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल और बेंगलुरु का क्रांतिवीर संगोली रायन्ना स्टेशन। उसी तरह नई दिल्ली- जो देश की 'धड़कन' कही जाती है- को भी वाजपेयी जी के कद के नेता के सम्मान में एक नया नाम मिलना चाहिए। उन्होंने रेल मंत्री से इस प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार कर आवश्यक प्रक्रिया आरंभ करने का अनुरोध किया है।

डीटीसी पर जमीन अतिक्रमण करने का आरोप

नजफगढ़ में तालाब की 30.5 बीघा भूमि पर बना डाला बस टर्मिनल

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) पर नजफगढ़ में एक जल निकाय की 30 .5 बिस्वा भूमि पर अतिक्रमण करने का आरोप है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में दायर याचिका के अनुसार डीटीसी ने इस भूमि पर बस टर्मिनल का निर्माण किया। जिलाधिकारी ने एनजीटी को दिए हलफनामे में इसकी पुष्टि की है जिसके बाद एनजीटी ने डीटीसी और एमसीडी से जवाब मांगा है और आगे के निर्माण पर रोक लगा दी है।

नई दिल्ली। सामान्य तौर पर सरकारी एजेंसी से उम्मीद की जाती है कि अतिक्रमणकारियों से जल निकाय, यमुना बाढ़ व जंगल को अतिक्रमण करने से बचाएं, लेकिन मौजूदा मामले में दिल्ली परिवहन निगम ने ही जल निकाय की 30.5 बिस्वा भूमि पर अतिक्रमण कर बस टर्मिनल का निर्माण कर लिया। अतिक्रमण के खिलाफ नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में दाखिल एक आवेदन पर इस तथ्य की पुष्टि उत्तर-पश्चिम जिलाधिकारी ने स्वयं की है। एनजीटी के समक्ष दाखिल हलफनामा में कहा गया है कि नजफगढ़ गांव में तलाब के रूप में दर्ज 30.5 बिस्वा जमीन पर डीटीसी ने एक बस टर्मिनल व बहुमंजिला व्यवसायिक इमारत का निर्माण कर लिया।

एनजीटी में दाखिल हलफनामा में जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि संबंधित भूमि एक तलाब (जल निकाय) की है और यहां पर वर्तमान में जल निकाय पर अतिक्रमण कर डीटीसी द्वारा टर्मिनल का इस पर निर्माण किया गया है।

सुनवाई 20 अगस्त तक के लिए स्थगित कर दी

एनजीटी चेयरमैन न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव, न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल व पर्यावरण विशेषज्ञ डा. ए सेंथिल वेल की पीठ ने रिकार्ड पर लिया कि पूर्व के आदेश के बावजूद भी मामले में डीटीसी व एमसीडी द्वारा जवाब नहीं दाखिल किया गया। अदालत ने डीटीसी व एमसीडी को दो सप्ताह के अंदर जवाब दाखिल करने का निर्देश देते हुए सुनवाई 20 अगस्त तक के लिए स्थगित कर दी। साथ ही डीटीसी को अगले आदेश तक उक्त जगह पर कोई और निर्माण कार्य न करने का निर्देश दिया गया। एनजीटी आवेदनकर्ता करतार सिंह सहित अन्य की तरफ से दायर आवेदन पर विचार कर रहा है। इसमें आरोप लगाया गया है कि तलाब की भूमि पर अतिक्रमण कर सरकारी एजेंसी ने बस टर्मिनल और बहुमंजिला व्यवसायिक इमारत का निर्माण किया है।

भू- उपयोग में परिवर्तन का नहीं है कोई रिकॉर्ड

रिपोर्ट में यह भी कहा कि डीटीसी द्वारा की गई निर्माण गतिविधि के लिए वन विभाग से भू-उपयोग में परिवर्तन (सीएलयू) के संबंध में कोई भी औपचारिक सीएलयू या एनओसी का कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं है। संबंधित भूमि वेटलैंड्स (संरक्षण और प्रबंधन) नियम-2017 के अनुसार पहचान की गई वेटलैंड्स के दायरे में आती है और यह ग्रामसभा की जमीन है।

ऐसी भूमि पर निर्माण, रूपांतरण या पेड़ों की कटाई जैसी किसी भी गतिविधि के लिए उक्त नियमों के नियम-चार का अनुपालन करना आवश्यक है, हालांकि, उपलब्ध रिकार्ड के अनुसार इसे पूरा नहीं किया गया है। वहीं, डीडीए ने अपने जवाब में कहा कि जल निकाय 31 मई 2016 को तत्कालीन दक्षिण दिल्ली नगर निगम (अब एमसीडी) को सौंप दिया गया था। इसका रख-रखाव अब एमसीडी की ही जिम्मेदारी है।

वासुदेव द्वादशी आज

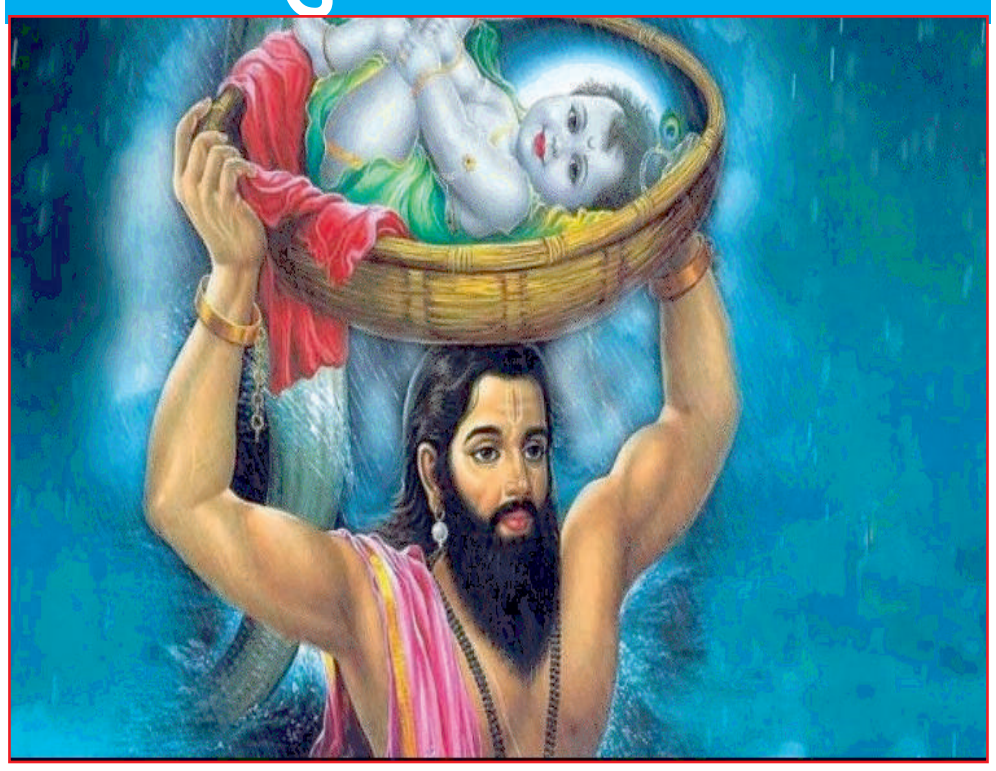

वासुदेव द्वादशी के दिन भगवान श्री कृष्ण के साथ भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा भी की जाती है। इस दिन का हिंदू धर्म में खास महत्व होता है।

वसुदेव द्वादशी का महत्व

==========

हिंदू मान्यताओं के अनुसार जो भी मनुष्य वासुदेव द्वादशी का व्रत करता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा जो भी वैवाहिक दंपती संतान प्राप्ति की कामना रखते हैं उन्हें वासुदेव द्वादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए।

क्यो मनाई जाती है वसुदेव द्वादशी

==========

यह व्रत नारद द्वारा वासुदेव एवं देवकी को बताया गया था। भगवान वासुदेव और माता देवकी ने पूरी श्रद्धा से आषाढ़ मास के शुक्ल की द्वादशी तिथि को यह व्रत रखा था। इसी व्रत के कारण उन्हें भगवान श्री कृष्ण के रूप में संतान की प्राप्ति हुई थी। इस व्रत की महिमा इतनी है कि इसके करने से व्यक्ति के सभी पाप कट जाते हैं। उसे पुत्र की प्राप्ति होती है या फिर नष्ट हुआ राज्य पुनः मिल जाता है।

कैसे करें ये व्रत

==========

सबसे पहले जल पात्र में रखकर तथा दो वस्त्रों से ढककर वासुदेव की स्वर्णिम प्रतिमा का पूजन तथा उसका दान करना चाहिए। सुबह सबसे पहले नहाने के बाद साफ कपड़े पहनने चाहिए। यह व्रत पूरे दिन रखा जाता है। भगवान को आप हाथ के पंखे, लैंप के साथ फल फूल चढ़ाने चाहिए। भगवान विष्णु की पंचामृत से पूजा करनी चाहिए। उन्हें भोग लगाना चाहिए। इस दिन विष्णु सहस्त्रनाम का जाप करने से आप की हर समस्या का समाधान होगा।

सुंदरकांड का पाठ करने से जीवन में आती है पॉजिटिविटी

अनन्या मिश्रा

अगर आप शनिवार को सुंदरकांड का पाठ करते हैं, तो हनुमान जी की कृपा प्राप्त होती है और वह प्रसन्न होते हैं। साथ ही शनिदेव भी आपका बुरा नहीं कर पाएंगे। ऐसे में आज हम आपको सुंदरकांड पाठ के महत्व, इसको करने की सही विधि और मान्यता के बारे में बताने जा रहे हैं।

सुंदरकांड रामायण का एक अहम और लोकप्रिय भाग है। माना जाता है कि सुंदरकांड का पाठ करने से जीवन में सकारात्मकता आती है और हनुमान जी की कृपा बरसती है। ज्योतिष और पौराणिक मान्यता के मुताबिक हनुमान जी से शनिदेव भी डरते हैं। शनिदेव की दशा के प्रभाव को कम करने के लिए हनुमान जी की पूजा करने की सलाह दी जाती है। वहीं अगर आप शनिवार को सुंदरकांड का पाठ करते हैं, तो हनुमान जी की कृपा प्राप्त होती है और वह प्रसन्न होते हैं। साथ ही शनिदेव भी आपका बुरा नहीं कर पाएंगे। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको सुंदरकांड पाठ के महत्व, इसको करने की सही विधि और मान्यता के बारे में बताने जा रहे हैं।

पूरी होती है इच्छा

हिंदू धर्म में मान्यता है कि सुंदरकांड का पाठ करने से भक्तों की मनोकामना जल्दी पूरी हो जाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखी गई रामचरितमानस के सात अध्यायों में से 5वां अध्याय सुंदरकांड है। हालांकि रामचरित मानस के सभी अध्याय भगवान की भक्ति के लिए हैं, लेकिन सुंदरकांड का महत्व अधिक है।

महत्व

पूर्ण रामचरितमानस में भगवान के गुणों को दर्शाया गया है। तो वहीं रामचरितमानस के सुंदरकांड की कथा सबसे अलग और निराली है। इसमें भगवान श्रीराम के गुणों की नहीं बल्कि उनके भक्त हनुमान जी के भक्त और उनकी विजय के बारे में बताया गया है।

सुंदरकांड का पाठ करने के लाभ

सुंदरकांड का पाठ करने वाले भक्तों को हनुमान जी बल देते हैं और आसपास निगेटिव एनर्जी भी नहीं भटक सकती है। जब भी आत्मविश्वास कम हो जाए, या जीवन में आत्मविश्वास कम होने लगे या कोई काम नहीं बन रहा हो, तो सुंदरकांड का पाठ करने से सभी काम खुद से बनने लगते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने भी सुंदरकांड के महत्व को बहुत खास माना है। विज्ञान ने भी इसके महत्व को समझाया है। इसका पाठ करने से भक्त में आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति को बढ़ाता है।

शनिदशा में लाभ

खुद शनिदेव भी हनुमान जी के भक्त हैं और उनसे भय खाते हैं। माना जाता है कि जिन जातकों पर शनि की ढैय्या या फिर साढ़ेसाती चल रही है, तो इन लोगों को रोजाना सुंदरकांड का पाठ करना चाहिए। इससे शनि की महादशा का प्रभाव कम होता है। शनि बिना कुछ बुरा किए इस महादशा की अवधि को गुजार देते हैं।

स्टूडेंट्स को भी सुंदरकांड का पाठ करना चाहिए। इसका पाठ करने से स्टूडेंट्स के अंदर आत्मविश्वास जगेगा और वह सफलता के करीब जाएंगे। आपको शायद मालूम न हो, लेकिन अगर आप सुंदरकांड के पाठ की पंक्तियों का अर्थ जानेंगे, तो जान पाएंगे कि इसमें जीवन की सफलता के सूत्र भी बताए गए हैं। इसलिए सलाह दी जाती है कि अगर कोई रामचरितमानस का पूर्ण पाठ न कर पाए, तो कम से कम सुंदरकांड का पाठ जरूर करना चाहिए।

सुंदरकांड का पाठ

धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक घर में रामायण का पाठ रखा जाए, तो पूर्ण पाठ में सुंदरकांड का पाठ घर-परिवार के किसी सदस्य को करना चाहिए। इससे पॉजिटिव एनर्जी का प्रवाह बढ़ता है। रोग दूर होते हैं और दरिद्रता खत्म होती है।

दूर होगा अशुभ ग्रहों का प्रभाव

सुंदरकांड का पाठ करने से घर के सभी सदस्यों के ऊपर से अशुभ ग्रहों से छुटकारा मिलता है। अगर इसका स्वयं पाठ नहीं कर सकते हैं, तो कम से कम घर के सभी सदस्यों को यह पाठ सुनना चाहिए। सुंदरकांड का पाठ करना अशुभ ग्रहों का दोष दूर करने में लाभकारी माना जाता है।

दूर होंगे गृह क्लेश

सुंदरकांड का पाठ करने से गृह क्लेश से छुटकारा मिलता है। इसका पाठ करने से सकारात्मक ऊर्जा आती है। जिससे घर में नकारात्मक शक्तियों से छुटकारा मिलता है। सुंदरकांड का पाठ करने से घर में सकारात्मक माहौल बनता है। घर में किसी के भी द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया जाता है, तो यह अधिक फायदेमंद होता है।

भगवान शिव और मां पार्वती के संवाद की साक्षी है अमरनाथ गुफा, जानिए इसका महत्व

अनन्या मिश्रा

हर साल सावन के महीने भगवान शिव के स्वयंभू हिमलिंग के दर्शन होते हैं। भक्त कई किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा करके इस पवित्र गुफा तक पहुंचते हैं। वहीं बर्फ से बने शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने जीवन को धन्य मानते हैं।

अमरनाथ यात्रा का नाम सुनते ही हमारे मन में बर्फ के बीच स्थित भगवान शिव की पवित्र गुफा उभर आती है। वहीं इस यात्रा में हर साल लाखों की संख्या में भक्त शामिल होते हैं। कहा जाता है कि जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से इस यात्रा पर जाते हैं, उनकी हर मुराद पूरी होती है और जीवन में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है। अमरनाथ यात्रा की यह गुफा जम्मू-कश्मीर के हिमालय में करीब 12,756 फीट की ऊंचाई पर मौजूद हैं।

बता दें कि हर साल सावन के महीने भगवान शिव के स्वयंभू हिमलिंग के दर्शन होते हैं। भक्त कई किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा करके इस पवित्र गुफा तक पहुंचते हैं। वहीं बर्फ से बने शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने जीवन को धन्य मानते हैं। बताया जाता

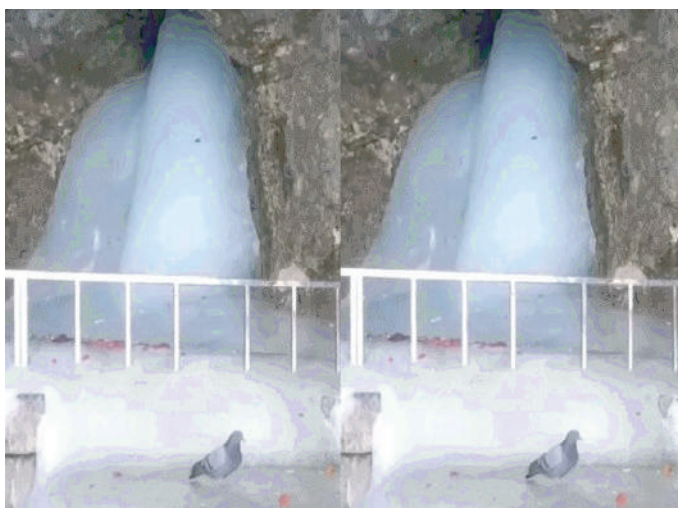

है कि भगवान शिव ने मां पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था। तब यही गुफा भगवान शिव और मां पार्वती की संवाद की साक्षी बनी थी। इसलिए इस स्थान को अमरनाथ कहा जाता है। भगवान शिव में आस्था रखने वाले लोग जीवन में एक बार इस यात्रा को जरूर करना चाहते हैं, जिससे उनके पाप मिट जाएं और मोक्ष मिल सके।

इतिहास

अमरनाथ गुफा की खोज को लेकर कई मत हैं। इतिहास के मुताबिक 1850 में बूटा मलिक नामक गड़रिए ने इस गुफा की खोज की थी। पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब कश्मीर घाटी पानी में डूब गई थी और झील बन गई थी। तब ऋषि कश्यप ने प्राणियों की रक्षा के लिए इस जल को कई नदियों और छोटे-छोटे जल स्त्रोतों से आगे प्रवाहित करने का काम किया। इस दौरान ऋषि भृगु हिमालय यात्रा पर थे, इस दौरान उनको अमरनाथ गुफा और शिवलिंग दिखाई दिया। तब से ही अमरनाथ में भगवान शिव की पूजा की जाने लगी।

महत्व

धार्मिक पुराणों के मुताबिक अमरनाथ गुफा वह जगह है, जहां भगवान शिव ने मां पार्वती को अमरकथा सुनाई थी। अमर कथा सुनने के बाद भी जो जीव जीवित रह जाता है, वह अमर हो जाता है। इसलिए भगवान शिव ने यहां आकर सब कुछ त्याग दिया था और फिर मां पार्वती को कथा सुनाई थी। बताया जाता है कि भगवान शिव ने अपना वाहन नंदी, नागों और गणों को भी दूर भेज दिया। जिससे कोई इस रहस्य को सुन न सके। लेकिन इस दौरान कबूतर के एक जोड़े ने इस कथा को सुन लिया और तभी से माना जाता है कि वह आज भी अमर हैं। इस कथा के कारण इस गुफा को अमरनाथ गुफा कहा जाता है।

अमरनाथ यात्रा की इतिहास

बता दें कि इस साल अमरनाथ यात्रा की शुरुआत 03 जुलाई से हो रही है और यह 31 अगस्त तक चलेगी। वहीं देशभर से हजारों की संख्या में भक्त इस पवित्र यात्रा में शामिल होते हैं। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। जिससे कि यात्रा निर्बाध रूप से संपन्न हो सके।

हिमाचल के इस मंदिर में हर 12 साल में गिरती है बिजली, जानिए अचानक से क्यों किया गया बंद

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में बिजली महादेव मंदिर स्थित है। जिसको अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि मंदिर समिति ने काशवरी गांव में स्थित मंदिर को बंद करने की सूचना के लिए जगह-जगह पोस्टर लगाए हैं।

हाल ही में बिजली महादेव मंदिर को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में बिजली महादेव मंदिर स्थित है। जिसको अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि मंदिर समिति ने काशवरी गांव में स्थित मंदिर को बंद करने की सूचना के लिए जगह-जगह पोस्टर लगाए हैं। लेकिन अफवाह है कि पिछले दिनों मंदिर में बिजली गिरी थी, जिसके कारण मंदिर को काफी नुकसान पहुंचा है। इसलिए मंदिर कार्यों को बंद कर दिया गया है। लेकिन अब मंदिर समिति ने इन सभी अटकलों पर विराम लगा दिया है।

हालांकि मंदिर समिति ने बिजली महादेव मंदिर पर बिजली गिरने का खंडन किया है। वहीं मंदिर को अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया गया है। यहां के स्थानीय लोगों को भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि मंदिर क्यों बंद किया गया है। बताया जा रहा है कि गुप्त कारज होने के कारण मंदिर को बंद किया गया है। इस अवधि में स्थानीय लोगों को भी मंदिर जाने की अनुमति नहीं होती है।

बिजली गिरने की है मान्यता

माना जाता है कि देवता के आदेश पर ही मंदिर के गुप्त कार्य होते हैं। मंदिर कब तक बंद रहेगा, इस बारे में किसी को जानकारी नहीं है। इस मंदिर में सिर्फ पुजारी और पुरोहित रहते हैं। मंदिर को लेकर धार्मिक मान्यता है कि हर 12 साल में बिजली महादेव मंदिर में आकाशीय बिजली गिरती है और मंदिर का शिवलिंग खंडित हो जाता है। बिजली खंडित होने के बाद सत्तू और मक्खन आदि से शिवलिंग को जोड़ा जाता है। वहीं स्थानीय लोगों की मानें, तो यहां पर बिजली भगवान शिव के आशीर्वाद से गिरती है और इलाके में व्याप्त सभी बुराइयां दूर होती है। भोलेनाथ की आज्ञा से ही इंद्रदेव शिवलिंग का इस तरह अभिषेक करते हैं।

कथा

बिजली महादेव मंदिर को लेकर एक कथा प्रचलित है कि प्राचीन काल में कुलांत नामक राक्षस ने ब्यास नदी का प्रवाह रोकने के लिए कुल्लू घाटी को डुबाने की कोशिश की। कुलांत नामक राक्षस ने खतरनाक सांप का रूप धारण कर घाटी को तबाह करने की योजना बनाई थी। तब भगवान शिव ने राक्षस से कहा कि तुम्हारी पूंछ में आग लग गई थी। जैसे ही कुलांत ने पीछे मुड़कर देखा तो भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से उसका वध कर दिया। जिससे कुलांत राक्षस का शरीर विशाल पर्वत में बदल गया। जिसको आज के समय में कुल्लू की पहाड़ी माना जात है। महादेव ने इंद्रदेव से कहा कि इस स्थान पर हर 12 साल में बिजली गिराएं, जिससे कि क्षेत्र की रक्षा हो सके।

देवी पार्वती की ऐसी कौन सी जिज्ञासा थी जिस पर भगवान शंकर को क्रोध नहीं आया?

सुखी भारती

यहाँ माता पार्वती जी ने संसार के लिए यह भी स्पष्ट कर दिया, कि भगवान श्रीराम जी की कथा कभी भी एक प्रकार से नहीं कही जाती है। ऐसा नहीं, कि किसी संत ने जैसी कथा कही, ठीक वैसे ही दूसरे संत भी कहेंगे। मुनि भारद्वाज जी को श्रीराम जी की कथा श्रवण करने का अत्यंत उत्साह है। मुनि याज्ञवल्क्य जी, भगवान शंकर के प्रसंगों के माध्यम से ही, उन्हें श्रीराम जी की कथा सुनानी आरम्भ करते हैं। वे कहते हैं, कि एक समय कैलाश पर्वत पर भगवान शंकर और माता पार्वती दोनों अत्यंत ही सुंदर व मनोहर वातावरण में बैठे थे। भगवान शंकर को अपने पर अपार स्नेहयुक्त भावों से सरोबार देख, माता पार्वती ने कहा-

'जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी।
जानिअ सत्य मोहि निज दासी।।
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना।
कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।'

अर्थात हे प्रभु! अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं, और सचमुच मुझे अपनी दासी जानते हैं, तो हे प्रभु! आप श्री रघुनाथजी की नाना प्रकार की कथा कहकर मेरा अज्ञान दूर कीजिए।

यहाँ माता पार्वती जी ने संसार के लिए यह भी स्पष्ट कर दिया, कि भगवान श्रीराम जी की कथा कभी भी एक प्रकार से नहीं कही जाती है। ऐसा नहीं, कि किसी संत ने जैसी कथा कही, ठीक वैसे ही दूसरे संत भी कहेंगे। एक ही प्रसंग को कोई संत किसी ओर प्रकार से बाँचेंगे, और दूसरे संत किसी अन्य प्रकार से।

इसमें एक और विशेषता होगी, कि उसी प्रसंग में अगर एक संत राग की व्याखया से रंगेंगे, तो हो सकता है, कि दूसरे संत उसी प्रसंग को वैराग्य की दृष्टि से बाँचते हुए भी दिख जायें। ठीक वैसे जैसे एक कुशल गृहणी, दूध से दही बनाते दिख सकती है, वहीं दूसरी गृहणी उसी दूध में नींबू डालकर, उसे पनीर बनाते भी दृष्टिपात हो सकती है।

'तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।।'

यहाँ माता पार्वती जी ने एक बात पर और बल दिया। वह यह, कि जो नाना प्रकार की श्रीराम कथा आप मुझे सुनाने जा रहे हैं, उसके सुनने से मेरे मन में उलझन नहीं होगी, अपितु मेरे अज्ञान का ही नाश होगा। किंतु जब माता पार्वती जी विनती करती हैं, तो एक शब्द ऐसा कहती हैं, मानों उनके मन में, अभी पूर्व जन्म वाली गाँठ अभी भी उन्हें खटक रही हो। वे आदर भाव से पूछती हैं-

'जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति मोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि।।'

अर्थात यदि श्रीराम राजपुत्र हैं, तो वे ब्रह्म कैसे हैं? यदि वे ब्रह्म हैं, तो एक साधारण

मानव की भाँति, पत्नि बिरह में उनकी मति बावली कैसे हो गई? ऐसे में मैं उनकी महान चरित्र गाथा को सुनकर, व दूसरी ओर, उनके ऐसे मानवीय चरित्र को देखकर, मेरी मति मानो चकरा गई है।

भगवान शंकर ने जब माता पार्वती जी के श्रीमुख से यह शब्द सुने, तो वे किसी भी प्रकार से खिन्न अथवा निराश नहीं हुए। उनके मन में एक क्षण के लिए भी नहीं उठा, कि देवी पार्वती का मन तो पूर्व जन्म की भाँति, फिर से शंकापूर्ण है। क्योंकि पूर्व जन्म, सती रुप में, उनके मन में, यही तो समस्या उत्पन्न हुई थी, कि श्रीराम जी ब्रह्म हैं, अथवा एक साधारण जीव? तब इसी संशय के कारण ही, सती के प्राणों की बलि हुई थी। आज वही प्रश्न फिर से पफ़न उठाये है। क्या इस जन्म में भी माता पार्वती जी को ऐसे प्रश्न ले डूबेंगे, अथवा समाधान होगा?

निश्चित ही भगवान शंकर को देवी पार्वती की ऐसी जिज्ञासा पर किसी प्रकार का क्रोध नहीं आया। कारण कि वे जानते हैं, कि प्रश्न भले ही वही हैं, जो पिछले जन्म में सती के मन में उठे थे। किंतु इस बार इन प्रश्नों के पीछे छिपी भावना संशय की नहीं, अपितु जिज्ञासा व लोक कल्याण की है। भोलेनाथ कहते भी हैं, कि हे पार्वती! तुमने जो श्री रघुनाथ जी की कथा का प्रसंग पूछा है, वह कथा समस्त लोकों के लिए जगत को पवित्र करने वाली गंगाजी के समान है। तुमने जगत के कल्याण के लिए ही प्रश्न पूछे हैं। तुम श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम रखने वाली हो।

'पूँछेहू रघुपति कथा प्रसंगा।
सकल लोक जग पावनि गंगा।।
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी।
कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी।।'

साथ में यह भी कह दिया-

'राम कृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं।।'

अर्थात हे पार्वती! मेरे विचार में तो श्रीराम जी की कृपा से तुम्हारे मन में स्वपन में भी शोक, मोह, संदेह और भ्रम इत्यादि कुछ भी नहीं है। फिर भी तुमने इसीलिए फिर वही शंका की है, कि इस प्रसंग को कहने-सुनने से सबका कल्याण होगा।

06 जुलाई से चातुर्मास प्रारम्भ, तुलसी से जुड़े करें ये उपाय, घर की दरिद्रता होगी दूर....

देव शयनी एकादशी से चातुर्मास की शुरुआत होने जा रही है। यह वह समय है, जब भगवान विष्णु चार महीने के लिए योगनिद्रा में चले जाते हैं। इस दौरान कोई भी शुभ काम जैसे कि विवाह, मुंडन या गृह प्रवेश आदि नहीं किए जाते हैं, लेकिन यह समय साधना और पूजा-पाठ के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

नियमित तुलसी पूजा -

चातुर्मास के दौरान प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद तुलसी को जल चढ़ाएं और शाम को तुलसी के पौधे के पास घी का दीपक जलाएं। दीपक जलाते समय 'ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करें। इस उपाय को करने से घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है।

तुलसी विवाह का संकल्प - अगर आपने अभी तक तुलसी विवाह नहीं किया है या करने का विचार कर रहे हैं, तो चातुर्मास में तुलसी विवाह का संकल्प लें और देवउठनी एकादशी पर इसे पूरा करें। ऐसा करने से वैवाहिक जीवन में खुशहाली आती है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

घर में तुलसी का पौधा लगाएं - अगर आपके घर में तुलसी का पौधा नहीं है, तो चातुर्मास के दौरान इसे लगाना बहुत शुभ माना जाता है। तुलसी का पौधा नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और जीवन में सकारात्मकता लाता है।

तुलसी के पत्ते का दान - अगर हो, पाए तो चातुर्मास के दौरान तुलसी के कुछ पत्ते तोड़कर भगवान विष्णु के मंदिर में अर्पित करें या किसी ब्राह्मण को दान करें। ऐसा करने से देवी महालक्ष्मी खुश होती हैं।

हरियाणा के सिरसा, कुरुक्षेत्र एवं झज्जर के कार्यालयों का भी डिजिटल उद्घाटन हुआ

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्लीः भारतीय जनता पार्टी के संगठन सदस्यता विस्तार के साथ ही भाजपा के सभी संगठनात्मक जिलों के कार्यालयों के निर्माण एवं आवंटन का कार्य भी तेज़ी से सम्पन्न हो रहा है।

इसी क्रम में आज भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने पार्टी मुख्यालय विस्तार में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में दिल्ली एवं हरियाणा के वरिष्ठ नेताओं के साथ ही हजारों कार्यकर्ताओं की उपस्थिती में दिल्ली भाजपा के महरौली, बाहरी दिल्ली एवं पश्चिमी दिल्ली के जिला कार्यालयों के साथ ही हरियाणा के झज्जर, सिरसा एवं कुरुक्षेत्र के जिला कार्यालयों का डिजिटल उद्घाटन किया।

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा , दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी एवं हरियाणा के अध्यक्ष मोहनलाल बडोली का दिल्ली भाजपा कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया।

केन्द्रीय कार्यक्रम का संयोजन एवं मंच संचालन दिल्ली भाजपा के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग ने किया। कार्यक्रम में सांसद मनोज तिवारी द्वारा गाये संगठन एवं सरकार के कार्यों के प्रोत्साहन के लिए गाये संगठन गीत ने उपस्थित कार्यकर्ताओं में नवीन उर्जा का संरचण किया।

दिल्ली के तीनों नवनिर्मित जिलों के कार्यालयों पर क्षेत्रीय सांसदों रामवीर सिंह बिधूड़ी, योगेन्द्र चांदोलिया एवं कमलजीत सहरावत के साथ दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश साहिब सिंह, कपिल मिश्रा, रविन्द्र इंद्राज सिंह, सरदार मनजिंदर सिंह सिरसा, पंकज सिंह के साथ ही क्षेत्रीय विधायक, पार्षद, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता सम्मलित हुए। तीनों कार्यक्रमों की अध्यक्षता जिलाध्यक्षों रविन्द्र सोलंकी, रामचंद्र चावरिया एवं राज गौतम ने की।

वीरेन्द्र सचदेवा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आज का दिन एक पवित्र दिन है और जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती भी है। जिस विचार को उन्होंने जनसंघ के रुप में अंकुरित किया आज उसी से भारतीय जनता पार्टी के विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हर्ष का विषय है की दिल्ली और हरियाणा के तीन-तीन जिलों का उद्घाटन आज हो रहा है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि पार्टी कार्यालय नए कार्यकर्ताओं को पुराने कार्यकर्ताओं द्वारा संस्कारित करने का केन्द्र होता है। कार्यालय में आने वाले कार्यकर्ताओं और दिल्ली के लोगों का काम हो यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है और हमें विश्वास है कि दिल्ली के जिन तीन कार्यालयों के उद्घाटन हो रहा है, वहां लोग अपनी

समस्या लेकर आएं और उसका समाधान करना हम सुनिश्चित करें।

हरियाणा के अध्यक्ष मोहन लाल बडोली ने कहा कि कुरुक्षेत्र, सिरसा और झझर जिला कार्यालय का उद्घाटन किया जा रहा है और हरियाणा में कुल 22 जिले हैं जिनमें से 20 जिला कार्यालयों का उद्घघाटन हो चुका है और 10 अगस्त से पहले 2 और बाकी जिलों के कार्यालयों का उद्घाटन हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जिला कार्यालय कार्यकर्ताओं के निर्माण का केन्द्र रहेगा और साथ ही सेवा ही संगठन के भाव से हम वहां काम करेंगे।

दीवारों से घिरे लोग

डॉ. नीरज भारद्वाज

सिनेमा, साहित्य और समाज सभी हमें अलग-अलग पक्षों पर अलग-अलग शिक्षा देते हैं। सिनेमा और साहित्य दोनों ही समाज का अंग हैं। इस दृष्टि से समझे तो समाज सबसे बड़ी शक्ति है, इसमें सभी कुछ दिखाई देता है। व्यक्ति समाज में जीवन यापन करता है और समाज के साथ ही रहता है। जो समाज से कट जाता है, वह हर एक हिस्से से धीरे-धीरे कटता चला जाता है। सिनेमा जगत में एक फिल्म बनी थी दीवार, जिसमें अभिनेता अमिताभ बच्चन और उनके भाई के बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है। एक अच्छाई के रास्ते पर चलता है तो दूसरा बुराई के रास्ते पर चलता है। इसी के चलते दोनों भाई अलग-अलग रहने लगते हैं। भाई-भाई के बीच घर का बंटवारा कितनी ही फिल्मों में दिखाया गया है। जब घर के बीच में दीवार होती है और एक ही परिवार दो हिस्सों में बट जाता है, यह बहुत ही दर्दनाक भी होता है। दूसरी ओर यह भी कहा जाता है कि अलग-अलग होकर ही यह देश-दुनिया बनी है। यहाँ ईंट-पत्थर की दीवार की बात नहीं हो रही है, विचारों के दीवार की बात हो रही है।

देखा-समझा जाए तो यह दीवार बड़े गजब की चीज है। कुछ लोग तो इन दीवारों में ही बंधे रहना चाहते हैं. कुछ लोग दीवारों को खरीदने-बेचने में ही लगे रहते हैं अर्थात बिल्डिंग, घर, फ्लैट आदि। दूसरी ओर देखें तो किसी ने अपनी पद प्रतिष्ठा की ऊंची-ऊंची दीवारें खींच ली हैं जिन्हें कोई लांघ ही नहीं सकता, ऐसा उन्हें लगता है। वह किसी से मिलना नहीं चाहते हैं. उस चार दीवारी में उनका मनचाहा ही प्रवेश करता है। लोग दीवारों को ही सजाने में लगे रहते हैं, जबकि संस्कारों से सजा हुआ घर ही सुंदर होता है। दीवारों से घिरा व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगा रहता है। स्वतंत्रता से पूर्व की एक कविता में माखनलाल चतुर्वेदी लिखते हैं कि, ऊंची काली दीवारों के घेरे में अर्थात उस समय वह जेल में बंद हैं और वह देश को स्वतंत्र करना चाहता है। अंग्रेजी सरकार का विरोध करते हैं। ठीक इसके विपरीत आज का व्यक्ति स्वतंत्र होने के बाद भी दीवारों में घिरा रहना चाहता है, उन्हीं में अपने जीवन को खापा रहा है।

विचार करें तो सभी दीवारें समय के गति चक्र में अपने आप टूट जाती हैं। जिन्हें व्यक्ति तोड़ना नहीं चाहता, एक समय में व्यक्ति स्वयं टूट कर बिखर जाता है। आयु व्यक्ति को तोड़ देती है, समय उसे स्वयं उत्तर दे देता है। समय बहुत बलवान है, उसकी लाठी में आवाज नहीं होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र अंधेर नगरी नाटक में दीवार के गिरने की घटना को दिखाते हैं जिसके चलते आगे पूरा नाटक चलता है और पूरे नाटक में कितनी बड़ी गलतियां होती हैं, वह सब दिखाया गया है। हम लोगों के बीच दीवारें क्यों खींच रहे हैं? हम इनमें क्यों घिरे बैठे हैं, इसका उत्तर हमें स्वयं से ही जानना होगा। कवि की पंक्तियां याद आती हैं कि, मेरे घर में छह ही लोग चार दीवारें छत और मैं। एकल परिवार से आगे आज व्यक्ति अकेला रह गया है। हमें अपने जीवन को समझना होगा। दीवारें बोलती नहीं है, वह समय के साथ खंड़हर बन जाती हैं। इतिहास के पन्नों में कितनी ही दीवारें दबी हुई है, यह तो पढ़ने-समझने वाले ही जानते हैं।

दिल्ली में लाडली योजना के लाभार्थियों में आई लगभग 60 प्रतिशत की कमी, वजह जान रह जाएंगे हैरान

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की लाड़ली योजना में लाभार्थियों की संख्या में भारी कमी आई है जो लगभग 60% है। RTI के अनुसार 2008-09 में 126965 लाभार्थी थे जबकि 2024-25 में यह संख्या 53001 रह गई। जागरूकता की कमी और स्कूल छोड़ने जैसे कारणों से पंजीकरण का नवीनीकरण नहीं हो पाया। लगभग 1.86 लाख लाभार्थियों ने अभी तक योजना का लाभ नहीं उठाया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में बालिकाओं की आर्थिक मदद वाली बड़ी योजना लाडली योजना के लाभार्थियों में लगभग 60 प्रतिशत की कमी आई है। सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत सरकार की ओर से साझा की गई जानकारी से इससे पर्दा उठा है। लाडली योजना दिल्ली में 1 जनवरी 2008 को लड़कियों को सशक्त बनाने और लैंगिक असमानता को कम करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग ने एक आरटीआई आवेदन के जवाब में

बताया कि योजना के शुरू होने से लेकर 2025 तक कुल 13,52,564 लड़कियों का पंजीकरण हुआ है। जहां 2008-2009 में लाभार्थियों की संख्या 1,26,965 थी,वहीं 2024-25 में यह संख्या घटकर 53,001 रह गई है। यह 58 से अधिक प्रतिशत की गिरावट है और पिछले पांच सालों में दूसरी सबसे कम संख्या है।

30,192 लड़कियों को ही फायदा मिल पाया

साल 2019-2020 में, इस योजना से सिर्फ 30,192 लड़कियों को ही फायदा मिल पाया। लाभार्थियों की संख्या में आई इस गिरावट पर टिप्पणी के लिए दिल्ली महिला एवं बाल विकास विभाग (डब्ल्यूसीडी) की निदेशक से कई बार संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन उनसे बात नहीं हो पाई।

जागरूकता की कमी के कारण पंजीकरण का नवीनीकरण नहीं

डब्ल्यूसीडी विभाग के एक अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि इस कमी का एक कारण लड़कियों का स्कूल छोड़ना भी हो सकता है। एक अधिकारी ने बताया कि जागरूकता की कमी के कारण अक्सर लड़कियां इस योजना के तहत अपने पंजीकरण का नवीनीकरण नहीं करवा पातीं। कुछ मामलों में, उनके स्कूल छोड़ने से भी यह प्रक्रिया और जटिल हो जाती है। इस योजना के तहत,दिल्ली सरकार पात्र लड़कियों को 35-36 हजार रुपये की राशि किस्तों में देती है।

लगभग 1.86 लाख लाभार्थियों ने लाभ का दावा नहीं किया

यह राशि बैंक खाते में तब तक जमा रहती है जब तक लड़की 18 साल की नहीं हो जाती, जिसके बाद इसे निकाला जा सकता है। अधिकारी ने बताया कि इस साल जनवरी तक, लगभग 1.86 लाख लाभार्थियों ने लाड़ली योजना के तहत लाभ का दावा नहीं किया, जबकि 1.66 लाख ने या तो अपना आवेदन नवीनीकृत नहीं कराया या स्कूल छोड़ दिया।

हाय रे सिस्टम! जिन्हें समझा गया था ईमानदार, वही सब-रजिस्ट्रार करते पाए जा रहे भ्रष्टाचार

दिल्ली में भ्रष्टाचार के खिलाफ सीबीआई की कार्रवाई जारी है। हाल ही में नंद नगरी की सब-रजिस्ट्रार प्रवीण मैसी का नाम रिश्वतखोरी के एक मामले में सामने आया है जिसके बाद सीबीआई ने उनका मोबाइल जब्त कर लिया है। इससे पहले भी कई सब-रजिस्ट्रार रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार हो चुके हैं जिसके चलते सरकार ने सभी कार्यालयों में महिला अधिकारियों की नियुक्ति की थी।

नई दिल्ली। पूर्व की सरकार ने जिन अधिकारियों को ईमानदार समझते हुए उन्हें सब- रजिस्ट्रार जैसे अति संवेदनशील पद पर लगाया था, वे भ्रष्टाचार करते पाए जा रहे हैं और सरकार को पलीता लगा रहे हैं। ऐसे ईमानदार कहे जाने वाले तीन साल के अंदर रिश्वत के मामले में दो सब रजिस्ट्रार गिरफ्तार हो चुके हैं, कई औरों की भी इसी तरह की गतिविधियों की चर्चा है और अब गत 17 जून को भ्रष्टाचार के मामले में एक और सब रजिस्ट्रार का सीबीआइ की एफआईआर में नाम आया है। नंद नगरी डीएम कार्यालय स्थित विवेक विहार क्षेत्र के लिए निर्धारित कार्यालय में यह महिला सब रजिस्ट्रार तैनात हैं। इनका नाम प्रवीण मैसी है। इस मामले में दलाल (डीड राइटर) श्याम कुमार की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तारी हो चुकी है।

सीबीआई की टीम कर रही इनके खिलाफ कार्रवाई : सीबीआई की टीम ने इन सब-रजिस्ट्रार का मोबाइल नंबर जब्त कर लिया है, जिसकी जांच की जा रही है। सूत्रों का कहना है कि सीबीआइ को इनके खिलाफ पर्याप्त सुबूत मिल चुके हैं, जल्द ही इन पर गाज गिरने की संभावना है। मगर हैरानी की बात यह है कि सीबीआइ की एफआइआर में नाम आने के बाद भी प्रशासन की ओर से इनके खिलाफ कोई जांच या कार्रवाई अभी तक नहीं की गई है।

कोरोना काल में डीएमसी ने ऑफिस की साज-सज्जा पर कर दिए 3.50 करोड़ खर्च, जांच में जुटी दिल्ली सरकार

कोरोना काल में दिल्ली मेडिकल काउंसिल (डीएमसी) के नए कार्यालय की साज-सज्जा पर लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपये खर्च किए जाने पर सवाल उठ रहे हैं। दिल्ली सरकार की जांच समिति इस मामले की जांच कर सकती है। डीएमसी के तत्कालीन उपाध्यक्ष ने अनियमितता से इनकार किया है लेकिन डीएमसी के सदस्य ने इसे सरकारी फंड का दुरुपयोग बताया।

नई दिल्ली। कोरोना काल में लॉकडाउन में जब ढांचागत परियोजनाएं प्रभावित थीं, उस दौरान दिल्ली मेडिकल काउंसिल (डीएमसी) के नए कार्यालय का करीब साढ़े तीन करोड़ की लागत से साज सज्जा से संबंधित कार्य कराए गए। किराये के इस कार्यालय के इंटीरियर डिजाइन पर भारी भरकम रकम खर्च करने को लेकर अब सवाल उठाए जा रहे हैं।

ऐसे में दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा हाल ही में गठित जांच समिति के दायरे में यह मामला भी आ सकता है। वैसे डीएमसी के तत्कालीन उपाध्यक्ष ने कार्यालय के इंटीरियर डिजाइन के कार्य में किसी प्रकार के अनियमितता से इन्कार किया है।

डीएमसी का अपना अब तक अपना भवन नहीं

डीएमसी का अपना अब तक अपना भवन नहीं है। इस वजह से पहले डीएमसी का कार्यालय मौलाना आजाद मेडिकल कालेज (एमएएमसी) के भवन में चलता था, जहां जगह कम पड़ रही थी। इस वजह से डीएमसी ने कोरोना के दौर में शास्त्री पार्क स्थित दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के आइटी पार्क में कार्यालय स्थानांतरित किया।

22 दिसंबर 2019 को इस कार्यालय के इंटीरियर डिजाइन से संबंधित कार्य के लिए टेंडर जारी किया गया था। दो माह से भी कम समय में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर एक निजी एजेंसी को तीन करोड़ 49 लाख 43 हजार 600 रुपये में यह कार्य करने की जिम्मेदारी दी गई।

भवन समिति ने चार फरवरी 2020 को इसे स्वीकृति दी

डीएमसी के भूमि व भवन समिति ने चार फरवरी 2020 को इसे स्वीकृति दी। इसके बाद 28 फरवरी 2020 को काउंसिल की बैठक में डीएमसी ने भी इसे स्वीकृति दे दी थी। इस तरह टेंडर प्रक्रिया कोरोना का संक्रमण शुरू होने से पहले पूरी हो गई थी लेकिन कार्य कोरोना काल में हुआ।

डीएमसी के तत्कालीन सदस्य डा. हरीश गुप्ता ने कहा कि डीएमसी के पास 22 करोड़ का फंड है। फिर भी अपना कार्यालय नहीं बना सका। इसके लिए लंबे समय से मांग की जाती रही है। करीब 17 लाख रुपये प्रति माह किराए पर लिए गए कार्यालय के इंटीरियर कार्य पर भारी भरकम रकम खर्च करना सरकारी फंड का दुरुपयोग है।

डीएमसी प्रबंधन का सरकार से बेहद नजदीकियां थी

यह भी तब जब तत्कालीन डीएमसी प्रबंधन का उस वक्त की सरकार से बेहद नजदीकियां थी। इस मामले पर डीएमसी के तत्कालीन उपाध्यक्ष डॉ. नरेश चावला ने कहा कि नया कार्यालय 7000-8000 वर्ग फुट में है। जहां काउंसिल की बैठक के लिए बड़ा हाल, सभागार, डाक्टरों के बैठने की व्यवस्था सहित सभी आवश्यक सुविधाएं हैं।

इसके इंटीरियर डिजाइन के कार्य में किसी प्रकार की अनियमितता नहीं हुई थी। उल्लेखनीय है कि डीएमसी में अनियमितताओं के कारण हाल में इसकी कार्यकारी समिति भंग कर दी गई है। साथ ही अनियमितताओं की जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग ने एक कमेटी गठित की है।

कहां कितना खर्च

सिविल कार्य : 43 लाख रुपये

फर्निशिंग : एक करोड़ 30 लाख 55 हजार 950

प्लंबिंग कार्यः तीन लाख 10 हजार 350 रुपये

बिजली के कार्य : 47 लाख आठ हजार 35 रुपये

फायर सेफ्टी उपकरण : 11 लाख 52 हजार 575 रुपये

एयर कंडिशन : 19 लाख 24 हजार 400 रुपये

आडियो वीडियो उपकरण : 30 लाख रुपये

इसके अतिरिक्त भी कुछ राशि अन्य कार्यों पर खर्च किए गए थे।

34 घंटे बाद बुझी विशाल मेगा मार्ट में लगी आग, इमारत हुई जर्जर; दो लोगों की हुई थी मौत

दिल्ली के करोल बाग में विशाल मेगा मार्ट में लगी भीषण आग को 34 घंटे बाद बुझाया गया। दमकल की 50 से ज्यादा गाड़ियों ने आग बुझाने का काम किया। इमारत में कूलिंग के बाद तलाशी अभियान चलाया गया जिसमें कोई और हताहत नहीं मिला। हादसे में दो लोगों की जान गई और लाखों का नुकसान हुआ। शुरुआती जांच में शॉर्ट सर्किट को आग का कारण बताया जा रहा है।

नई दिल्ली। करोल बाग स्थित विशाल मेगा मार्ट में लगी आग पर 34 घंटे बाद काबू पाया गया। आग बुझाने में एक के बाद एक दमकल की 50 से अधिक गाड़ियों को लगाया गया था। इमारत में देर रात तक कूलिंग का काम चलता रहा, जिसके बाद दमकलकर्मियों ने तलाशी अभियान चलाया।

इस दौरान टीम को वहां से किसी और के हताहत होने का पता नही चला। लंबे समय तक आग लगने के कारण इमारत की हालत जर्जर हो चुकी है और घटना में लाखों की कीमत का सामान जलकर राख हो गया है। अभी तक हादसे में दो लोगों के शव निकाले गए हैं। वहीं जांच कर आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

जांच के बाद शार्ट सर्किट को आग की वजह बताया जा रहा

रविवार को क्राइम टीम के अलावा एफएसएल ने विशाल मेगा मार्ट पहुंचकर मामले की छानबीन की। टीम ने वहां से साक्ष्य भी जुटाए। पुलिस ने विशाल मेगा मार्ट के कर्मचारियों व बाकी स्टाफ से पूछताछ भी की। टीम आग की वजहों का पता लगाने का प्रयास कर रही है। शुरुआती जांच के बाद शार्ट सर्किट को आग की वजह बताया जा रहा है।

उधर पुलिस ने रविवार को आरएमएल अस्पताल में हादसे का शिकार हुए दूसरे युवक पवन कुमार का शव पोस्टमार्टम के बाद परिवार के हवाले कर दिया। परिजन शव लेकर अपने पैतृक निवास असगरपुर, अलीगढ़ चले गए। शुक्रवार शाम को पवन खरीदारी करने विशाल मेगा मार्ट आये थे। उसी दिन उन्हें रात के समय अलीगढ़ निकलना था।

बैग और जूते से हुई दूसरे शख्स की पहचान

शुरुआत में शव की हालत देखकर पुलिस अधिकारी कह रहे थे कि शव का डीएनए परीक्षण करवाने के बाद ही उसकी पहचान हो पाएगी, लेकिन बैग और जूते से पहचान करने के बाद पवन का शव परिवार को देने का फैसला लिया गया। रविवार को औपचारिताएं पूरी करने के बाद शव परिवार के हवाले कर दिया गया।

दोस्त लोकेश ने बताया कि पवन का परिवार असगरपुर, अलीगढ़, यूपी में रहता है। इसके परिवार में पिता मुशीलाल, मां उर्मिला देवी, चार भाई, दो बहनें व पत्नी विनिता है। एक साल पहले ही पवन की शादी हुई थी। इसकी पत्नी फिलहाल गर्भवती है। शुक्रवार को पवन को अलीगढ़ जाना था। दरअसल शनिवार को उन्हें पत्नी का अल्ट्रासाउंड करवाना था।

लोकेश ने जूता देखकर पवन की पहचान की

अलीगढ़ जाने के लिए उन्हें कुछ कपड़े खरीदने थे। उसके लिए वह खरीदारी करने गए थे। हादसे का शिकार होने के बाद पुलिस को पार्किंग के पास से जमा पवन का बैग मिला। उसमें एक जानकार का नंबर मिला। उस पर काल कर लोकेश को उसकी पहचान के लिए बुलाया गया। लोकेश ने जूता देखकर पवन की पहचान की।

बैग में पवन का आधार व बाकी सामान भी मौजूद था। इसके बाद शनिवार को परिवार को खबर दी गई। परिवार दिल्ली पहुंचा और बाकी पवन के शव की पुष्टि उन्होंने कर दी। पवन की मौत के बाद से उसके परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। देर शाम गांव के श्मशान घाट में उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

कुंडली के बच्चों ने कंप्यूटर सीखा, और बाद में हमने उन्हें आकर्षक उपहार भी दिए। बच्चे बहुत खुश हुए।

इंदिरा गांधी की इमरजेंसी बनाम संघ-भाजपा का अघोषित आपातकाल

(आलेख : संजय पराते)

इंदिरा गांधी द्वारा 50 वर्ष पहले 25 जून 1975 को देश में इमरजेंसी लगाए जाने के कृत्य को इतिहास ने ग़लत साबित कर दिया है। उस अंधकारमय दौर को देश की जनता आज भी भूली नहीं है, जब उसके नागरिक अधिकार निलंबित कर दिए गए थे। हालांकि यह इमरजेंसी संविधान के प्रावधानों का उपयोग करके ही लागू की गई थी, लेकिन आज कांग्रेस भी इसके औचित्य को साबित करने में अक्षम है।

इस थोपी गई तानाशाही के खिलाफ आम जनता का संघर्ष ही था, जिसने इस दौर को अतीत का विषय बना दिया। इस संघर्ष में लाखों लोगों ने यातनाएं सही, जेल गए। हजारों लोग भूमिगत हुए। उनके संघर्षों की कहानियां आज भी जीवित है। इन संघर्षों से आज की वर्तमान युवा पीढ़ी प्रेरणा लेती है।

लेकिन बहती गंगा में हाथ धोने वालों की भी कमी नहीं है। इनमें से एक है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ -- आरएसएस। इस संघी गिरोह का इतिहास आज सबको मालूम है। लेकिन संक्षेप में, दोहराव का खतरा मोल लेते हुए भी, इसका जिक्र कर देते है। 1925 में जब देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, इस देश को हिंदू राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से इस संगठन की स्थापना की गई थी। आजादी की लड़ाई से यह संगठन न केवल अलग रहा, बल्कि अपनी सांप्रदायिक राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजों की 'फूट डालो' नीति का सहयोगी रहा। इसलिए इनके पास कहने के लिए भी एक भी स्वाधीनता सेनानी नहीं है। जो हो सकते थे, वे सावरकर अंग्रेजों से माफी मांगकर काला पानी की सजा से मुक्त हो गए, अंग्रेजों से पेंशन ली और फिर इस माफ़ीवीर ने कभी इस संघर्ष में हिस्सा नहीं लिया। दूसरे कथित सेनानी अटल बिहारी बाजपेयी की अंग्रेजों की मुखबिरी करने के दस्तावेजी प्रमाण मौजूद है। यही संघी गिरोह था, जिसने धार्मिक आधार पर 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' की हिमायत करते हुए देश के विभाजन की नींव रखने में मुस्लिम लीग के साथ सहयोग का काम किया। आजादी के बाद भी इसने संविधान से लेकर तिरंगे तक और आजादी के आंदोलन से स्थापित तमाम प्रतीकों का विरोध किया। देश को आधुनिकता के रास्ते पर बढ़ाने के बजाए दंगा-फसादों के रास्ते पर बढ़ाने की कोशिश की।

इंदिरा गांधी के इमरजेंसी के बारे में भी इनका इतिहास इतना ही काला है। इस दौर के इनके सुप्रीम नेता बाला साहब देवरस के इंदिरा गांधी को लिखे माफीनामे और उनके 20 सूत्रीय और संजय गांधी के 5 सूत्रीय कार्यक्रम के साथ सहयोग करने की चिट्ठियां अब सार्वजनिक है। यही कारण है कि जब उस समय के अधिकांश राजनेता जेलों में ठूंसे जा रहे थे, संघी गिरोह से जुड़े नेता माफीनामा लिखकर जेलों से बाहर आ रहे थे और अंग्रेजों के मुखबिर अटल बिहारी जेल के बजाय अस्पताल में आराम फरमा रहे थे। सुब्रह्मण्यम स्वामी सहित संघ-भाजपा के कई नेताओं ने ही संघ के इस विश्वासघात का लिखित तौर पर पर्दाफाश किया है।

सत्ता और गोदी मीडिया का सहारा लेकर आज संघी गिरोह आम जनता से विश्वासघात के अपने काले इतिहास को धोने-पोंछने और नए रंग-रोगन में पेश करने में लगा है। इसमें एक काला इतिहास उस इमरजेंसी का भी है, जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं और जो इंदिरा गांधी के दमन-राज के सामने उनके संपूर्ण आत्मसमर्पण का इतिहास है। आज वे अपने आपको, सावरकर की तरह ही, इमरजेंसी के खिलाफ संघर्ष का वीर योद्धा साबित करते हुए मनगढ़ंत कहानियां सुना रहे हैं और सरकारी पेंशन लेकर मजे मार रहे हैं। लेकिन इंदिरा गांधी की इमरजेंसी के समर्थन में संघ के जो दस्तावेजी प्रमाण सामने आए हैं, उसका आधिकारिक तौर पर आज तक आरएसएस ने खंडन नहीं किया है।

जिस इमर्जेंसी के खिलाफ संघी गिरोह वीर-योद्धा

बनने का आज दावा कर रहा है, उसके पिछले एक दशक के राज की हालत क्या है? आज हम जिस अघोषित आपातकाल का सामना कर रहे हैं, उसका अनुभव घोषित इमरजेंसी से भी ज्यादा बुरा है। और यह हम नहीं, मोदी द्वारा मार्गदर्शक मंडल में धकेले गए ₹डबल वेटिंग प्राइम मिनिस्टर₹ वर्ष 2015 में ही कह गए थे। 'इंडियन एक्सप्रेस' (26-27 जून, 2015) के शेखर गुप्ता को दिए एक साक्षात्कार में लालकृष्ण आडवानी ने कहा था ''अब आपातकाल की घोषणा के बाद 40 साल बीत चुके हैं। लेकिन पिछले एक साल से भारत में एक अघोषित आपातकाल लागू है।''

तब से दस साल गुजर चुके हैं। इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी में तो केवल नागरिक अधिकारों को ही निलंबित किया था, संघ-भाजपा के राज में तो मानवाधिकारों को ही कुचलकर रख दिया गया है और कानून का राज खत्म हो गया है। कानून अब वही है, वहीं तक सीमित है, जो संघ-भाजपा की हिंदू राष्ट्र की विचारधारा को आगे बढ़ाएं। आज अभिव्यक्ति की आजादी को पूरी तरह कुचल दिया गया है। वैश्विक एजेंसियों ने भी दर्ज किया है कि पिछले दस सालों में मानव विकास सूचकांकों के मामले में, प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में, धार्मिक स्वतंत्रता के मामले में, मानवाधिकारों के मामले में और आर्थिक समानता के मामले में भारत में भारी गिरावट आई है। इसकी अभिव्यक्ति माओवाद के नाम पर आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों को कुचलने और जल, जंगल, जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों को कॉरपोरेटों को सौंपने की मुहिम में; अल्पसंख्यकों के खिलाफ लव जिहाद, गौ-मांस खाने-रखने, धर्मांतरण करवाने जैसे छद्म अभियानों में; अल्पसंख्यकों, कमजोर वर्गों और दलित-दमित तबकों के बुलडोजर न्याय में; कई प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों को बिना सुनवाई जेलों में ठूंसे जाने और उन पर राष्ट्रद्रोह का लेबल लगाने में; महाराष्ट्र के बाद अब बिहार के विधानसभा चुनाव का फर्जीकरण करने की साजिशों में अभिव्यक्त हो रही है। यही कारण है कि वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र-सूचकांक के मामले में भारत की स्थिति में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है और इसे फ्लॉड डेमोक्रेसी का दर्जा दिया जा रहा है। आम जनता का सामान्य अनुभव अब यही है कि उसके वोटों से निर्वाचित यह सरकार उसके हितों का प्रतिनिधित्व करने के बजाए हिंदुत्व और कॉर्पोरेट के गठजोड़ को आगे बढ़ा रही है और अडानी-अंबानी जैसे चंद कॉर्पोरेट घरानों की प्रतिनिधि सरकार होकर रह गई है, जिसका हर कदम, हर निर्णय उसके व्यापारिक हितों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से होता है।

जिस तरह इंदिरा गांधी की घोषित इमरजेंसी को यहां की आम जनता ने मात दी थी, उसी प्रकार संघ-भाजपा के अघोषित आपातकाल को भी यहां की जनता ही मात देगी। लेकिन इस जनता को लामबंद करने में भाजपा विरोधी पार्टियों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। चुनाव आयोग के जरिए बिहार विधानसभा के चुनाव का फर्जीकरण करने की संघ-भाजपा जो साजिश कर रही है, वह इसका अवसर दे रही है। भाजपा विरोधी सभी राजनैतिक ताकतों, संगठनों, संस्थाओं और व्यक्तियों को अतीत की इमरजेंसी से सबक लेकर वर्तमान के अघोषित आपातकाल से आगे का भविष्य देख लेना चाहिए और सर्वनाशी आसन्न संकट की आवाज को सुनकर चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

अखण्ड दया धाम में त्रिदिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव 08 जुलाई से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह/परिक्रमा मार्ग स्थित अखंड दया धाम में मंगलायतन सेवा ट्रस्ट के द्वारा महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज के पावन सानिध्य में त्रिदिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव 08 से 10 जुलाई 2025 पर्यन्त विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत 08 से 09 जुलाई को प्रातः 08 बजे से रुद्राभिषेक होगा।तदोपरांत अपराह्न 04 से 07 बजे तक अखंड दया धाम के संस्थापक महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा ₹गोपी गीत₹ पर प्रवचन करेंगे।इसके अलावा 10 जुलाई को प्रातः 08 बजे से देश-विदेश से आए समस्त भक्त-श्रद्धालु के द्वारा गुरु पूजन (व्यास पूजन) किया जाएगा। महाराजश्री की परम्कृपापात्रशिष्या साध्वी कृष्णानंद महाराज ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

वाराणसी बजरडीहां में मोहर्रम की नौवीं तारीख को रात 9 बजें से इकबाल अहमद खलिफा के नेतृत्व में अखाड़ा निकाला गया

जिला वाराणसी संवाददाता वसीम अहमद

वाराणसी। बजरडीहां क्षेत्र में मोहर्रम की नौ तारीख को हमीद नगर कुडीय़ा से इकबाल अहमद खलिफा के अध्यक्षता में अखाड़ा निकाल जिसमें विभिन्न प्रकार के खेलों को खेला गया जैसे पटा बना लकड़ी ढ़ाल तलवार सटका बनैठी भाला इत्यादि प्रकार के खेलों को खेला गया शनिवार रात 9 बजें से सुबह चार बजे तक बजरडीहाँ के सभी ताजिया पर जाकर सलामी दिया गया भारतीय फ़न ए सिपहगिरी एसोसिएशन उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य इकबाल अहमद खलिफा ने बताया कि मोहर्रम की नौ को रात 9 बजें से सुबह 4 बजे तक पुरे बजरडीहाँ क्षेत्र में अखाड़े को खेला गया

हमीद नगर कुडीय़ा पर गुलशन ए इस्लाम कमेटी के जानिब से इकबाल अहमद खलिफा को साफ़ा बांधकर सम्मानित किया गया। बेहतरीन प्रदर्शन करने वालें खिलाड़ी इम्तियाज अहमद गामा वसीम अहमद मोहम्मद मोहसिन एजाज अहमद जावेद अहमद परवेज अहमद तस्लीम अंसारी अशरफ अली इरफ़ान रजा सोऐब रेहान सलमान हैदर मोहम्मद फैज़ मोहम्मद नसीम गूलाम रसूल एवं तमाम खिलाड़ी गण उपस्थित थे।

पण्डित रामांश पाराशर के श्रीमुख से भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण की कथा श्रवण कर भाव विभोर हुए भक्त-श्रद्धालु

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। श्रीहित हरिवंश नगर स्थित वानप्रस्थ धाम फेस-1 में श्रीराधा माधव सेवा संस्थान ट्रस्ट के तत्वावधान में चल रहे अष्ट दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ के चौथे दिन व्यास पीठाधीन पण्डित रामांश पाराशर महाराज ने देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को अपनी मधुर वाणी के द्वारा वामन अवतार, बलि प्रसंग, गंगा अवतरण, श्रीराम जन्म एवं श्रीकृष्ण जन्म की कथा श्रवण कराई।

व्यासपीठ से पण्डित रामांश पाराशर महाराज ने कहा कि अखिल कोटि ब्रह्मांड नायक भगवान श्रीकृष्ण ने पृथ्वी पर जन्म लेकर न केवल पापियों, अत्याचारियों व दैत्यों का संघार किया बल्कि उन तमाम भक्तों, ऋषियों-मुनियों एवं साधु-संतों की वाणियों को साकार किया, जिन्होंने पूर्व जन्मों में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं में संलग्न होने का वरदान प्राप्त किया था।

उन्होंने भगवान के दिव्य स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान ने श्रीकृष्ण के रूप में ब्रज में अवतार लेकर पूरब से लेकर पश्चिम तक धर्म की स्थापना के लिए समस्त राक्षसों का उद्धार कर सभी जीवों को सुख प्रदान किया।

श्रद्धेय रामांश पाराशर ने कहा कि पृथ्वी पर जब-जब अधर्म बढ़ता है और धर्म की हानि होने लगती है, तब-तब अधर्म का नाश करने के लिए

और धर्म की रक्षा व पुनःस्थापना के लिए भगवान नारायण पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।इसीलिए वे तारणहार कहे जाते हैं।

इस अवसर पर भव्य नंदोत्सव आयोजित किया गया।साथ ही भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की दिव्य झांकी सजाई गई।इसके अलावा जन्म से संबंधित बधाईयों व भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।जिसके अंतर्गत रुपए-पैसे, खेल-खिलौने, वस्त्र-आभूषण आदि लुटाए गए।

महोत्सव में वानप्रस्थ धाम के संस्थापक डॉ. चतुर नारायण पाराशर महाराज, पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, डॉ. अशोक शास्त्री, आचार्य सुरेशचंद्र शास्त्री, मुख्य यजमान श्रीमती किरण शुक्ला, डॉ. अमरेश चंद्र शुक्ला सुशील राजवंशी (बीकानेर), आचार्य पवन पाराशर आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मानव जीवन को सार्थक बनाता है श्रीमद्भागवत महापुराण : डॉ. शिवम साधक महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सुनरख रोड़-श्रीजी पुरम-स्थित श्रीगौरी शंकर धाम में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में एवं ब्रह्मलीन भक्ति सम्राट संत शिवानंद साधक महाराज (डेरा वाले बाबा) की पावन स्मृति में चल रहे अष्टदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव में व्यास पीठ से प्रख्यात भागवत प्रवक्ता डॉ. शिवम साधक महाराज ने अपनी सरस वाणी के द्वारा देश-विदेश से कथा श्रवणार्थ पधारे सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा सुनाते हुए कहा कि मनुष्यों के जब कई-कई जन्मों के पुण्यों का उदय होता है, तब ही उसे हरि कथा व सत्संग आदि श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा श्रवण करने से मनुष्यों के ऊपर आने वाली सभी विपदाओं का नाश हो जाता है।

उन्होंने कहा कि महर्षि वेदव्यासजी द्वारा रचित और शुकदेव भगवान के श्रीमुख से निकली श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा मानव जीवन को सार्थक बनाती है।इसका श्रवण मनुष्य के सभी प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है।इसका वाचन, श्रवण एवं अध्ययन तीनों ही मंगलकारी एवं कल्याणकारी है।इसमें समस्त धर्म ग्रंथों का सार समाहित है।इसीलिए इसे पंचम वेद कहा गया है।

महोत्सव में पधारे श्रीपीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं संत रामदास महाराज (अयोध्या) ने कहा कि श्रीगौरी शंकर धाम के संस्थापक ब्रह्मलीन भक्ति सम्राट संत शिवानंद साधक महाराज (डेरा वाले बाबा) अत्यंत सहज, सरल, उदार व परोपकारी थे।उन्होंने गौ, संत, ब्रजवासी, निर्धन-निराश्रित एवं रोगी आदि की सेवा के लिए अनेकों सेवा प्रकल्प संचालित किए।जिनका निर्वाह आज भी डॉ. शिवम साधक महाराज के निर्देशन में पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ किया जा रहा है।साथ ही वे श्रीमद्भागवत महापुराण, श्रीराम कथा और अन्य धर्मग्रंथों के माध्यम से विश्वभर में जो भारतीय वैदिक सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने का कार्य कर रहे हैं, वो अति प्रशंसनीय है।

श्रीगौरी शंकर धाम के प्रबंधक विष्णुकांत शास्त्री ने सभी अतिथियों का उत्तरीय ओढ़ा कर और माल्यार्पण कर स्वागत किया।

क्षमा मांगना या देना भावनात्मक और मानसिक कल्याण का एक पहलू है जो सद्भाव और शांति स्थापित करने में मदद करता है

वैश्विक क्षमा दिवस 7 जुलाई 2025, विभिन्न संस्कृतियों व पृष्ठभूमियों के लोगों में क्षमा, यह शांति व सुलह की दिशा में एक वैश्विक आंदोलन को प्रेरित करता है
क्षमा दिवस मनाने से खुद को व दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे एक अधिक दयालू और सहानुभूतिपूर्ण दुनियाँ को बढ़ावा मिलता है-
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारतीय सभ्यता, संस्कृति, मूल्यों मर्यादा और आध्यात्मिकता की सजगता दुनिया में कहीं नहीं है हमारी सभ्यता के अनेक मोतियों में से एक माफ़ी मांगना या देना है, बड़े बुजुर्गों का कहना है जो माफ़ करता है पुरानी बातों को भूल जाता है वही सबसे बड़ा दानी है क्योंकि क्षमादान जैसा कोई दान नहीं यहभारतीय सभ्यता की वैचारिक शक्ति है ! मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि, हमसे अगर गलती हो जाए तो हमें शांत स्वभाव से अपनी गलती को स्वीकार कर लेना चाहिए और माफ़ी मांगनी चहिए, क्योंकि हमेशा याद रखें कि माफी मांगने से हमेशा रिश्ते मजबूत ही होंगे, दो लोगों के बीच कभी बैर नहीं होगा। माफ करने या माफी मांगने की आदत से यह मालूम पड़ता है कि व्यक्ति तुच्छ भावों के मुकाबले में रिश्ते को ज्यादा अहमियत देता है।आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 7 जुलाई 2025 को वैश्विक माफी दिवस है, चूँकि क्षमा दिवस मनाने से खुद को व दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे एक अधिक दयालू और सहानुभूतिपूर्ण दुनियाँ को बढ़ावा मिलता है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, क्षमा मांगना या देना भावनात्मक और मानसिक कल्याण का एक पहलू है जो सद्भाव और शांति स्थापित करने में मदद करता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक क्षमा दिवस 7 जुलाई 2025 के महत्व और शक्तियों को समझने की करें तो, यह दिवस हमारे जीवन में क्षमा की शक्ति और महत्व को समर्पित एक वार्षिक कार्यक्रम है। यह द्वेष को दूर करने, पिछले घावों को भरने और समझ और सुलह की संस्कृति को बढ़ावा देने के महत्व पर चिंतन करने का दिन है। क्षमा भावनात्मक और मानसिक कल्याण का एक पहलू है, जो व्यक्तियों और समुदायों को सद्भाव और शांति में आगे बढ़ने में मदद करता है। वैश्विक क्षमा दिवस लोगों को खुद को और दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे एक अधिक दयालु और सहानुभूति पूर्ण दुनिया को बढ़ावा मिलता है। वैश्विक स्तरपर भारतीय सभ्यता, संस्कृति, मूल्यों मर्यादा और आध्यात्मिकता की सजगता दुनिया में कहीं नहीं है हमारी सभ्यता के अनेक मोतियों में से एक माफ़ी मांगना या देना है, बड़े बुजुर्गों का कहना है जो माफ़ करता है पुरानी बातों को भूल जाता है वही सबसे बड़ा दानी है क्योंकि क्षमादान जैसा कोई दान नहीं यहभारतीय सभ्यता की वैचारिक शक्ति है !

साथियों बात अगर हम मानव जीव में क्षमा भाव की करें तो, क्षमा भाव जिसके भीतर विकसित हो जाता है, वह व्यक्ति समाज में आदरणीय माना जाता है। किसी को किसी की भूल के लिए क्षमा करना औरआत्मग्लानि से मुक्ति दिलाना एक बहुत बड़ा परोपकार है। कितना आसान है किसी से अपनी गलती की माफी मांगना और उससे भी ज्यादा आनंद तब मिलता है, जब वह व्यक्ति हमें माफ कर देता है। क्षमा का शस्त्र जिसके पास है, उसका दुष्ट मानव कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जिस

तरह बिना तिनकों की पृथ्वी पर गिर कर अग्नि खुद ही शांत हो जाती है।

साथियों बात अगर हम क्षमा मांगने की परिस्थिति की करें तो, यदि हमसे वाकई गलती हो गई है तो गंभीरता से क्षमा मांगें। कोई स्पष्टीकरण दें, हमारी गलती से वह विचलित है और हमारे कारणों को समझने की स्थिति में नहीं है।उसे पहले शांत कर सामान्य स्थिति में लाएं। दिल से मांगी गई माफी से स्थिति सामान्य हो जाएगी। यह हमारा बड़प्पन भी होगा कि जो व्यक्ति हमारे कारण दुखी हुआ है और हम अपनी गलती स्वीकार कर उसे सामान्य होने में मदद कर रहे हैं। फिर हुए नुकसान या असुविधा की पूर्ति के लिए तत्काल प्रयास करें। व्यर्थ की दलीलों में समय बर्बाद करने की बजाय तत्काल कदम उठाएं। इस तरह हम अपनी खामियों के बावजूद सम्मान भरोसा हासिल करेंगे। अन्यथा भावनाओं की गलत अभिव्यक्ति से आप हमेशा तनाव में रहेंगे, जो आपको समाधान से दूर और दूर ले जाएगा।

साथियों बात अगर हम क्षमा देने की करें तो, कमजोर व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्षमा करना तो शक्तिशाली व्यक्ति का गुण है। जो पहले क्षमा मांगता है वह सबसे बहादुर है और जो सबसे पहले क्षमा करता है वह सबसे शक्तिशाली है। शास्त्रों में कहा गया है कि क्षमा वीरों का आभूषण है।बाणभट्ट के हर्षचरित में उल्लेख किया गया है कि क्षमा सभी तपस्याओं का मूल है। महाभारत में कहा गया है कि क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण और समर्थ मनुष्यों का आभूषण है।' श्री गुरु ग्रंथ साहिब का वचन है- क्षमाशील को रोग नहीं सताता और न ही यमराज डराता है।

साथियों बात अगर हम क्षमा में भावनात्मक मिश्रण से हानि की करें तो खासकर पारिवारिक झगड़ों में हम देखते हैं कि, पति का पत्नी से झगड़ा हो गया है। उनके बीच कोई समस्या हो सकती है, जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। चूंकि पत्नी का मूड खराब है तो वह बेटे पर गुस्सा उतारेगी। बेटे पर मां मामूली-सी बात पर चिल्लाई तो वह अपने साथियों से लड़ पड़ा और हम जितनी कल्पना कर सकें उतना इस कहानी को विस्तार दे सकते हैं। भावनाएं यदि समस्या के स्रोत की दिशा में हो तो भी यह उसे सुलझाने की बजाय बड़ा बना देती हैं। यहीं पर बड़ी समस्या है, क्योंकि कोई माफी मांगे इसकी बजाय भावनात्मक विस्फोट के कारण आखिर में स्थिति होगी कि हमें ही माफी मांगनी पड़ सकती है।

साथियों बात अगर हम माफी मांगने में अफसोस और ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी.के तड़के की करें तो, मुझे अफ़सोस है, इन तीन छोटे शब्दों के बिना माफी वास्तव में माफी नहीं है। उनका उपयोग करने से हम यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि हम वास्तव में उस समस्या को उत्पन्न करने के लिए पछताते हैं जिसने शिकायत को प्रेरित किया। इन शब्दों के साथ माफी माँगने से हमको यह दिखाने में मदद मिलती है कि हम अतीत में जो कुछ हुआ है उसकी ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं। हम सुनिश्चित करेंगे कि ऐसा दोबारा न हो, यह समझाते हुए कि जो हुआ अब आगे हमेशा एक अच्छा विचार होगा, भविष्य में गड़बड़ी से मुक्त रखने के लिए हम जो कुछ भी बदलने की योजना बना रहे हैं उसे रेखांकित करके उस सफलता पर निर्माण करना सबसे अच्छा है।

साथिया बात अगर हम माफी मांगने की व्यवहारिकता की करें तो, यदि हम गलत हैं, आंशिक रूप से भी, किसी की मांग करने से पहले क्षमा मांगना बेहतर है। क्षमायाचना उन समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है जिन्हें हल करना सामान्य शब्दों के लिए बहुत कठिन है। क्षमा की वांछनीयता इसमें शामिल लोगों की संस्कृति पर निर्भर करती है। शर्म की संस्कृति में, एक उच्च स्थिति वाले व्यक्ति से जबरन माफी मांगना एक बहुत ही मूल्यवान चीज के रूप में देखा जाता है, क्योंकि माफी मांगने वाले व्यक्ति के सामाजिक अपमान को एक महत्वपूर्ण कार्रवाई के रूप में देखा जाता है।शिष्टाचार दूसरों से अपेक्षा करने का मानक नहीं है, यह एक ऐसा मानक है जिसका आप स्वयं पालन करते हैं। यह कहना कभी आसान नहीं होता, मुझे क्षमा करें। लेकिन कभी-कभी, गलती के लिए माफी मांगना ही आपकी प्रतिष्ठा की रक्षा करने का एकमात्र तरीका है।

"क्षमा दान महादान है, क्षमा के बराबर कोई दान नहीं है
गलती करना मानवीय विकार है, क्षमा करना ईश्वरय गुणहैं
क्षमा खुशनसीब है, अहंकार बदनसीब हैं।"

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि क्षमा मांगना या देना भावनात्मक और मानसिक कल्याण का एक पहलू है जो सद्भाव और शांति स्थापित करने में मदद करता है

वैश्विक क्षमा दिवस 7 जुलाई 2025, विभिन्न संस्कृतियों व पृष्ठभूमियों के लोगों में क्षमा, यह शांति व सुलह की दिशा में एक वैश्विक आंदोलन को प्रेरित करता है, क्षमा दिवस मनाने से खुद को व दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे एक अधिक दयालू और सहानुभूति पूर्ण दुनियाँ को बढ़ावा मिलता है।

महंगा हो गया टाटा टिआगो को खरीदना, बुक करवाने से पहले जान लें कितनी बढ़ गई कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सबसे सस्ती गाड़ी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। बढ़ोतरी के बाद अब इसकी नई कीमत क्या हो गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से अपनी हैचबैक कार की कीमत में बढ़ोतरी की गई है। निर्माता की ओर से Tata Tiago की कीमत में कितनी बढ़ोतरी की गई है। अब इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगी हुई टाटा टिआगो

टाटा मोटर्स की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमत में बढ़ोतरी कर दी गई है। निर्माता की ओर से इस हैचबैक कार के सभी वेरिएंट्स की कीमतों में बढ़ोतरी नहीं की गई है।

किन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ी

जानकारी के मुताबिक निर्माता की ओर से इसके बेस वेरिएंट की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके अलावा बाकी सभी वेरिएंट्स की कीमत में 10 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। जिन वेरिएंट्स की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है उनमें XE और iCNG शामिल हैं। इनके अलावा जिन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ाई गई हैं उनमें Petrol- XM, XZ+, XZA और CNG में XM, XZ, XZA शामिल हैं।

कुछ वेरिएंट्स की कीमत पांच हजार रुपये तक बढ़ी

कुछ वेरिएंट्स की कीमत में पांच हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। इनमें Petrol- XT, XTA और CNG के XT, XTA शामिल हैं।

कितनी हुई कीमत

कीमतों में बढ़ोतरी के बाद अब Tata Tiago की एक्स शोरूम कीमत पांच लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.55 लाख रुपये तक है।

किनसे है मुकाबला

Tata Tiago को भारतीय बाजार में एंट्री लेवल हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में टाटा टियागो का सीधा मुकाबला Maruti Wagon R, Maruti Celerio, Maruti S Presso, Renault Kwid, Hyundai Grand Nios i10 जैसी कारों के साथ होता है। वहीं कीमत के मामले में इसे Renault Kiger, Nissan Magnite, Tata Punch जैसी सब फोर मीटर एसयूवी से भी कड़ी चुनौती मिलती है।

कर रहे हैं टाटा हैरियर ईवी को खरीदने की तैयारी, जान लें कब से शुरू होगी एसयूवी की डिलीवरी

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन्च किया गया है। अगर आप भी इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसकी डिलीवरी को कब से शुरू करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन्च किया गया है। निर्माता इस एसयूवी के लिए बुकिंग शुरू कर चुकी है। अगर आप भी इसे बुक करवाने के बाद डिलीवरी का इंतजार कर रहे हैं तो टाटा की ओर से इसकी डिलीवरी को कब से शुरू किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कब से शुरू होगी डिलीवरी

Tata Harrier EV के लिए बुकिंग को भी कुछ समय पहले ही शुरू किया गया है। इसके बाद गाड़ी की डिलीवरी भी जल्द शुरू की जाएगी। निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि वह जुलाई 2025 से एसयूवी की डिलीवरी को शुरू कर देगी।

जून में हुई थी लॉन्च

टाटा की ओर से हैरियर ईवी को तीन जून 2025 को ही लॉन्च किया गया है। निर्माता की ओर से लॉन्च के कुछ समय बाद इसकी बुकिंग को शुरू किया गया है। बुकिंग शुरू होने के 24 घंटे में ही इसके लिए 10 हजार से ज्यादा बुकिंग टाटा मोटर्स को मिल चुकी हैं।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इलेक्ट्रिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें शॉर्क फिन एंटीना, बॉडी कलर्ड बंपर, एलईडी बाई-प्रोजेक्टर हेडलैंप, इंटीग्रेटिड स्पॉयलर, एलईडी डीआरएल, सनरूफ, फ्रंट फॉग लैंप, 26.03 सेमी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, लेदरेट अपहोल्स्ट्री, एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, ड्यूल जोन एसी, एयर प्यूरीफायर, ऑटो हेडलैंप, क्रूज कंट्रोल, इलेक्ट्रिक टेलगेट ओपनिंग, फॉलो मी हेडलैंप, फ्रंट आर्मरेस्ट, पावर विंडो, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, स्मार्ट की, रेन सेंसिंग वाइपर, रियर एसी वेंट, रियर वाइपर और वाशर, स्टेयरिंग माउंटिड कंट्रोल्स, वेंटिलेटिड सीट्स, वायरलेस चार्जर, एबीएस, ईबीडी, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, सीएससी, सात एयरबैग, ईपीबी, ऑटो होल्ड, ईएसपी, हेडलैंप लेवलिंग, एचडीसी, एचएचसी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, पंचर रिपेयर किट, पार्किंग सेंसर, टीपीएमएस, वायरलेस एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, 31.24 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, छह स्पीकर, चार ट्वीटर ऑडियो सिस्टम जैसे कई फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है रेंज

इसमें 75 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। 627 किलोमीटर की एमआईडीसी रेंज मिलती है। रियल वर्ल्ड रेंज करीब 480 से 505 किलोमीटर तक है। इसके साथ दी गई पीएमएसएम मोटर से इसे 238 पीएस की पावर और 315 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। एसयूवी में ईको, सिटी और स्पोर्ट ड्राइविंग मोड्स के साथ नॉर्मल, वेट और रफ टैरेन जैसे कई मोड्स को भी दिया गया है। एसयूवी को रियर व्हील ड्राइव के साथ ही क्वाड व्हील ड्राइव के विकल्प के साथ भी ऑफर किया जा रहा है।

कितनी है कीमत

टाटा मोटर्स की ओर से हैरियर ईवी की एक्स शोरूम कीमत 21.49 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 30.23 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

टाटा की हैरियर ईवी का बाजार में सीधा मुकाबला Hyundai Creta Electric के साथ होता है। इसके अलावा इसे BYD Atto 3 से भी चुनौती मिलती है।

फॉक्सवेगन वरटस ऑटोमेटिक को है खरीदना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी इतनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस प्लान फॉक्सवेगन की ओर से मिड साइज सेडान कार के तौर पर Volkswagen Virtus को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार को ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में सेडार का सेगमेंट में बिक्री के लिए Virtus को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस मिड साइज सेडान कार के ऑटोमैट्रिक बेस वेरिएंट को अगर खरीदने के लिए दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट की जाती है तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Volkswagen Virtus Highline AT Price

Volkswagen की ओर से Virtus के बेस वेरिएंट के तौर पर Highline AT को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस मिड साइज सेडान कार के ऑटोमैटिक बेस वेरिएंट को 14.88 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 14.88 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.55 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 37 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा इस पर करीब 30 हजार रुपये का टीसीएस और अन्य चार्ज भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 16.99 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Volkswagen Virtus के बेस वेरिएंट Highline AT को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 14.99 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 14.99 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 24126 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 14.99 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 24126 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Volkswagen Virtus के बेस वेरिएंट Highline AT के लिए करीब 5.27 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 22.26 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Volkswagen की ओर से Virtus को मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Skoda Slavia, Hyundai Verna, Honda City जैसी कारों के साथ होता है।

जुलाई 2025 में होंडा की कारों को खरीदने पर मिलेगा लाखों रुपये का डिस्काउंट, जानें किस पर होगी कितनी बचत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख कार और एसयूवी ऑफर करने वाली जापानी कंपनी Honda Cars की ओर से July 2025 में अपनी कार और एसयूवी पर हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी की ओर से किस कार और एसयूवी को खरीदने पर कितना कैश डिस्काउंट एक्सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जापानी वाहन निर्माता Honda Cars की ओर से एसयूवी से लेकर सेडान सेगमेंट में कई कारों को ऑफर किया जाता है। अगर आप July 2025 में होंडा की कार खरीदने का मन बना रहे हैं, तो निर्माता की ओर से इस महीने अपनी कारों और एसयूवी पर किस तरह के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Honda Amaze पर क्या है ऑफर

होंडा की ओर से July 2025 में अपनी कॉम्पैक्ट सेडान कार Honda Amaze पर हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। निर्माता की ओर से इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर अधिकतम 57200 रुपये के ऑफर मिल रहे हैं। होंडा की ओर से यह ऑफर इसकी दूसरी जेनरेशन के बचे हुए स्टॉक पर दिया जा रहा है। वहीं तीसरी जेनरेशन अमेज पर सिर्फ कॉर्पोरेट और मौजूदा होंडा ग्राहकों के लिए ही ऑफर्स को दिया जा रहा है। Honda Amaze की दूसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 7.62 लाख और तीसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 8.10 लाख रुपये से शुरू हो जाती है।

Honda City भी होगी बचत

होंडा की ओर से मिड साइज सेडान के तौर पर सिटी को ऑफर किया जाता है। July 2025 के दौरान इस कार पर भी कंपनी की ओर से डिस्काउंट ऑफर किए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इस महीने सिटी को खरीदने पर 107300 रुपये का अधिकतम फायदा लिया जा सकता है। यह ऑफर इसके सामान्य मॉडल पर दिया जा रहा है। वहीं सिटी के हाइब्रिड वर्जन Honda City e:HEV पर इस महीने किसी भी तरह के ऑफर नहीं दिए जा रहे हैं। Honda City की एक्स शोरूम कीमत 12.38 लाख रुपये से हो जाती है और इसके हाइब्रिड वर्जन की एक्स शोरूम कीमत 19.90 लाख रुपये से शुरू होती है।

Honda Elevate पर सबसे ज्यादा बचत

होंडा की ओर से साल 2023 में ही Elevate को भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया था। जिसके बाद से ही कंपनी को इस एसयूवी के लिए बेहतरीन प्रतिक्रिया मिल रही है। July 2025 के दौरान अगर आप इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं, तो इस महीने में इस एसयूवी कंपनी की ओर से अधिकतम 120100 रुपये का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इस एसयूवी की कीमत की शुरूआत 11.91 लाख रुपये से हो जाती है।

किआ केरेन क्लेविस ईवी में मिल सकते हैं ये 10 बेहतरीन फीचर्स, 15 जुलाई को हो रही लॉन्च की तैयारी

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में किआ मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही Kia Carens Clavis EV को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। इस इलेक्ट्रिक एमपीवी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किआ मोटर्स की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी से लेकर प्रीमियम एमपीवी सेगमेंट तक कई बेहतरीन वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से जल्द ही इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में Kia Carens Clavis EV को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स दिए जा सकते हैं। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

15 जुलाई को लॉन्च होगी Kia Carens Clavis EV

किआ मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में 15 जुलाई 2025 को नई गाड़ी के तौर पर Kia Carens Clavis EV को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी को इसके ICE वेरिएंट के डिजाइन की तरह ही रखा जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स

निर्माता की ओर से इसमें भी कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा।

इसमें ICE वेरिएंट की तरह ही कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाएगा। इन फीचर्स में 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम और डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर शामिल होगा।

इसके अलावा इसके ड्राइवर और को-ड्राइवर की सीट पर वेंटिलेटिड सीट्स का फीचर भी दिया जाएगा। जिससे गर्मी के समय काफी राहत मिलेगी।

तीसरे फीचर के तौर पर इसमें पैनोरमिक सनरूफ भी मिलेगा। यह फीचर भारतीयों को अपनी गाड़ी में काफी ज्यादा पसंद आता है। इसलिए Kia Carens Clavis EV में भी इसे दिया जाएगा।

बेहतरीन म्यूजिक सिस्टम के साथ किआ अपनी नई ईवी को लॉन्च करेगी। इसमें Bose का आठ स्पीकर वाला ऑडियो सिस्टम दिया जाएगा।

एंबिएंट लाइट्स भी भारतीयों को अपनी गाड़ी में काफी पसंद आती है। इसलिए किआ की ओर से नई ईवी के तौर पर लॉन्च की जाने वाली कैरेंस क्लाविस में भी इस फीचर को दिया जाएगा।

ऑटो एसी भी किआ कैरेंस क्वालिस की ईवी में दिया जाएगा। इस फीचर को किआ की ओर से इसके ICE वर्जन में भी ऑफर किया जा रहा है।

ऑटो एसी के अलावा इसमें एयर प्यूरीफायर जैसे फीचर को भी दिया जाएगा। यह फीचर किआ की ओर से अपनी कई कारों में ऑफर किया जाता है। जिसमें Kia Carens Clavis भी शामिल है।

किआ की ओर से क्लाविस में पावर्ड ड्राइवर सीट भी दी जाती है। उम्मीद है कि इस फीचर को भी किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस ईवी में दिया जाएगा।

360 डिग्री कैमरे जैसे फीचर्स के कारण ट्रैफिक में भी गाड़ी को निकालना काफी आसान हो जाता है। इस फीचर को भी कैरेंस क्लाविस ईवी में दिया जाएगा।

बेहतरीन फीचर्स के अलावा भी किआ की ओर से अपनी कारों में सुरक्षा का काफी ध्यान रखा जाता है। ऐसे में किआ की ओर से सेफ्टी के लिए Level-2 ADAS को भी नई ईवी में ऑफर किया जाएगा।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से इसके लॉन्च के समय ही कीमत की सही जानकारी दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस ईवी की एक्स शोरूम कीमत 15 से 20 लाख रुपये के बीच शुरू की जाएगी। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 22 से 25 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

सुशासन की सरकार पर सवालिया निशान खेमका की हत्या

कुमार कृष्णन

अपने बिहार दौरे में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जिस जंगलराज के बहाने महागठबंधन को घेरने की कोशिश की, वह उलट सावित हो रहा है। अब लोग सवाल कर रहे हैं कि यदि सुशासन में सरे आम अपराधी तांडव कर रहे हैं, तो फिर जंगल राज क्या है? महागठबंधन का नेतृत्व कर रहे तेजस्वी यादव पहले से ही अपराध बुलेटिन जारी कर सुशासन की पोल खोलकर सरकार के विरुद्ध गोलबंदी की मुहिम छेड़ दी है । ऐसे में गोपाल खेमका समेत कई व्यवसाई की हत्या के बाद नाराज वैश्य समाज सुशासन की सरकार के विरुद्ध खड़ा हो जाए तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी।

लोकसभा चुनाव में वैश्य समाज का एक वर्ग महागठबंधन के साथ जा जुड़ा था। सुशासन की सरकार पर सवालिया निशान खड़ा कर रहे हैं। पटना के राजेन्द्र नगर स्थित मगध हॉस्पिटल के मालिक और राज्य के प्रमुख व्यवसायी गोपाल खेमका की 4 जुलाई, को अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। जहां हत्या हुई है, उस स्थल से गांधी मैदान थाने महज ढाई सौ मीटर की दूरी पर है। आसपास ही पुलिस अधीक्षक और वरीय पुलिस अधीक्षक के आवास हैं। बावजूद इसके अपराधी हत्या कर चलते बने। हद तो ये है कि घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस डेढ़ घंटे बाद पहुंची।

व्यवसायी गोपाल खेमका के पहले गत जून माह में ही पुनपुन के सुहागी-कंडाप पथ पर बाइक सवार बदमाशों ने जमीन कारोबारी अंजनी सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना गौरीचक के कंडाप पैक्स गोदाम के पास की है, जहां सुनसान जगह का फायदा उठाकर अपराधियों ने वारदात को अंजाम दिया। मृतक हंडेर गांव के श्याम नंदन सिंह के पुत्र थे और जमीन के कारोबार से जुड़े थे। कारोबारी जयप्रकाश नारायण की भी गत वर्ष अपहरण कर हत्या कर दी गई थी। आरोप यह था कि अपराधियों ने कारोबारी जयप्रकाश से 1.5 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी थी। जब पैसा नहीं मिला तो उनकी हत्या कर दी गई।

बेगूसराय में अक्टूबर 2024 को सोना व्यापारी अनिल कुमार की अपहरण कर हत्या कर दी गई। अनिल कुमार ज्योति ज्वेलर्स के मालिक थे। जून 2024 में ही बिहार के नालंदा जिले के पनहेस्सा गांव के पास दो बाइक सवार बदमाशों ने जमीन कारोबारी को गोलियों से छलनी कर दिया। उन्हें चार गोलियां मारी गयीं। इलाज के लिए ले जाने के दौरान उनकी मौत हो गयी। मृतक की पहचान पनहेस्सा गांव निवासी 42 वर्षीय रजी अहमद उर्फ नन्हे के रूप में की गयी। इस हत्या का कारण भी जमीन की खरीद-बिक्री के कारोबार बताया गया।

इस घटना के बाद बिहार में कानून व्यवस्था को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक समीक्षा बैठक की। नीतीश कुमार ने कहा कि अपराधियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

गोपाल खेमका हत्याकांड को लेकर हुई समीक्षा बैठक में मुख्य मंत्री नीतीश कुमार के साथ पुलिस के बड़े अधिकारी भी शामिल थे। नीतीश कुमार ने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि वे अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ें और उन्हें कड़ी सजा दें।

'1 अणे मार्ग स्थित 'संकल्प' में पुलिस महानिदेशक एवं अन्य वरीय पुलिस पदाधिकारियों के साथ विधि व्यवस्था की समीक्षा बैठक की। विधि व्यवस्था सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। अपराध करने वाले कोई भी हों, उन्हें किसी कीमत पर बख्शा नहीं जाए। घटित आपराधिक घटनाओं के अनुसंधान कार्यों में तेजी लाने और दोषियों पर त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुलिस और प्रशासन को पूरी मुस्तैदी एवं कड़ाई से काम करने को कहा।

एनडीए में नीतीश के सहयोगी चिराग पासवान की पार्टी लोजपा (आर) के खगड़िया से सांसद राजेश वर्मा ने भी सवाल खड़े कर दिए हैं। उन्होने कहा कि जिस तरह गोपाल खेमका की हत्या को अंजाम दिया गया। उससे लगने लगा है कि राज्य में अपराधियों को पुलिस का कोई खौफ नहीं है। कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त है। बिहार में व्यापारी सुरक्षित नहीं है।

लोजपा (आर) के सांसद राजेश वर्मा ने कहा कि खेमका परिवार में ये दूसरी हत्या है, इससे पहले 2018 में गोपाल खेमका के बेटे गुंजन की हत्या भी इसी तरह की गई है। बिहार को आगे बढ़ाने की सोच रखने वाला वैश्य समाज भी सुरक्षित नहीं है। हाथ जोड़कर आग्रह करते हुए सांसद ने कहा कि सबसे पहले बिहार में व्यापारी वर्ग की सुरक्षा पुख्ता की जाए। अगर आप बिहार में उद्योग-धंधे लगाने की बात करते हैं। यही नहीं कानून व्यवस्था में सुधार के लिए पड़ोसी राज्य यूपी का हवाले देते हुए लोजपा (आर) के सांसद ने कहा कि यूपी से भी सीख सकते हैं कि कैसे लॉ एंड ऑर्डर को दुरूस्त किया जा सकता है। अपराधियों को उन्हीं की भाषा में जवाब देने का वक्त आ गया है। आज गोपाल खेमका नहीं तो कल कोई और होगा।

विपक्षी पार्टियां सरकार पर हमला कर रही हैं। उनका कहना है कि बिहार में कानून का राज खत्म हो गया है। नीतीश कुमार को इस्तीफा दे देना चाहिए।

इस घटना के बाद बिहार की राजनीति भी गरमा गई है। कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार ने सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि खेमका परिवार ने घटना के बाद वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस उपाधीक्षक और स्थानीय थाने में फोन किया, लेकिन किसी ने फोन नहीं उठाया। इसके बाद जिला मजिस्ट्रेट को फोन किया गया, जिन्होंने फोन उठाया। उन्हें बताया गया कि पुलिस जवाब नहीं दे रही है और उन्हें मदद की ज़रूरत है।

राजेश कुमार ने आरोप लगाते हुए आगे कहा कि जिला मजिस्ट्रेट को फोन करने के तीन घंटे बाद पुलिस पहुंची। उन्होंने नीतीश कुमार के शासन को बीमार बताया और मांग की कि नीतीश कुमार और राजग गठबंधन को इस मुद्दे पर इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने पीड़ित परिवार को सुरक्षा देने की भी मांग की।

वहीं पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने भी कानून व्यवस्था के मुद्दे पर सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि पटना में थाने से कुछ ही कदम दूर, बिहार के एक प्रमुख व्यापारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई! उन्होंने सवाल उठाया कि बिहार में हर महीने सैकड़ों व्यापारियों की हत्या की जा रही है, लेकिन इसे जंगल राज क्यों नहीं कहा जा सकता? उन्होंने मीडिया मैनेजमेंट और परसेप्शन मैनेजमेंट पर भी सवाल उठाए। तेजस्वी यादव ने कहा कि 'बिहार में हर महीने सैकड़ों व्यापारियों की हत्या की जा रही है, लेकिन हम इसे जंगल राज नहीं कह सकते? क्योंकि यही तो शास्त्रों में मीडिया मैनेजमेंट, परसेप्शन मैनेजमेंट और इमेज मैनेजमेंट कहते हैं।'

जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने भी इस मामले पर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि लालू यादव के जंगल राज और नीतीश कुमार के राज में कोई अंतर नहीं है। लालू यादव के राज में अपराधियों का तांडव था और नीतीश कुमार के राज में अधिकारियों का तांडव है। उन्होंने कहा कि पहले जिस तरह का भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था की स्थिति थी, वह आज भी वैसी ही है।

प्रशांत किशोर ने कहा कि पटना में इतने बड़े व्यवसायी की गोली मारकर हत्या कर दी जाती है और कोई कार्रवाई नहीं होती। उन्होंने सीवान में हुई तीन लोगों की हत्या का भी जिक्र किया और कहा कि यह रोज की बात है। उन्होंने इसे अधिकारियों का राज बताया, जो अपनी मर्जी से काम चला रहे हैं। प्रशांत किशोर ने कहा, 'लालू यादव के राज में अपराधियों का तांडव था और नीतीश कुमार के राज में अधिकारियों का तांडव है।'

डॉक्टर बनाम सैलूनः भारतीय डॉक्टर बाल कटवाने से कम शुल्क लेते हैं

विजय गर्ग

यह एक दिलचस्प तुलना है जो भारत में अलग-अलग आर्थिक वास्तविकताओं पर प्रकाश डालती है! हालांकि यह दुनिया के कुछ हिस्सों में उल्टा लग सकता है, इस कथन के लिए कुछ सच्चाई है कि एक भारतीय डॉक्टर के परामर्श पर कभी-कभी बाल कटवाने से कम खर्च हो सकता है, खासकर अधिक अपस्केल सैलून में। यहाँ इस बात का टूटना है कि यह मामला क्यों हो सकता हैः भारत में डॉक्टर का परामर्श शुल्कः

वाइड रेंजः भारत में डॉक्टर परामर्श शुल्क शहर, डॉक्टर के अनुभव, उनकी विशेषज्ञता और क्लिनिक के प्रकार (सरकारी, निजी, छोटे क्लिनिक, बड़े अस्पताल) के आधार पर काफी भिन्न होते हैं।

अफोर्डेबिलिटी फोकसः हेल्थकेयर, विशेष रूप से बुनियादी परामर्श, अक्सर भारत में अपेक्षाकृत सस्ती रखा जाता है, विशेष रूप से छोटे शहरों और स्थानीय क्लीनिकों में, एक बड़ी आबादी के लिए पहुंच सुनिश्चित करने के लिए।

उदाहरणः

कुछ परामर्श बहुत स्थानीय सेटिंग्स में ₹ 50- ₹ 100 के रूप में कम शुरू कर सकते हैं।

औसत शुल्क कई शहरों में ₹ 300- ₹ 800 से हो सकता है।

प्रमुख शहरों में विशेषज्ञ परामर्श ₹ 1000- and 2000 तक जा सकते हैं, और बहुत उच्च-अंत परिदृश्यों में, यहां तक कि उच्च भी। भारत में बाल कटवाने की कीमतेंः

विविध विकल्पः हेयरकट की कीमतों में एक विशाल रेंज भी होती है, जो बहुत सस्ती स्थानीय नाइयों से लेकर उच्च अंत सैलून तक होती है।

स्थानीय नाईः एक स्थानीय नाई की दुकान पर एक बुनियादी पुरुषों के बाल कटवाने पर ₹ 50- ₹ 150 जितना कम खर्च हो सकता है।

मिड-रेंज सैलूनः सभ्य स्थानीय सैलून में बाल कटाने पुरुषों के लिए ₹ 200- ₹ 500 की सीमा में हो सकते हैं और महिलाओं के लिए काफी अधिक (अक्सर ₹ 300- ₹ 800 से शुरू होते हैं और स्टाइल कट, वॉश और ब्लो-ड्रीज़ के लिए बहुत अधिक जा रहे हैं)।

हाई-एंड सैलूनः लक्जरी या ब्रांडेड सैलून (जैसे टोनी एंड गाइ, नेचुरल्स, आदि) में, एक पुरुषों के बाल कटवाने में आसानी से ₹ 700- and 1700 खर्च हो सकते हैं, और महिलाओं के बाल कटाने ₹ 800- and 1000 से शुरू हो सकते हैं और रचनात्मक या निर्देशक स्टाइलिस्ट के लिए for 2500 या अधिक तक जा सकते हैं। तुलनाः इन श्रेणियों के आधार पर, यह पूरी तरह से प्रशंसनीय है कि एक स्थानीय क्लिनिक में एक बुनियादी डॉक्टर का परामर्श वास्तव में एक मध्य-सीमा या उच्च-अंत सैलून में बाल कटवाने से सस्ता हो सकता है। उदाहरण के लिएः

₹ 200- ₹ 300 के लिए एक डॉक्टर की यात्रा आम है।

एक अच्छे सैलून में ₹टॉप स्टाइलिस्ट₹ पर एक बाल कटवाने पुरुषों के लिए ₹ 900 या महिलाओं के लिए ₹1300 हो सकता है। इस घटना में योगदान देने वाले कारकः

हेल्थकेयर में स्केल की अर्थव्यवस्थाएंः भारत में डॉक्टर अक्सर रोगियों की एक बहुत अधिक मात्रा देखते हैं, जो उन्हें व्यक्तिगत परामर्श शुल्क कम रखने की अनुमति देता है।

बुनियादी परामर्श के लिए लोअर ओवरहेडः एक साधारण डॉक्टर के परामर्श के लिए हमेशा व्यापक उपकरण या बुनियादी ढांचे की आवश्यकता नहीं होती है।

मार्केट डायनेमिक्सः सौंदर्य और सौंदर्य उद्योग, विशेष रूप से उच्च अंत में, अक्सर उच्च ओवरहेड्स (प्रमुख स्थानों में किराए, महंगे उत्पादों, स्टाइलिस्ट, सैलून सजावट, विपणन के लिए विशेष प्रशिक्षण) के साथ संचालित होता है और एक ग्राहक को पूरा करता है जो भुगतान करने के लिए तैयार है प्रीमियम अनुभव।

अनुमानित मूल्यः जबकि स्वास्थ्य सेवा आवश्यक है, एक स्टाइलिश बाल कटवाने या सैलून अनुभव को अक्सर एक विवेकाधीन खर्च के रूप में देखा जाता है, और लोग सौंदर्य परिणाम और लाड़ के लिए अधिक भुगतान करने के लिए तैयार हो सकते हैं। इसलिए, जबकि यह एक सामान्यीकरण है, बयान पूरे भारत में कई विशिष्ट परिदृश्यों में सच है, विभिन्न सेवा क्षेत्रों में लागत, मांग और कथित मूल्य के जटिल इंटरप्ले को दर्शाता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

प्रभावी दैनिक आदतें जो छात्रों को उनकी स्मृति को तेज करने में मदद करती हैं

विजय गर्ग

पर्याप्त नींद लेंः स्मृति और सीखने के लिए एक उचित रात की नींद आवश्यक है।

छात्रों को हर रात 7 से 9 घंटे की नींद का लक्ष्य रखना चाहिए। नींद के दौरान, मस्तिष्क पूरे दिन सीखी गई जानकारी को संसाधित और संग्रहीत करता है। नींद की कमी से चीजों को ध्यान केंद्रित करना और याद करना मुश्किल हो सकता है, खासकर परीक्षा या पढ़ाई के दौरान।

ब्रेन फ्रेंडली फूड्स खाएं 2/10 ब्रेन फ्रेंडली फूड्स खाएंः मस्तिष्क बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के साथ एक संतुलित आहार स्मृति का समर्थन कर सकता है। छात्रों को अपने भोजन में अखरोट, बादाम, हरी सब्जियां, जामुन और सामन जैसी मछली शामिल करनी चाहिए। ये खाद्य पदार्थ ओमेगा 3 फैटी एसिड, एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन से भरपूर होते हैं जो मस्तिष्क के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। जंक फूड और शुगर स्नैक्स से बचें, क्योंकि वे एकाग्रता को प्रभावित कर सकते हैं।

हाइड्रेटेड रहें 3/10 हाइड्रेटेड रहेंः दिन के दौरान पर्याप्त पानी पीने से मस्तिष्क को सक्रिय और सतर्क रखने में मदद मिलती है। यहां तक कि मामूली निर्जलीकरण छात्रों को थका हुआ या अप्रभावित महसूस कर सकता है। एक पानी की बोतल को कक्षा में ले जाना और इसे पूरे दिन पीना एक साधारण आदत है जो स्मृति और सीखने को ट्रैक पर रहने में मदद करती है।

नियमित शारीरिक व्यायाम 4/10 नियमित शारीरिक व्यायामः व्यायाम मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को बढ़ाता है और स्मृति में सुधार कर सकता है। यहां तक कि एक छोटी सैर, योग सत्र, या 20 मिनट की कसरत तनाव को कम करने और ध्यान बढ़ाने में मदद करती है। छात्रों को जिम जाने की जरूरत नहीं है, सरल स्ट्रेचिंग या नियमित रूप से खेल खेलने से बड़ा फर्क पड़ सकता है।

एक्टिव रिकॉल का अभ्यास करें

एक्टिव रिकॉल का अभ्यास करेंः नोट्स को फिर से पढ़ने के बजाय, छात्रों को मेमोरी से प्रमुख बिंदुओं को याद रखने की कोशिश करनी चाहिए। यह विधि, जिसे सक्रिय रिकॉल के रूप में जाना जाता है, दीर्घकालिक मेमोरी को मजबूत करती है। वे अपनी पुस्तकों को बंद कर सकते हैं और लिख सकते हैं कि उन्हें क्या याद है, फिर त्रुटियों की जांच करें। इस तकनीक के लिए फ्लैशकार्ड और क्विज़ भी मददगार हैं।

आप जो सीखते हैं उसे सिखाएं

आप जो सीखते हैं उसे सिखाएंः यह समझाते हुए कि आपने किसी और से क्या अध्ययन किया है, आपको इसे बेहतर याद रखने में मदद करता है। यह आदत मस्तिष्क को स्पष्ट रूप से जानकारी व्यवस्थित करने के लिए मजबूर करती है। छात्र एक सहपाठी, एक दोस्त, या यहां तक कि खुद से जोर से बोल सकते हैं। यह दिखाता है कि वे वास्तव में क्या समझते हैं और उन्हें क्या संशोधित करने की आवश्यकता है।

एक अध्ययन दिनचर्या का पालन करें

एक अध्ययन दिनचर्या का पालन करेंः हर दिन अध्ययन करने के लिए एक निर्धारित समय और स्थान होने से अनुशासन बनता है और स्मृति में सुधार होता है। यह मस्तिष्क को उस अवधि के दौरान बेहतर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशिक्षित करता है। छात्रों को फोन जैसी विकर्षणों से बचना चाहिए और बीच में कम ब्रेक लेना चाहिए। एक नियमित अध्ययन कार्यक्रम भी अंतिम मिनट के दबाव को कम करता है।

दैनिक पढ़ेंः पढ़ना स्मृति, भाषा कौशल और समझ में सुधार करने में मदद करता है। इसमें केवल पाठ्यपुस्तकें नहीं होनी चाहिए, उपन्यास, लेख, या पत्रिकाएं भी काम करती हैं। पढ़ना शब्दावली बनाता है और मस्तिष्क को सक्रिय रखता है। कुछ सार्थक पढ़ने के लिए छात्रों को प्रतिदिन 15 से 30 मिनट अलग रखना चाहिए।

ध्यान करें और तनाव का प्रबंधन करें

तनाव का ध्यान और प्रबंधन करेंः तनाव का उच्च स्तर स्मृति को अवरुद्ध कर सकता है और ध्यान को कम कर सकता है। रोजाना कुछ मिनटों तक ध्यान या गहरी सांस लेने का अभ्यास करने से मन शांत हो सकता है। छात्र नरम संगीत भी सुन सकते हैं, टहलने जा सकते हैं, या किसी से बात कर सकते हैं जब वे चिंतित महसूस करते हैं।

मल्टीटास्किंग से बचेंः एक बार में कई काम करने की कोशिश मस्तिष्क को भ्रमित कर सकती है और स्मृति को कम कर सकती है। छात्रों को अक्सर स्विच किए बिना एक समय में एक विषय का अध्ययन करना चाहिए। एक कार्य पर ध्यान केंद्रित करने से मस्तिष्क को जानकारी को ठीक से अवशोषित करने और जरूरत पड़ने पर इसे याद करने में मदद मिलती है, खासकर परीक्षा में।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

ब्रेन हेल्थ और एजिंग की समझ

विजय गर्ग

वयस्क मानव हिप्पोकैम्पस में बनने वाले नए न्यूरॉन्स, जैसा कि कारोलिंस्का संस्थान के ग्राउंडब्रेकिंग अनुसंधान में देखा गया है। क्या वयस्क दिमाग नए न्यूरॉन्स बना सकता है? एक नया अध्ययन कुछ निश्चित साक्ष्य सामने लाता है जो यह संभव है। वर्षों से, नए न्यूरॉन्स बनाने के लिए वयस्क मानव मस्तिष्क की क्षमता तंत्रिका विज्ञान में विवाद का विषय रही है। हालांकि, अब शोधकर्ताओं ने आखिरकार दशकों पुरानी बहस को सुलझा लिया होगा।

स्वीडन के स्टॉकहोम के कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने हाल ही में वयस्क मानव हिप्पोकैम्पस में न्यूरल प्रोजेनिटर्स के प्रसार की पहचान शीर्षक से एक अध्ययन में वयस्कों के हिप्पोकैम्पस क्षेत्र में तंत्रिका स्टेम कोशिकाओं के बढ़ने के संकेत मिले । इस खोज से पता चलता है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हमारा दिमाग कैसे विकसित होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, इसके साथ न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज के नए तरीके खोजने की संभावना है।

न्यूरॉन विकास या न्यूरोजेनेसिस, हिप्पोकैम्पस में होता है, जो मानव मस्तिष्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र के कारण भावनाओं को सीखने, याद रखने और महसूस करने की क्षमता संभव है। करोलिंस्का इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं में से एक मार्टा पैटरलिनी ने लाइव साइंस को बताया कि उनका शोध इस बारे में लंबे समय से चली आ रही बहस को आराम देता है कि क्या वयस्क मानव दिमाग नए न्यूरॉन्स विकसित कर सकता है।

अध्ययन के लिए, शोधकर्ताओं ने 78 वर्ष की आयु तक के लोगों से मस्तिष्क के ऊतकों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि तंत्रिका पूर्वज कोशिकाएं हिप्पोकैम्पस क्षेत्र में विभाजित हो रही थीं। उन्होंने विकास के विभिन्न चरणों में कोशिकाओं की पहचान करने के लिए एकल-नाभिक आरएनए अनुक्रमण और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके 400,000 से अधिक व्यक्तिगत सेल नाभिक का अध्ययन किया। टीम ने एक ही स्थान पर पूरी तरह से गठित तंत्रिका कोशिकाओं के बगल में बैठे अग्रदूत कोशिकाओं को विभाजित करते हुए देखा, जहां पशु अध्ययन ने वयस्क स्टेम कोशिकाओं को जीवित दिखाया है।

एक तकनीक के साथ जांच किए गए 14 वयस्क दिमाग में से नौ ने न्यूरोजेनेसिस के संकेतों का प्रदर्शन किया, जबकि 10 में से 10 दिमाग ने दूसरी विधि के साथ जांच की, जिसमें नए सेल गठन के सबूत दिखाए गए। मशीन लर्निंग का उपयोग करके निर्मित फ्लोरोसेंट टैग और एल्गोरिदम का उपयोग करके भविष्य के न्यूरोजेनिक स्टेम कोशिकाओं की पहचान की गई थी।

कथित तौर पर, 1998 में शोधकर्ताओं ने प्रायोगिक उपचार से गुजरने वाले कैंसर रोगियों से ऊतक का उपयोग करके वयस्क मानव दिमाग में नए न्यूरॉन्स की पहचान की। बाद में कार्बन -14 डेटिंग और अन्य तरीकों का उपयोग करके अध्ययन करने से कुछ परस्पर विरोधी परिणाम हुए। करोलिंस्का इंस्टीट्यूट की इसी टीम ने 2013 में इसी तरह का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि न्यूरोजेनेसिस जीवन भर होता है। हालांकि, नवीनतम शोध तक इस मामले पर बहस जारी रही।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पत्र लेखन कला के अनमोल रत्न थे जगदीश गुरु जी नेमावर वाले।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

देश विदेश के तमाम प्रमुख अखबारों में विभिन्न विषयों पर अपनी कलम से पत्र संपादक के नाम के लिए पत्र लेखन कला के अनमोल रत्न में वरिष्ठ पत्र लेखक स्व श्री जगदीश गुरु जी नेमावर ने एक लम्बी यात्रा लेखन की थी। पुराने दशक में पत्र लेखकों को जो मान सम्मान प्राप्त होता था वह बहुत बड़ी बात होती थी। उस पीढ़ी के सभी लेखकद्वय पत्र लेखन के मध्यम में विरासत को सहेज कर रखें हुए थे। तभी तो हम आज भी हमारे वरिष्ठ पत्र लेखकों को कभी भी भुला नहीं पाते हैं। लेखन कला की इसी बात का भी यहां परिणाम है कि निरंतर पत्र लेखन के जरिए समसामयिक और सामाजिक मुद्दों को सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत कर उसे जन आकर्षक का केंद्र बनाने में उनके जैसा दूजा कोई नहीं था। पत्र लेखकों के लिए श्रेष्ठा पाठ पढ़ने वाले शब्दों की नपी तुली अभिव्यक्ति को अपने छोटे से पत्र में वह बहुत बुलंद आवाज उठाते थे। जगदीश गुरु जी क़लम के वीर सिपाही थे जो कम शब्दों में लिखकर हर समस्या को करीब से देखते थे और उन्हें महसूस होता था कि इस पर कुछ लिखना चाहिए तो वह पोस्ट उठाते और लिखने बैठ जातें थें। वह शिक्षाविद् बहुत के साथ साथ बहुत प्रभावी व्यक्तित्व के धनी थे। आप का पूरा नाम जगदीश शर्मा जो शिक्षक थे और जब आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े तो उन्होंने अपना नाम जगदीश गुरु जी रख लिया। समसमाहिक विषयों को वह अखबारों में जब पढ़ते थे, तो उनके अन्दर का कलमकर बहुत कुछ कहता था। जब कुछ ग़लत हो रहा होता है तो अभिव्यक्ति का मौन ठीक नहीं है। जब से वह ज्वलंत मुद्दों पर अखबारों में पोस्ट कार्ड से पत्र संपादक के नाम कालम के लिए अखबारों में भेजने लगे। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं व देश के सभी अखबारों और इन्दौर के सभी प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में जैसे स्वदेश, इन्दौर समाचार, भास्कर, नवभारत के साथ नईदुनिया में तो विशेष रूप से नर्मदाचल के वरिष्ठ पत्र लेखक जगदीश गुरु जी नेमावर वालो को बहुत मान सम्मान होता था। आज आप की पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय साहित्य संस्था विघोतमा फाउंडेशन इन्दौर ईकाई के अध्यक्ष व पत्र लेखक मंच के दिनेश तिवारी उपवन जी जगदीश गुरु जी को याद करते हुए कहते हैं कि 80 के दशक में जब देवास की एक प्राइवेट कंपनी में लगभग २ वर्षों तक कार्यरत रहा इसी दरमियान जगदीश गुरु जी के पूरे परिवार से मेरा मिलना होता था। नेमावर भी जाता था तो भाई जगदीश जी का अतिथि सत्कार कभी भुलाए नहीं भूलेंगे। सहज, सरल व्यवहार के धनी भाई जगदीश जी में लेश मात्र का भी ग़रूर नहीं था यह भाई की खासियत थी। कि

आज भाई जगदीश जी की पुण्यतिथि पर उनकी याद रह रह कर बहुत आ रही है। एक जिंदादिल और यारबाज मित्र का समय से पहले सबके बीच में से चले जाना वास्तव में गहन दुखदाई है। प्रभु भाई जगदीश जी जहां भी रहे प्रभु उनकी आत्मा को शांति दे।

भाई जगदीश जी के विषय में बहरहाल यही:
यार की तस्वीर मेरे दिल में है
जब जरा गर्दन उठाई देख ली। वहीं पुराने पत्र लेखकों में जो गुरु जी के साथ लिखते रहे ऐसे राष्ट्रवादी विचारधारा के विचारक व वरिष्ठ पत्र लेखक मनोहर मंजुल जी कहते हैं कि सामाजिक सरोकार सामाजिक चेतना और सामाजिक दायित्व की त्रिवेणी अगर कहा जाए तो श्री जगदीश गुरुजी का नाम एक ऐसा उज्जवल प्रकाश पुंज के रूप में हमारे सामने है जो हमें आज भी आलोकित करता है। केवल पत्र लिख देना और प्रकाशित हो जाना सामान्य से प्रक्रिया है किंतु जब वह सामग्री देश और समाज को दिशा दें वैचारिक वातावरण का निर्माण करें तब वह विलक्षण और अनुकरणीय हो जाता है श्री गुरु जी आज भी हमारे मानस पटल पर अंकित है हम उनसे आलोकित होते हैं। वहीं वरिष्ठ लेखक व गुरु जी के परिवारिक सदस्य दिनेश गंगराड़े जी कहते हैं कि हमने बहुत कुछ सीखा काका श्री से वह नये जमाने में लेखक द्वय जिस तरह लेखन कला को निरंतरता प्रदान करते थे, वह अपने आप में अद्वितीय है। रतलाम के साहित्यकार प्रकाश हेमावत जी गुरु जी को याद करते हुए कहते हैं कि पत्र लेखन कला का जीवित रहना साहित्य की अमरता के लिए भी वरदान है। निश्चित रूप से ऐसे व्यक्तित्व के सार्थक प्रयास लेखक कुनबे को दीर्घायु बनानें में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। वहीं वरिष्ठ पत्र लेखक विजय इमलीवाला जी कहते हैं कि मध्यप्रदेश के पत्र लेखकों ने पूरे देश में सम्मान प्राप्त किया। ऐसे तो पत्र लेखक कला को मध्यप्रदेश की कलम ने ही संभाल कर रखा है। और जगदीश गुरु जी जैसे जनता की आवाज अल्प समय में जरूर चलीं गईं पर उनके विचार उनके लिखे पत्र आज भी हमें लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। वरिष्ठ पत्रकार व पत्र लेखन से अपनी बात रखने वाले जवाहर डोसी पियुष महिदपुर वाले गुरु जी के लेखन पर कहते कि पूरे देश में नर्मदा आंचल का नेमावर वाले गुरु जी सही में हम सभी लेखकों की लेखनी के लिए प्रेरणास्रोत रहा ओर हमेशा उनके पत्रों में वह जीवित रहेगा। नव लेखन में पत्र संपादक के नाम अब जरुर बहुत नीचे जा रहा है पर जगदीश गुरु जी की पीढ़ी से लेकर नये जमाने तक कि यह यात्रा अभिव्यक्ति के विचारों को उठाने वाले अखबार और पाठकों के बीच सेतु बन कर कार्य कर रहे हैं। आज भी अपनी बात कह रह है, यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। आज 7 जुलाई जगदीश गुरु जी नेमावर वाले वरिष्ठ पत्र लेखक के पुण्य स्मरण दिवस पर हम सभी पत्र लेखकगण जगदीश गुरु जी को शब्दों की श्रद्धांजलि प्रेषित करते हैं। क्योंकि वह पत्र लेखन कला के अनमोल रत्न थे। सादर नमन।

सी बी एस सी का नया इनिसिएटिव, बच्चों को स्कूल बचाएंगे मधुमेह से

डॉ घनश्याम बादल

स्कूली बच्चों में बढ़ती हुई टाइप २ शुगर की बीमारी को ध्यान में रखते हुए सीबीएसई ने विद्यालयों में बच्चों को मधुमेह से बचने की शिक्षा देने एवं शुगर हो जाने पर कैसे उसे नियंत्रित किया जा सकता है जैसे बिंदुओं पर शिक्षित करने का एक अच्छा कदम उठाया है।

प्राय: माना जाता है कि मधुमेह बच्चों में नहीं होती लेकिन लंबे समय से देखने में आ रहा है कि किशोर अवस्था के बच्चों में भी अब मधुमेह के लक्षण बढ़ते जा रहे हैं यदि पाठ्यक्रम में इस तरह के अध्याय रखे जाएं जो बच्चों को मधुमेह के लक्षणों एवं कारणों के बारे में बता सकें तो यह निश्चित रूप से आने वाली पीढ़ी के लिए एक लाभदायक कदम होगा।

मधुमेह के कारणों की पृष्ठभूमि में जाएं तो दो कारण मुख्य रूप से उभर कर आते हैं इनमें से पहला कारण है आनुवंशिक रूप से मधुमेह का होना जो बच्चे में अपने पैतृक या माता के वंश से आता है। इसका दूसरा सबसे बड़ा कारण है बच्चों में बढ़ता हुआ मोटापा। मोटापे का मूल कारण है शरीर में वसा का अधिक मात्रा में जमा होना। जितनी कैलोरी हम भोजन या अन्य खाद्य पदार्थों से प्राप्त करते हैं यदि उ उसे पर्याप्त मात्रा में बर्न नहीं किया जाता है तो शरीर में ग्लूकोटिन की मात्रा बढ़ती चली जाती है जो अंतत: शुगर का कारण बन जाती है।

मधुमेह के बारे में एक गलत अवधारणा देखने में आती है कि मधुमेह मीठा खाने से होता है। यह एक मिथक है दरअसल मधुमेह मीठा खाने से नहीं होता लेकिन यदि मधुमेह हो जाए तो अधिक मीठा खाने से स्थिति बिगड़ने का भय ज़रूर रहता है। शुगर से बचने का आसान तरीका है उसके प्रारंभिक लक्षणों को जानकर उपयुक्त सावधानी बरतना।

सामान्य लक्षण:

मधुमेह के प्रारंभिक लक्षण में बार-बार पेशाब आना, त्वचा में खुजली होना, धुंधला दिखना, थकान व कमजोरी महसूस करना, पैरों का सुन्न होना, प्यास अधिक लगना, घाव भरने में बहुत समय लगना, हमेशा भूख महसूस करना, वजन कम होना और त्वचा में संक्रमण होना प्रमुख हैं। यदि त्वचा का रंग, कांति या मोटाई में परिवर्तन दिखे, कोई चोट या फफोले ठीक होने में सामान्य से अधिक समय लगे, कीटाणु संक्रमण के प्रारंभिक चिह्न लालीपन, सूजन, फोड़ा या छूने से त्वचा गरम हो, योनि या गुदा मार्ग, बगलों या स्तनों के नीचे तथा अंगुलियों के बीच खुजलाहट हो, जिससे फफूंदी संक्रमण की संभावना का संकेत मिलता है या कोई न भरने वाला घाव हो तो रोगी को तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर शुगर टेस्ट कराना चाहिए।

विशेष लक्षण:

रोगी का मुँह सूखना, अत्यधिक प्यास व भूख लगना, दुर्बल होते जाना, बिना कारण भार कम होना, शरीर में थकावट के साथ-साथ मानसिक चिन्तन एवं एकाग्रता में कमी होना। मूत्र त्यागने के स्थान पर चीटियाँ लगना, पौरुष शक्ति में क्षीणता, स्त्रियों में मासिक स्राव में विकृति अथवा उसका बन्द होनाआदि मधुमेह के विशेष लक्षण है।

कारण

हमारे भोजन में कार्बोहाइड्रेट एक प्रमुख तत्व है, यही कैलोरी व ऊर्जा का स्रोत है। शरीर को 60 से 70 प्रतिशत कैलोरी इन्हीं से प्राप्त होती है। कार्बोहाइड्रेट पाचन तंत्र में पहुंचते ही ग्लूकोज के छोटे-छोटे कणों में बदल कर रक्त प्रवाह में मिल जाते हैं इसलिए भोजन लेने के आधे घंटे भीतर ही रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है तथा दो घंटे में अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है। दूसरी ओर शरीर तथा मस्तिष्क की सभी कोशिकाएं इस ग्लूकोज का उपयोग करने लगती हैं। ग्लूकोज छोटी रक्त नलिकाओं द्वारा प्रत्येक कोशिका में प्रवेश करता है, वहां इससे ऊर्जा प्राप्त की जाती है। यह प्रक्रिया दो से तीन घंटे के भीतर रक्त में ग्लूकोज के स्तर को घटा देती है। भोजन के पश्चात यह स्तर 120-140 मि.ग्रा.डे.ली. हो जाता है तथा धीरे-धीरे कम होता चला जाता है।

मधुमेह में इंसुलिन की कमी के कारण कोशिकाएं ग्लूकोज का उपयोग नहीं कर पातीं क्योंकि इंसुलिन के अभाव में ग्लूकोज कोशिकाओं में प्रवेश ही नहीं कर पाता। इंसुलिन एक रक्षक की तरह ग्लूकोज को कोशिकाओं में प्रवेश करवाता है ताकि ऊर्जा उत्पन्न हो सके। यदि ऐसा न हो सके तो शरीर की कोशिकाओं के साथ-साथ अन्य अंगों को भी रक्त में ग्लूकोज के बढ़ते स्तर के कारण हानि होती है।

ख़तरे ।

यदि रक्त में शर्करा का स्तर लंबे समय तक सामान्य से अधिक बना रहता है तो उच्च रक्त ग्लूकोज अधिक समय के बाद विषैला हो जाता है। अधिक समय के बाद उच्च ग्लूकोज, रक्त नलिकाओं, गुर्दे, आंखों और स्नायुओं को खराब कर देता है जिससे जटिलताएं पैदा होती है और शरीर के प्रमुख अंगों में स्थायी खराबी आ सकती है।

स्नायुतंत्र की समस्याओं से पैरों अथवा शरीर के अन्य भागों की संवेदना चली जा सकती है। रक्त नलिकाओं की बीमारी से हृदयाघात भी सकता है, पक्षाघात और संचरण की समस्याएं पैदा हो सकती हैं। ग्लूकोमा या मोतियाबिंद रोग हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रोल व रक्त संचारण धीमा होने से दिल का दौरा पड़ सकता है। मधुमेह में पक्षाघात और दिल के दौरे का खतरा 16 गुना बढ़ जाता है।

मधुमेह मरीजों में हार्ट-अटैक होने पर भी छाती में दर्द नहीं होता, क्योंकि दर्द का अहसास दिलाने वाला इनका स्नायु क्षतिग्रस्त हो जाता है।

मधुमेह रोगियों को एन्जाइना भी होने का खतरा रहता है, यदि रक्त का ग्लूकोज स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है और रक्त में किरोन का स्तर भी बढ़ता है तो अचानक रक्त संचार की प्रणाली कार्य करना बंद कर देती है और उससे मौत भी हो सकती है।

मधुमेह का घनिष्ठ संबंध जीवन-शैली से है, अत: नियमित अंतराल में चिकित्सकीय परीक्षण करवायें, जिससे रोग का शुरुआती अवस्था में ही पता लग सके।

ऐसे रोकें मधुमेह :

मधुमेह होने के कारण पैदा होने वाली जटिलताओं की रोकथाम के लिए नियमित आहार, व्यायाम, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, सफाई और संभावित इनसुलिन इंजेक्शन अथवा डॉक्टर के सुझाव के अनुसार खाने वाली दवाइयों का सेवन करना जरुरी है।

तनाव से बचें सुपाच्य खाएं:

चिन्ता, तनाव, व्यग्रता से मुक्त रहें। तीन माह में एक बार रक्त शर्करा की जाँच कराएं। भोजन कम करें, भोजन में रेशे युक्त द्रव्य, तरकारी, जौ, चने, गेहूँ, बाजरे की रोटी, हरी सब्जी एवं दही का प्रचुरमात्रा में सेवन करें। चना और गेहूँ मिलाकर उसके आटे की रोटी खाना बेहतर है। शारीरिक परिश्रम करें व प्रात: 4-5 कि.मी. घूमें। कोल्ड ड्रिंक व पैक्ड फूड से जितना परहेज करें उतना अच्छा है नियमित रहें, पैदल चलें

नियमित एवं संयमित जीवन के साथ मीठे का सेवन सीमित करें। वजन अधिक है तो कम करें। दवाओं का सेवन चिकित्सक के परामर्श से करें। प्राणायाम व योग अवश्य करें। जहाँ तक संभव हो कुछ समय नंगे पैर जमीन पर अवश्य चलें, और शुगर की नियमित जाँच ज़रूर कराते रहें।

कम में अधिक कहने की कला: चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की साहित्य-यात्रा

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम हिंदी साहित्य के उस दीप्तिमान आकाश में एक तारे-सा जगमगाता है, जिसकी किरणें समय की सरहदों को पार कर आज भी पाठकों के हृदय को प्रज्वलित करती हैं। 7 जुलाई, उनकी जयंती, महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक ऐसी साहित्यिक तीर्थयात्रा का प्रतीक है, जो संवेदना, विचार और शिल्प की त्रिवेणी से रची गई। गुलेरी जी ने भले ही चुनिंदा रचनाएँ दीं, किंतु प्रत्येक रचना एक रत्न-सी चमकती है, जिसने हिंदी साहित्य को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी अमर कृति 'उसने कहा था' न केवल हिंदी की पहली आधुनिक कहानी के रूप में एक युगांतकारी उपलब्धि है, बल्कि मानव मन की गहन संवेदनाओं और भावनाओं का ऐसा सजीव चित्र है, जो हर युग में जीवंत और प्रासंगिक रहेगा। उनकी जयंती पर उनके साहित्यिक अवदान को स्मरण करना प्रत्येक साहित्यप्रेमी के लिए एक गौरवमयी क्षण है, जो हमें साहित्य की अमर शक्ति और उसकी परिवर्तनकारी ताकत से जोड़ता है।

गुलेरी जी की लेखनी में एक ऐसी मंत्रमुग्ध कर देने वाली सादगी थी, जो पाठक के मन को सहज ही बाँध लेती थी। उनकी कहानियाँ महज शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि भावनाओं का एक अथाह सागर थीं, जिसमें गोता लगाकर पाठक आत्ममंथन की गहराइयों में खो जाता है। 'उसने कहा था' एक ऐसी कालजयी रचना है, जो प्रेम, कर्तव्य और बलिदान के त्रिकोण को इतने हृदयस्पर्शी अंदाज में पिरोती है कि वह पाठक के अंतर्मन को झकझोर देती है। लहना सिंह और सूबेदारनी की क्षणभंगुर मुलाकात, उनके बीच का अनकहा प्रेम और अंत में लहना सिंह का सर्वोच्च बलिदान — यह कहानी केवल एक कथा नहीं, बल्कि मानव जीवन के उन शाश्वत सत्यों का साक्षात्कार है, जो समय की कसौटी पर और भी प्रखर हो उठते हैं। गुलेरी जी ने प्रेम को एक ऐसी अलौकिक शक्ति के रूप में उकेरा, जो स्वार्थ को तजकर कर्तव्य और निष्ठा के साथ एकरूप हो जाती है। इस कहानी का प्रत्येक संवाद, प्रत्येक दृश्य और प्रत्येक भाव इतना सजीव है कि वह पाठक को एक अविस्मरणीय भावनात्मक यात्रा पर ले जाता है, जहाँ हर शब्द हृदय की गहराइयों को स्पंदित करता है।

गुलेरी जी केवल एक कथाकार ही नहीं, बल्कि एक विद्वान, शिक्षक और विचारक भी थे। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अंग्रेजी, फारसी और उर्दू जैसी भाषाओं में उनकी गहरी पकड़ थी। इतिहास, पुरातत्त्व और भारतीय संस्कृति पर उनके शोध ने उनकी रचनाओं को एक वैचारिक गहराई प्रदान की। जयपुर और बनारस के शिक्षण संस्थानों में अध्यापन के दौरान उन्होंने अपने विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान का प्रकाश फैलाया, बल्कि उनमें स्वतंत्र चिंतन और सृजनात्मकता का बीज भी बोया। उनकी लेखनी में विद्वता और सहजता का अद्भुत समन्वय था। उनके निबंध, जैसे 'बुद्धि-विलास', उनकी बौद्धिक प्रखरता और व्यंग्यात्मक शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल कहानी कहना नहीं, बल्कि पाठक के मन में गहरे विचारों और संवेदनाओं को जागृत करना है। उनकी भाषा में एक ऐसी स्वच्छंदता थी, जो विद्वानों को प्रेरित करती थी और सामान्य पाठकों के लिए भी सहज थी। गुलेरी जी की रचनाएँ उनकी शब्दों पर अद्भुत पकड़ और विचारों की क्रिस्टल-स्पष्ट गहराई का जीवंत प्रमाण हैं। वे जटिलता के कट्टर विरोधी थे, और उनकी लेखनी में ऐसी मनोहारी सरलता थी, जो पाठक को सहज ही कथा के हृदय तक ले जाती थी, मानो कोई जादुई प्रवाह हो। उनकी कहानियाँ और निबंध केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि मानव जीवन की गहन जटिलताओं, संवेदनाओं और सत्य का दर्पण हैं, जो पाठक के मन को झकझोर देते हैं। 'उसने कहा था' में प्रेम और कर्तव्य के द्वंद्व को उन्होंने जिस संवेदनशीलता और गहराई से उकेरा, वह उस युग के साहित्यिक क्षितिज पर एक क्रांतिकारी मील का पत्थर साबित हुआ। यह कृति न केवल हिंदी साहित्य की पहली आधुनिक कहानी के रूप में अमर है, बल्कि एक ऐसी शक्तिशाली रचना है, जो पाठक को सच्चे प्रेम, बलिदान और मानवीय मूल्यों की गहन खोज में डुबो देती है, उन्हें आत्म-

चिंतन के लिए विवश करते हुए।

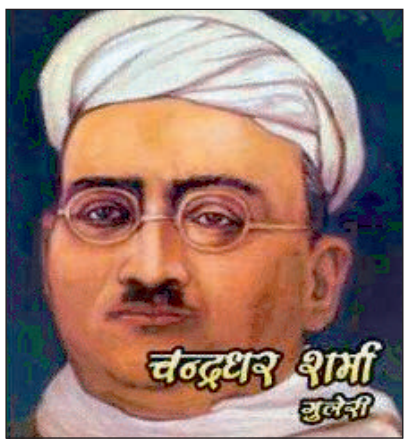

गुलेरी जी का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं की तरह ही गरिमामय और विनम्र था। उनकी विद्वता कभी आडंबर में नहीं बदली। वे ज्ञान को एक साधन मानते थे, जिसका उपयोग समाज को समृद्ध करने के लिए होना चाहिए। उनका जीवन और लेखन दोनों ही बौद्धिक ईमानदारी और संवेदनशीलता का प्रतीक था। आज के दौर में, जब साहित्य तेजी से उपभोक्तावादी संस्कृति का हिस्सा बन रहा है, गुलेरी जी का साहित्य हमें यह सिखाता है कि साहित्य का असली मूल्य उसकी गहराई और संवेदना में है, न कि उसकी मात्रा में। उनकी रचनाएँ हमें यह याद दिलाती हैं कि सच्चा साहित्य वही है, जो समय और स्थान की सीमाओं को पार कर पाठक के हृदय तक पहुँचे।

7 जुलाई को उनकी जयंती मनाना केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा को आत्मसात करने का अवसर है, जो हमें साहित्य की सच्ची शक्ति से जोड़ती है। उनकी रचनाएँ आज भी स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाती हैं, उन पर नाटक और फिल्में बनती हैं, लेकिन उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि वे पाठकों के मन में एक जीवंत भावना के रूप में बस्ती हैं। 'उसने कहा था' का हर पात्र, हर संवाद और हर दृश्य इतना प्रामाणिक है कि वह पाठक को अपने साथ एक भावनात्मक यात्रा पर ले जाता है।

गुलेरी जी का साहित्य हमें यह सिखाता है कि कुछ शब्द, यदि दिल से निकलें, तो वे अनंत काल तक गूँज सकते हैं।

गुलेरी जी का साहित्य हिंदी साहित्य के उस स्वर्ण युग का हिस्सा है, जब लेखक केवल कहानीकार नहीं, बल्कि समाज के मार्गदर्शक भी थे। उनकी रचनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करना, सोच को विस्तार देना और जीवन को सार्थक बनाना है। उनकी जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके साहित्य को न केवल पढ़ेंगे, बल्कि उसकी भावना को अपने जीवन में उतारेंगे। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का साहित्य एक ऐसी ज्योति है, जो कभी मंद नहीं पड़ती। उनकी लेखनी की गूँज आज भी हमारे बीच जीवित है और हमेशा रहेगी। उनकी जयंती पर उन्हें स्मरण करना एक साहित्यप्रेमी के लिए सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है, क्योंकि उनका साहित्य न केवल एक रचना है, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा है, जो हमें मानवता, संवेदना और सृजनात्मकता के पथ पर ले जाती है।

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा एक शाम बाबा रामदेव जी के नाम अलवाल में भजन संध्या कार्यक्रम में लगाया रक्तदान शिविर

परिवहन विशेष न्यूज

समाचार के अनुसार शाखा मंत्री युवा पन्नालाल भाटी ने बताया कि अलवाल हैदराबाद में श्री बाबा रामदेव नवयुवक मित्र मंडल के तत्वाधान में एक शाम श्री बाबा रामदेव जी के नाम विशाल जन्मा जागरण कार्यक्रम में रक्तदान की जागरूकता के लिए रक्तदान शिविर आयोजित किया गया ! लगातार 4 वर्षों से रक्तदान शिविर लगाया जाता रहा है ! इस बार पहली बार बाबा की असीम कृपा से 92 रक्त संग्रह हुआ ! लगभग बहुत से पुरुष एवं महिलाओं ने पहली बार रक्तदान किया ! रक्तवीर, रक्तविरंगनाए रक्तदान करने के लिए कुछ घंटों तक कतार में खड़ी थी !

कार्यक्रम में विशेष अतिथि श्री प्रेम सिंह जी, भजन गायक स्वर्गीय श्री गोपाल जी बजाज के सुपुत्र श्री सुशील जी बजाज भी रक्तदान शिविर में पधारे और कार्यक्रम की सराहना की !

इस विशाल रक्तदान शिविर को सफल बनाने में आंध्रप्रदेश तेलंगाना प्रांत के पूर्व रक्तदान संयोजक युवा मनोज जी जैन, प्राप्ति रक्तदान संयोजक युवा सुशील जी भायल, सिकंदराबाद शाखा के वरिष्ठ युवा नारायण लाल चावड़ा, कैलाश वैष्णव, अशोक चावड़ा, मंगलाराम चौधरी, गौरव जैन, दिनेश पूरी, नरपत भाटी, रामावतार काछवा, रक्तदान सह - संयोजक गौतम भायल का विशेष सहयोग रहा ! सभी रक्तवीर रक्तविरंगनाओ को ब्लड बैंक के द्वारा प्रशस्ति पत्र, उपहार दिया गया !

कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथिगण एवं सभी युवा सदस्यों का शाखा के रक्तदान संयोजक युवा दिनेश गहलोत ने आभार व्यक्त किया !

डेढ़ करोड़ में खरीदा गया गांव

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : सिस्टम की अजीबोगरीब नीति। आखिरकार गजपति जिले के गोसानी ब्लॉक का डॉक्टर बांजेरी गांव डेढ़ करोड़ रुपये में बिक गया। गांव की करीब 47 एकड़ जमीन बिक गई है। यह बात हैरान करने वाली लग सकती है, लेकिन सच है। सरकारी खर्च पर सड़क, स्कूल, पेयजल जैसी तमाम सुविधाएं देने वाला यह गांव अब बिक गया है। बरहामपुर की एक महिला ने इस गांव को करीब डेढ़ करोड़ रुपये में खरीदा है। जिला रजिस्ट्रार कार्यालय में बिक्री की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। साथ ही, इस गांव में सालों से रह रहे सौ से ज्यादा आदिवासी परिवारों के भविष्य पर भी सवाल उठ रहे हैं। स्कूल भवन, आंगनबाड़ी केंद्र और आवास जैसी तमाम सरकारी योजनाओं के बावजूद आरोप है कि इन सभी इलाकों को योजनाबद्ध तरीके से बेचा गया, सिर्फ जमीन दिखाई गई।

पूरे गांव को एम. चंद्रशेखर राव ने बेचा है, जो सरकार की ओर से जमीन के मालिक हैं। गांव और आसपास की 42 एकड़ कृषि भूमि 1 करोड़ 44 लाख रुपये में बेची गई है। स्टांप ड्यूटी के लिए 7 लाख रुपये दिए गए हैं। इसी तरह, एक और 5 एकड़ जमीन 8 लाख 50 हजार रुपये में बेची गई है। कुल 47 एकड़ जमीन बरहमपुर की एक महिला के नाम पर पंजीकृत की गई है। अब जब गांव बिक गया है, तो सवाल उठने लगे हैं कि वहां वर्षों से रह रहे 100 से अधिक आदिवासी परिवार कहां जाएंगे। 500 से अधिक की आबादी वाले गांव के ग्रामीण पीढ़ियों से गांव में खेती और वनोपज संग्रह करके अपना जीवन यापन करते आ रहे हैं। बेतरतीब ढंग से जीवन यापन कर रहे डॉ. बांजेरी के ग्रामीणों ने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन उन्हें ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा। जमीन कारोबारी को सौंपे जाने के बाद पूरे गांव के उजड़ने की संभावना है। बताया जाता है कि जमीन मालिक वहां कोई परियोजना स्थापित करने की संभावना है। हालांकि, यह अभी स्पष्ट नहीं है। हालांकि, जमीन हस्तांतरण के बाद सरकारी संस्थानों सहित सैकड़ों घरों के ध्वस्त होने से कानून-व्यवस्था की स्थिति पैदा होने की आशंका है। मुख्य सवाल यह है कि क्या प्रशासन, जिसने बिक्री के दौरान जमीन का मूल्य चुकाने से इनकार कर दिया था, गांव को उजाड़ने में हस्तक्षेप करेगा। अब जब जमीन हस्तांतरित हो गई है, तो इतने सारे ग्रामीण क्या करेंगे ? इस पर चर्चा चल रही है। उन्हें चिंता है कि अगर ग्रामीणों को स्थानांतरित कर दिया गया तो यह कैसे संभव होगा।

मुट्ठीभर वर्षों में अनंत प्रकाश: गुरु हर किशन सिंह जी का चमत्कारी जीवन

सिख इतिहास की स्वर्णिम गाथा में कुछ नाम ऐसे हैं जो चिरस्थायी प्रेरणा के प्रतीक बन गए हैं। इनमें से एक है सिखों के आठवें गुरु, गुरु हर किशन सिंह जी, जिनका जीवन मात्र आठ वर्ष का रहा, परंतु उनकी शिक्षाएं, करुणा और साहस आज भी लाखों लोगों के लिए मार्गदर्शक हैं। 7 जुलाई 1656 को कीरतपुर साहिब में जन्मे गुरु हर किशन जी सातवें गुरु, गुरु हर राय जी और माता कृष्णा कौर के सुपुत्र थे। उनकी जीवन गाथा केवल एक धार्मिक कथा नहीं, बल्कि मानवता, सेवा और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा का जीवंत उदाहरण है। पाँच वर्ष की आयु में गुरु गद्दी पर आसीन होने वाले इस बाल गुरु ने सिख धर्म के इतिहास में एक अनूठा स्थान बनाया, जिसकी चमक आज भी उतनी ही प्रखर है।

गुरु हर किशन जी का जन्म उस समय हुआ जब सिख पंथ एक ओर आध्यात्मिक ऊँचाइयों को छू रहा था, तो दूसरी ओर मुग़ल शासन की क्रूरता और धार्मिक दमन का सामना कर रहा था। उनके पिता, गुरु हर राय जी, ने सिखों को न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी सशक्त बनाने का कार्य किया था। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गुरु हर किशन जी ने अपने छोटे से जीवन में जो प्रभाव छोड़ा, वह किसी चमत्कार से कम नहीं था। उनकी बाल्यावस्था में ही उनकी आध्यात्मिक परिपक्वता और करुणा ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। जब गुरु हर राय जी ने उन्हें गुरु गद्दी सौंपने का निर्णय लिया, तो यह केवल एक पिता का अपने पुत्र के प्रति स्नेह नहीं था, बल्कि यह उनकी दिव्यता, सहज बुद्धि और सेवा भाव के प्रति विश्वास था। यह निर्णय सिख समुदाय के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था, क्योंकि इतनी कम उम्र में किसी को गुरु गद्दी सौंपना अपने आप में एक असाधारण कदम था।

1661 में, जब गुरु हर किशन जी मात्र पाँच वर्ष के थे, उन्हें गुरु की गद्दी सौंपी गई। यह वह दौर था जब मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब का शासन अपने चरम पर था। औरंगज़ेब, जो सिख धर्म के बढ़ते प्रभाव से चिंतित था, ने गुरु हर किशन जी को दिल्ली बुलवाया। उसका उद्देश्य सिख पंथ को कमज़ोर करना और गुरु तेग बहादुर जी के प्रभाव को सीमित करना था। लेकिन गुरु हर किशन जी ने अपनी बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक शक्ति से औरंगज़ेब की इस चाल को नाकाम कर दिया। उन्होंने दिल्ली पहुँचकर भी बादशाह के दरबार में उपस्थित होने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने अपना समय दिल्ली की जनता की सेवा में समर्पित कर दिया। यह घटना न केवल उनकी दृढ़ता को दर्शाती है, बल्कि यह भी सिद्ध करती है कि सच्चा गुरु सत्ता के सामने कभी नहीं झुकता।

दिल्ली में उस समय चेचक की महामारी ने भयंकर रूप ले लिया था। लोग असहाय थे,

और मृत्यु का भय हर ओर फैला हुआ था। ऐसे कठिन समय में गुरु हर किशन जी ने जो किया, वह उनकी महानता का सबसे बड़ा प्रमाण है। उन्होंने जाति, धर्म और सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर रोगियों की सेवा शुरू की। एक आठ वर्षीय बालक, जिसके कंधों पर गुरु गद्दी का दायित्व था, वह रोगियों के बीच जाकर उन्हें पानी पिलाता, उनकी देखभाल करता और उनकी पीड़ा को कम करने का प्रयास करता था। उनकी करुणा इतनी गहन थी कि लोग कहते थे कि उनके स्पर्श और "बोले सो निहाल" के उद्घोष से रोगियों को राहत मिलती थी। यह सेवा केवल शारीरिक उपचार तक सीमित नहीं थी; यह एक आध्यात्मिक संदेश था कि मानवता ही सच्चा धर्म है। गुरु हर किशन जी का यह सेवा भाव उनकी शिक्षाओं का मूल था। उन्होंने कभी लंबे प्रवचन नहीं दिए, न ही जटिल दार्शनिक उपदेश। उनकी शिक्षाएं उनके कार्यों में थीं। उनकी सौम्य मुस्कान, करुणा भरी निगाहें और सेवा के प्रति समर्पण ही उनका संदेश था। उन्होंने सिखाया कि सच्चा धर्म वह है जो दूसरों के दुख को अपना समझे और उनकी सेवा में स्वयं को समर्पित कर दे। यह उनके जीवन का वह पहलू है जो आज भी हमें प्रेरित करता है।

दुर्भाग्यवश, दूसरों की सेवा में स्वयं को समर्पित करते हुए गुरु हर किशन जी स्वयं चेचक की चपेट में आ गए। उनकी छोटी आयु और कमज़ोर शरीर इस बीमारी का सामना नहीं कर सका। फिर भी, अंतिम क्षणों में भी उन्होंने धैर्य और शांति का परिचय दिया। 30 मार्च 1664 को, मात्र आठ वर्ष की आयु में, उन्होंने दिल्ली में अपनी अंतिम साँस ली। उनकी मृत्यु केवल एक जीवन का अंत नहीं थी; यह एक बलिदान था, जो सिख धर्म के मूल्यों – सत्य, सेवा और त्याग – को अमर कर गया। उनके अंतिम शब्दों में भी उनकी दूरदर्शिता झलकती थी, जब उन्होंने गुरु गद्दी को गुरु तेग बहादुर जी को सौंपने का निर्देश दिया। गुरु हर किशन जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व आयु, अनुभव या शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति, करुणा और सत्य के प्रति निष्ठा से परिभाषित होता है। उन्होंने यह दिखाया कि सबसे कठिन परिस्थितियों में भी मानवता और धर्म के प्रति समर्पण को बनाए रखा जा सकता है। उनकी कहानी केवल सिखों के लिए ही नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है जो सत्य और सेवा के मार्ग पर चलना चाहता है।

आज दिल्ली का बंगला साहिब गुरुद्वारा गुरु हर किशन जी की स्मृति का जीवंत प्रतीक है। यह स्थान न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि सेवा और करुणा का एक ऐसा तीर्थ है, जहाँ लाखों लोग उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हैं। गुरुद्वारे का सरोवर, जहाँ गुरु जी ने रोगियों को जल पिलाया था, आज भी उनकी करुणा की कहानी कहता है। यहाँ आने वाला हर श्रद्धालु उनके जीवन से प्रेरित होकर यह संकल्प लेता है कि वह अपने जीवन में सेवा और सत्य को सर्वोपरि रखेगा। गुरु हर किशन जी का जीवन एक ऐसी ज्योति है जो समय की सीमाओं को पार कर आज भी हमें रोशनी दिखाती है। उनकी कहानी हमें सिखाती है कि सच्चा धर्म वही है जो मानवता की सेवा करता है, और सच्ची शक्ति वही है जो दूसरों के दुख को कम करने में लगाई जाए। उनका छोटा सा जीवन एक महान संदेश है – आयु कोई मायने नहीं रखती, यदि आत्मा में सत्य और करुणा का प्रकाश हो।

उनके जीवन से हमें यह भी प्रेरणा मिलती है कि चुनौतियों के सामने कभी हार नहीं माननी चाहिए। चाहे वह मुग़ल शासक की सत्ता हो या महामारी का प्रकोप, गुरु हर किशन जी ने हर परिस्थिति में धैर्य, साहस और करुणा का परिचय दिया। उनकी यह शिक्षाएं आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जब हम सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। गुरु हर किशन सिंह जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा गुरु वही है जो अपने कार्यों से दूसरों को प्रेरित करता है। उनकी स्मृति में हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलें – सेवा, करुणा और सत्य के मार्ग पर। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनकी जयंती पर हम उनके चरणों में नमन करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि उनकी शिक्षाएं हमें हमेशा प्रेरित करती रहें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: नवाचार की उड़ान या बौद्धिक चोरी का यंत्र?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आज नई रचनात्मकता का माध्यम बन चुकी है, पर यह बहस का विषय है कि क्या यह नवाचार, रचनाकारों की मेहनत की चोरी पर टिका है? अमेरिका में अदालतों ने एआई द्वारा 'सीखी गई' सामग्री को उचित प्रयोग माना, पर रचनाकार असंतुष्ट हैं। भारत में समाचार एजेंसी एएनआई ने ओपनएआई के खिलाफ कॉपीराइट उल्लंघन की शिकायत की है। देश में मौजूदा कानून इस तकनीकी चुनौती के लिए नाकाफी हैं। भारत को चाहिए कि वह अपने बौद्धिक संपदा कानूनों को अद्यतन करे ताकि तकनीकी विकास के साथ रचनात्मक अधिकारों की भी रक्षा हो सके।

- प्रियंका सौरभ

इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी तकनीकी छलांगों में से एक है जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता — यानी ऐसा कंप्यूटर मस्तिष्क जो कहानी से लेकर समाचार रिपोर्ट, चित्र से लेकर कविता, और अदालत के निर्णय से लेकर संवाद तक खुद रच सकता है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस मशीनी रचनात्मकता की नींव क्या किसी और की मेहनत पर टिकी है? क्या यह नई तकनीक रचनाकारों, लेखकों, पत्रकारों, चित्रकारों और संगीतकारों की बनाई सामग्रियों को चुपचाप अपने ज्ञान का हिस्सा बना रही है — बिना उनकी अनुमति, बिना कोई श्रेय दिए?

हाल ही में अमेरिका की दो अदालतों में ऐसे ही मामलों पर निर्णय हुआ। इन फैसलों ने फिलहाल तकनीकी कंपनियों को राहत दी है, पर यह विषय अभी भी पूरी तरह सुलझा नहीं है। इन फैसलों ने पूरी दुनिया में बहस छेड़ दी है — और भारत भी इससे अछूता नहीं है। जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले मॉडल — जैसे कि ओपनएआई का चैटजीपीटी या मेटा का लामा — करोड़ों पुस्तकों, वेबसाइटों, गीतों, समाचारों और चित्रों का अध्ययन करके प्रशिक्षित किए जाते हैं। इनका प्रशिक्षण इस तरह होता है जैसे कोई छात्र पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त करता है, लेकिन यह छात्र उस पुस्तक को पढ़ने से पहले लेखक से न अनुमति लेता है, न ही लेखक को श्रेय या पारिश्रमिक देता है। यही से विवाद आरंभ होता है।

२०२४ में अमेरिका में पहला मामला आया जिसमें कुछ उपन्यासकारों ने कंपनी 'एंथ्रॉपिक' पर आरोप लगाया कि उसने उनकी पुस्तकों का उपयोग अपने कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए किया। लेखकों का कहना था कि यह उनकी बौद्धिक संपदा का उल्लंघन है। परंतु अदालत ने निर्णय दिया कि यह मॉडल जो नई सामग्री उत्पन्न कर रहा है, वह मूल रचना से अलग, नया और परिवर्तित है। इसलिए यह 'उचित प्रयोग' की श्रेणी में आता है और कंपनी को अपराधी नहीं माना जा सकता।

दूसरे मामले में कंपनी मेटा पर साहित्य और पत्रकारिता सामग्री को बिना अनुमति इस्तेमाल करने का आरोप था। अदालत ने माना कि कंपनी ने सचमुच संरक्षित रचनाएं पढ़ी थीं, लेकिन उसका उद्देश्य कुछ नया सीखना और बनाना था, इसलिए इसे भी 'परिवर्तनकारी उपयोग' मानते हुए मेटा को दोषमुक्त कर दिया गया।

इन दोनों फैसलों से एक संदेश यह गया कि न्यायालय फिलहाल तकनीकी नवाचार को प्राथमिकता दे रहे हैं, लेकिन लेखक समुदाय और बौद्धिक श्रमिकों के मन में यह सवाल घर करता जा रहा है कि यदि यह 'उचित प्रयोग' है, तो उनकी मेहनत, मौलिकता और अधिकारों का क्या?

अब दृष्टि भारत की ओर मोड़ते हैं। समाचार एजेंसी एएनआई ने वर्ष २०२४ में ओपनएआई पर आरोप लगाया कि उसके संवाद आधारित मॉडल (जैसे चैटजीपीटी) उनकी समाचारों की भाषा, शैली और विषय-वस्तु की हूबहू नकल कर रहा है। इसके अलावा प्रकाशक संघों ने भी आरोप लगाए कि भारत में कॉपीराइट पंजीकरण की अनदेखी कर इन एआई कंपनियों ने भारतीय सामग्री का व्यावसायिक दोहन किया।

ओपनएआई का पक्ष यह था कि वह भारत में न तो अपने सर्वर चलाता है, न ही उसका कोई स्थायी कार्यालय है। उसका तर्क था कि उसकी तकनीक कुछ नया, परिवर्तित और जनहित में उपयोगी सामग्री तैयार करती है — और यह बौद्धिक चोरी नहीं कहलाती। यह मामला अब दिल्ली उच्च न्यायालय में विचाराधीन है, और इसकी सुनवाई जुलाई के पहले सप्ताह में निर्धारित है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में अब यह बहस न्यायिक गलियारों में पहुंच चुकी है।

प्रश्न यह है कि क्या भारत का मौजूदा बौद्धिक संपदा कानून इस नई तकनीकी चुनौती के लिए तैयार है? 1957 में बनाए गए कॉपीराइट अधिनियम में 'उचित प्रयोग' की धारणा है, पर उसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे मामलों की स्पष्ट व्याख्या नहीं है। ना ही भारत में ऐसा तंत्र है जो यह जांच सके कि कोई एआई मॉडल प्रशिक्षण के लिए किन सामग्रियों का उपयोग कर रहा है और वे सामग्री कॉपीराइट के अंतर्गत आती हैं या नहीं।

आज लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार, फोटोग्राफर और पत्रकार यह महसूस कर रहे हैं कि उनका सृजन कार्य मशीनों के पेट में डाला जा रहा है, और बदले में उन्हें न कोई श्रेय मिल रहा है, न ही पारिश्रमिक। यह न केवल कानूनी बल्कि नैतिक चिंता का विषय है।

इस विषय पर बहस यह नहीं है कि तकनीक को रोका जाए। नवाचार और प्रौद्योगिकी की प्रगति आवश्यक है, लेकिन वह प्रगति ऐसी न हो जो मानवीय रचनात्मकता को निगल जाए। अगर कोई लेखक दस वर्षों की मेहनत से एक उपन्यास रचता है, और कोई मशीन दो सेकंड में उसकी शैली की नकल करके नया 'उत्पाद' बनाती है, तो यह न तो न्यायसंगत है, न ही सम्मानजनक।

न्यायालयों की जिम्मेदारी अब केवल यह नहीं रह गई कि वे कंपनियों और व्यक्तियों के बीच विवाद सुलझाएं, बल्कि उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य का तकनीकी विकास समान रूप से सभी के हित में हो। केवल पूंजी और तकनीक के सहारे अगर किसी का बौद्धिक श्रम मुफ्त में हड़पा जा रहा है, तो वह लोकतांत्रिक और नैतिक मूल्यों का उल्लंघन है।

भारत को चाहिए कि वह अपने कॉपीराइट कानूनों की पुनर्रचना करे — विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग के अनुरूप। ऐसी व्यवस्था बने जिसमें रचनाकारों की रचनाओं को यदि तकनीक द्वारा उपयोग किया जा रहा है तो उन्हें उसका पारिश्रमिक मिले, उनके नाम का उल्लेख हो, और उनकी अनुमति अनिवार्य हो।

यह केवल न्याय की बात नहीं है, यह साहित्य, संस्कृति और रचनात्मकता की रक्षा की बात है। यदि हम अपने समय के रचनाकारों की अनदेखी करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ तकनीक तो पाएंगी — पर संवेदना नहीं, आत्मा नहीं।

मशीनों को दी उड़ान, पर कलम से छीना आसमान,
बिना श्रेय के ज्ञान अगर, तो कैसा विज्ञान?

सावन केंद्रित पाँच साहित्यिक रचनाएँ

1 "सावन की पहली बूँद"

बादल की पहली दस्तक, मन के आँगन आई,
भीग गया हर कोना, हर साँस मुस्काई।
पीपल की टहनी बोली, झूले की है बारी,
छत की बूँदों ने फिर, गाई प्रेम पिचकारी।

मिट्टी ने भी मुँह खोला, सौंधी-सौंधी भाषा,
मन में उठे भावों की, भीनी-भीनी आशा।
चुनरी उड़ती दिशा-दिशा, लहराए सावन,
पलकों पर ठहरी जैसे, बरखा में जीवन।

बिरहा के गीतों में, घुलता राग अधूरा,
झोपड़ी की दीवारें भी, रोतीं तन्हा-सा सूरत।
बच्चों की हँसी बिखरे, कीचड़ के संग संग,
भीग रहा हर रिश्ता, जैसे कोई उमंग।

सावन की पहली बूँदें, दिल तक उतरें आज,
हर किसी की आँखों में, बसी कोई आवाज़।
वो जो गया है दूर कहीं, उसे लिख संदेस,
बरखा आई फिर वही, लेकर तेरा भेस॥

2.झूले वाले दिन आए

झूले वाले दिन आए, पायल की छनकार,
घूँघट में लजाए सावन, रंग भरे हज़ार।
काजल भीगे नैना, मेंहदी रचती हाथ,
सखियाँ गाएं गीत वो, जिसकी हो तलाश।

पलाश और आम की, डालें हुई जवाँ,
झूले संग लहराए, मन की हर दुआ।
बरखा की चूनर ओढ़े, धरती की ये माँ,
हरियाली की चिड़ियाँ, लेकर आई हवा।

पथिक रुके हैं थमकर, सुनने बादल गीत,
पगली नदी भी झूमें, बाँधें जल की रीत।
बंसी फिर से बोले, कान्हा पुकारे राधा,
मन मंदिर में बजे है, प्रेम भरे प्रभादा।

झूले वाले दिन आए, हर मन रंग जाए,
चुनरी सी उड़ती खुशियाँ, कोई रोक न पाए।
मौसम का ये तावीज, बाँधे रिश्तों को पास,
सावन जैसे हर जन को, दे प्रेम का प्रकाश।

3. अब के सावन में

अब के सावन में
बूँदें सिर्फ़ पानी नहीं रहीं,
वो सवाल बनकर गिरती हैं
छतों, छायाओं और चेतना पर।

अब के सावन में
न कोई प्रेम पत्र भीगा,
न कोई हथेली मेंहदी से लिपटी,
बस मोबाइल स्क्रीन पर टपकी बारिश की रील।

अब के सावन में
कविताएं भीगने से डरती हैं,
काग़ज़ गल जाए तो?
या भाव उड़ जाए तो?

पर फिर भी,
जब एक बूँद चुपचाप
मेरी खिड़की पर टिकती है,
मैं जानती हूँ—
भीतर का सावन अब भी जीवित है।

4. सावन की सिसकी

भीग गया मन फिर चला, तेरी यादों की ओर,
सावन ने फिर छेड़ दिया, वो भीगा सा शोर।
टपक रही हर साँझ में, कुछ अधूरी बात,
छत पर बैठी पाती पढ़े, भीगी-भीगी रात।

झूला झूले याद में, पीपल की वह छाँव,
तेरे संग सावन जिया, अब लगता बेजान।
बूँद-बूँद में नाम तेरा, भीगा पत्र पुराना,
तेरे बिना हर मौसम में, खालीपन का गाना।

चाय की प्याली अकेली, खिड़की की तन्हाई,
भीतर गूंजे सावन, बाहर बारिश आई।
भेज रहा हूँ हवा से, फिर इक संदेश,
तेरा इंतजार अब भी है, सावन का ये वेश॥

5. सावन बोल पड़ा

सावन बोल पड़ा —
मैं वो साज़ हूँ, जो मन को छूता है।
मैं वो गीत हूँ, जो बिन बोले गूंजता है।
मैं भीगते बालकों की हँसी हूँ,
और चुपचाप रोते खेतों की तृप्ति भी॥

सावन फिर बोला —
मुझमें पनपता है प्रेम,
और मिटती है दूरी।
मैं झोपड़ी का गीत हूँ,
मैं महलों की चुप्पी भी॥

सावन बोला —
मेरे संग बहती हैं स्मृतियाँ,
और उगती हैं उम्मीदें।
मैं आज भी वही हूँ —
बस तुमने देखना छोड़ दिया है मुझे॥

--- डॉ सत्यवान सौरभ

क्या प्री-मैच्योर डिलीवरी के वायु प्रदूषण जिम्मेदार है ?

आज भारत विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ ही विकास और तकनीक के क्षेत्र में लगातार प्रगति पथ पर अग्रसर है, यह काबिले-तारीफ है, लेकिन भारत के जनसांख्यिकीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019-21 के एक बड़े खुलासे के मुताबिक देश में 13 प्रतिशत बच्चों का जन्म समयपूर्व हो रहा है, जबकि 17 प्रतिशत बच्चों का जन्म के समय वजन मानक से कम होता है। सर्वे के अनुसार वायु प्रदूषण भी जन्म से जुड़े प्रतिकूल प्रभावों का कारण बन रहा है, यह बहुत ही चिंताजनक बात है। आज की इस दुनिया में न केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है। विकसित देशों ने तो पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से अपना हाथ खींच लिया है, लेकिन इसका खामियाजा कहीं न कहीं विकासशील देशों को भुगतना पड़ रहा है। आज विकासशील देश जीवाश्म ईंधन और बायोमास का उपयोग कर रहे हैं और यह कहीं न कहीं हमारे वातावरण, हमारे पर्यावरण, हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ ही मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ रहे हैं। मानव स्वास्थ्य की यहां यदि हम बात करें तो हमारे यहां गर्भ में ही बच्चों की सेहत बिगड़ रही है। बच्चे कम वजन के तथा समय से पहले पैदा हो रहे हैं।

बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि आइआइटी यानी कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, मुंबई स्थित अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान तथा ब्रिटेन और आयरलैंड के संस्थानों के शोधकर्ताओं ने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 और दूर संवेदी डेटा का अध्ययन करके गर्भावस्था के दौरान वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से प्रसव परिणामों पर प्रभावों का विश्लेषण किया है। इसमें यह पाया गया है कि गर्भावस्था के दौरान पीएम 2.5 (सूक्ष्म कण प्रदूषण) के अधिक संपर्क में रहने से जन्म के समय कम वजन वाले बच्चे पैदा होने की आशंका 40 प्रतिशत तथा समय से पहले प्रसव की आशंका 70 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। इसमें जलवायु परिस्थितियों जैसे वर्षा और तापमान, का प्रतिकूल जन्म परिणामों से अधिक गहरा संबंध पाया गया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वातावरण में मौजूद 2.5 माइक्रोन से भी छोटे व्यास वाले सूक्ष्म कण

पदार्थ को पीएम 2.5 कहा जाता है और इन्हें सबसे हानिकारक वायु प्रदूषक माना जाता है। वातावरण में इनकी मौजूदगी के लिए जीवाश्म ईंधन और बायोमास के दहन को प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है। रिसर्चर्स के अनुसार ऊपरी गंगा क्षेत्र में पीएम 2.5 प्रदूषकों का स्तर अधिक है, जिसमें उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्य शामिल हैं।देश के दक्षिणी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में इसका स्तर(पीएम प्रदूषकों का) कम है। स्वास्थ्य पत्रिका 'पीएलओएस ग्लोबल पब्लिक हेल्थ' में प्रकाशित स्टडी(अध्ययन) के मुताबिक भारत के उत्तरी जिलों में रहने वाले बच्चे वातावरणीय वायु प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। स्टडी के अनुसार समय से पहले जन्म के अधिक मामले उत्तरी राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश (39 प्रतिशत), उत्तराखंड (27 प्रतिशत), राजस्थान (18 प्रतिशत) और दिल्ली (17 प्रतिशत) में आए, जबकि मिजोरम, मणिपुर और त्रिपुरा(पूर्वोत्तर भारत) में समय पूर्व बच्चों के जन्म के सबसे कम मामले सामने आए हैं। वहीं दूसरी ओर पंजाब में जन्म के समय मानक से कम वजनी बच्चें पैदा होने की दर सबसे अधिक 22 प्रतिशत पाई गई। इसके बाद दिल्ली, दादरा और नगर हवेली, मध्य प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश का स्थान आता है। हालांकि, जैसा कि ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि पूर्वोत्तर भारत के राज्यों का प्रदर्शन कहीं बेहतर है। पाठकों को बताता चलूं कि यह स्टडी राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण और कंप्यूटर आधारित भौगोलिक आकलन से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग कर की गई है।इतना ही नहीं, गर्भ में वायु प्रदूषण के संपर्क और जन्म परिणामों के बीच संबंध को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विश्लेषण और स्थानिक मॉडलों का उपयोग भी इसमें किया गया है। वास्तव में यह बहुत ही चिंताजनक है कि

पीएम 2.5 के स्तर में प्रत्येक 10 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की वृद्धि से कम वजन वाले बच्चों के जन्म पैदा होने की आशंका पांच प्रतिशत और समय से पहले जन्म की आशंका 12 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जहां वायु प्रदूषण की अधिकता है, वहां बच्चों की समयपूर्व जन्म की दर बढ़ रही है, तथा जहां पर प्रदूषण कम है, वहां स्थिति बेहतर है। रिसर्च से पता चलता है कि वायु प्रदूषण जन्म से पूर्व और जन्म के उपरांत जटिलताओं का कारण बन रहा है। शायद यही कारण है कि पिछले कुछ सालों से महिलाओं में स्वाभाविक प्रसव बहुत कम होता है तथा महिलाओं में प्रसव के दौरान आने वाली कठिनाइयों से बचने के लिए सिजेरियन ऑप्रेशन कर दिए जाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का असर न केवल भारत पर अपितु संपूर्ण विश्व पर पड़ रहा है। अत्याधिक गर्मी, असीमित वर्षा(अतिवृष्टि) भी बच्चों की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। आज हमारे देश में विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में वायु प्रदूषण कहीं अधिक है। इसलिए नवजातों की सेहत पर बड़ा खतरा मंडरा है। स्पष्ट है कि यह समस्या केवल चिकित्सा से ही हल नहीं होगी। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को खत्म करके ही हम बच्चों के सामान्य जन्म की उम्मीद कर सकते हैं।इस क्रम में शोधकर्ताओं ने देश में विशेष रूप से उत्तरी राज्यों में राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम को तेज करने की मांग की है। गौरतलब है कि 2019 में शुरू किया गया यह कार्यक्रम भारत में वायु गुणवत्ता को सुधारने के लिए पीएम प्रदूषकों के स्तरों को नियंत्रित करने पर केंद्रित है। अंत में, यही कहूंगा कि आज ग्लोबल वार्मिंग के साथ ही जलवायु परिवर्तन पर हमें समय रहते ध्यान देना होगा और विभिन्न मानवीय गतिविधियों (अंधाधुंध विकास-यथा औधोगिकीकरण, शहरीकरण) को संतुलित तरीके से आगे बढ़ाना होगा। पर्यावरण है तभी जीवों का अस्तित्व है, पर्यावरण नहीं तो कुछ भी नहीं है। आज देश में जलवायु अनूकूलन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किए जाने की आवश्यकता महत्ती है। हमें धरती पर जल प्रबंधन व इसके संरक्षण पर ध्यान देना होगा। जीवाश्म ईंधन के विकल्प ढूढ़कर आगे बढ़ना होगा।वायु गुणवत्ता नियंत्रण को भी स्वास्थ्य नीति का अहम्हिस्सा बनाना होगा।वायु प्रदूषण कम करने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं, जिनमें व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास और सामूहिक पहल शामिल हैं। मुख्य रूप से, स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाना, और अधिक पेड़ लगाना(वृक्षारोपण करना), पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक जैसे उपाय वायु प्रदूषण को कम करने में मदद कर सकते हैं। हमें औधोगिक उत्सर्जन को कम करना होगा। साथ ही साथ, शहरी नियोजन में सुधार, प्रदूषण नीतियों को पूरी ईमानदारी से लागू करना, तथा प्रदूषण के ख़तरों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर ही प्री-मैच्योर डिलीवरी और कम वजन के नवजात की समस्या से निपटा जा सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

झारखंड में भारी बारिश, आसमानी बिजली से पांच की मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

जमशेदपुर, झारखंड के अनेकों जिलों में वारिस जारी है विगत 24 घंटे के दौरान राज्यभर में औसत 13.2 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। वहीं शनिवार और रविवार को विभिन्न जिलों में वज्रपात से एक बच्ची समेत पांच लोगों की मौत हो गई, वहीं तीन लोग घायल हैं। रांची समेत झारखंड के 12 जिलों में अगले 24 घंटे के दौरान कहीं कहीं भारी बारिश होने का अलर्ट जारी किया गया है। इन जिलों में वज्रपात होने की चेतावनी भी जारी की गई है। मंगलवार से बारिश की रफ्तार में दो दिन के लिए कमी आएगी लेकिन इसके बाद फिर मानसून जोर पकड़ेगा। मौसम विज्ञानियों की मानें तो राज्य के उपर बना सिस्टम अब कमजोर हो गया है। आठ जून से मौसम साफ रह सकती है। लेकिन दस जुलाई से मानसून फिर सक्रिय होगा और रांची समेत पूरे राज्य में बारिश होगी। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार को राज्य के गढ़वा, पलामू, लातेहार, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, खूंटी, रांची, सरायकेला, पश्चिमी और पूर्वी सिंहभूम और बोकारो जिला में भारी बारिश हो सकती है।

प्रीति बिलुंग का चयन झारखंड की हाकी टीम मे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। देश को राष्ट्रीय स्तर का हांकी खिलाड़ी देने वाले झारखंड का गुमला, रांची तथा उसे सटे ओडिशा का सुन्दरगढ़ नाम कोन नहीं जानता। उसी गुमला जिला अंतर्गत आवासीय बालिका हॉकी प्रशिक्षण केंद्र, उसलाइन कॉन्वेंट विद्यालय की प्रशिक्षणरत खिलाड़ी प्रीति बिलुंग का चयन झारखंड टीम में हुआ है। प्रीति अब 15वीं हॉकी इंडिया सब-जूनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप में झारखंड का प्रतिनिधित्व करेंगी। यह प्रतियोगिता 3 से 13 जुलाई, 2025 तक रांची में आयोजित की जा रही है। प्रीति बिलुंग, वर्ष 2022 से आवासीय बालिका हॉकी प्रशिक्षण केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। उनका मूल निवास सिमडेगा जिले में है। पूरे झारखंड में आयोजित ओपन ट्रायल में 100 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए थे, जिसमें से 31 खिलाड़ियों का चयन प्रशिक्षण शिविर के लिए किया गया। 10 दिवसीय कैंप के बाद 18 खिलाड़ियों की अंतिम सूची में प्रीति का नाम सम्मिलित किया गया।

मुख्यमंत्री बस सेवा को लेकर निजी बस मालिक संघ चिंतित

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ओडिशा में मुख्यमंत्री बस सेवा शुरू होने के बाद निजी बस मालिकों का संगठन गहरे संकट में है। राज्य सरकार की इस नई योजना, जिसे पहले की लक्ष्मी बस योजना का विस्तार बताया जा रहा है, ने निजी बस मालिकों को भारी वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ रहा है।इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में निजी बस सेवा लगभग बंद होने का आरोप भी लगा है। निजी बस मालिकों के संगठन के सदस्यों ने कहा कि मुख्यमंत्री बस सेवा शुरू होने के बाद उनका कारोबार बुरी तरह प्रभावित हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी बसों से यात्री कम किराए में सुविधाजनक सेवा मिलने के कारण आकर्षित होते हैं। नतीजतन, यात्रियों की कमी के कारण निजी बसें बंद होने को मजबूर हैं, जिससे बस मालिक बड़ी आर्थिक तंगी में फंस गए हैं। पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के कार्यकाल में शुरू की गई लक्ष्मी बस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी को मजबूत करना था। इस योजना के तहत सुबरनपुर, कटक, झारसुगुड़ा, कंधमाल और संबलपुर जैसे जिलों की 700 से अधिक पंचायतों में 105

बसों ने सेवाएं दी, जिससे 44 लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए। मुख्यमंत्री बस सेवा इसी योजना का हिस्सा मानी जाती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में किफायती परिवहन सुविधा प्रदान करती है। हालांकि, इस योजना ने निजी बस मालिकों के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। एसोसिएशन के एक प्रतिनिधि ने कहा, "हमारी बसें खाली पड़ी हैं क्योंकि सरकारी बसें कम किराए पर चल रही हैं। हम ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाएं जारी रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन कई बस मालिकों ने वित्तीय घाटे के कारण सेवाएं बंद कर दी हैं।" इसके अलावा, कई निजी बसें पार्किंग स्थलों में फंसी हुई हैं और कुछ मामलों में आग से संबंधित नुकसान भी हुआ है, जैसा कि बालीगुडा में एक निजी बस को जलाने की घटना में देखा गया था।

सरकारी एम्बुलेंस सेवा की रेटिंग की जाएगी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य सरकार द्वारा तैनात की गई एंबुलेंस किस तरह से मरीजों को सेवाएं दे रही हैं, इसका ऑडिट कराएगी। एंबुलेंस को मरीजों तक पहुंचने में कितना समय लगता है, मरीजों को अस्पताल पहुंचने में कितना समय लगता है, एंबुलेंस में सभी जरूरी मेडिकल सामान उपलब्ध हैं या नहीं, स्टाफ का व्यवहार कैसा है, मरीजों की संतुष्टि सुनिश्चित है या नहीं, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी मौजूद हैं या नहीं।सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही 108, 104 एंबुलेंस, जननी एक्सप्रेस और बोट एंबुलेंस लक्ष्य पूरा करने में कितनी सफल हो रही हैं, इसका पता लगाने के लिए किसी अनुभवी और पेशेवर संस्था से सर्वे कराया जाएगा। बड़ी बात यह है कि इसमें भौगोलिक स्थिति के लिहाज से एंबुलेंस की उपलब्धता को भी शामिल किया गया है। इसके तहत एंबुलेंस सेवा से वंचित क्षेत्रों और एंबुलेंस होने पर भी जिन क्षेत्रों तक नहीं पहुंचा जा सकता, उनका डाटा एकत्र किया जाएगा। इसमें यह शामिल होगा कि

कोई एंबुलेंस कितने दिन मरम्मत के लिए बंद रहती है, कितनी एंबुलेंस चलते समय यांत्रिक समस्याओं के कारण बंद रहती हैं। यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि एंबुलेंस सेवा गंभीर रूप से बीमार मरीजों की जान बचाने में कितनी सफल हो रही है। इस रिपोर्ट के आधार पर जरूरत के हिसाब से नई या अधिक एंबुलेंस सेवाएं शुरू की जाएंगी और व्यवस्था में सुधार किया जाएगा। इस संबंध में एनएचएम की ओर से टेंडर आमंत्रित किए गए हैं। गौरतलब है कि कल गंजम जिले के खल्लीकोट घाटी में 108 एंबुलेंस खराब हो जाने से खल्लीकोट थाना अंतर्गत बिरीपुरा गांव के शंकर महाराणा की मौत हो गई थी। स्वास्थ्य विभाग राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की सीधी निगरानी में यह आकलन करेगा। उम्मीद है कि इस तरह के सर्वेक्षण से कुछ बड़े बदलाव आएंगे क्योंकि राज्य के विभिन्न जिलों में सरकारी एम्बुलेंस सेवा को लेकर कई शिकायतें हैं। भारत सरकार और ओडिशा सरकार के संयुक्त प्रयास से राज्य मंत्रिमंडल ने 2023-24 से 2027-28 तक एम्बुलेंस सेवा जारी रखने के लिए 2388.45 करोड़ रुपये के परिव्यय को मंजूरी दी थी। आकलन के दौरान मरीज और उसके परिजनों, एंबुलेंस स्टाफ, कॉल सेंटर स्टाफ, सुपरवाइजर, डॉक्टर और फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ता, बीडीओ, सीडीएमओ की राय ली जाएगी। एक बार में 3/4 जिलों का समूह बनाकर आकलन किया जाएगा। संगठन यह कार्य शुरू होने के 45 दिन के भीतर पूरा कर लेगा और अगले 10 दिन के भीतर सरकार को रिपोर्ट सौंप देगा।

एससी समाज की बुलंद आवाज रजत कल्सन की आवाज दबाने की सरकारी कोशिश की जा रही है, अब तो जागना होगा नहीं तो बहुत देर हो जाएगी

रजत कल्सन

जब कोई भी दलित समाज के खिलाफ हो रहे अत्याचार की आवाज बुलंद करता है तो वह व्यक्ति सरकार और पुलिस की आंखों की किरकिरी बन जाता है जिसके बाद उसका उत्पीड़न शुरू कर दिया जाता है तथा उसके लिए हालात ऐसे पैदा कर दिए जाते हैं कि अगर उसे व उसके परिवार के लोगों को जिंदा रहना है तो इस बारे में सोचना भी छोड़ दे। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं इनके आगे सरकार के बेकार हो जाते हैं इसी तरह का एक नाम है,

'रजत कल्सन !!

मिर्चपुर कांड में किसी को यकीन नहीं था कि इस मामले में जाति विशेष के 33 लोगों को सजा हो जाएंगे तथा उनमे से 12 लोगों को उम्र कैद की सजा सुनाई जाएगी तथा जातिवादी गुंडो की मदद करने वाले थानेदार को भी जेल की हवा खानी पड़ेगी ।

हरियाणा सरकार, हरियाणा पुलिस तथा हरियाणा की कुख्यात जातिवादी गुंडों की कोम व उनकी खाप पंचायतों को उस समय कतई भी इल्म नहीं था कि दलित समाज का एक 32 साल का वकील रजत कल्सन हरियाणा की सबसे संपन्न कोम, सरकार तथा पुलिस से सीधी लड़ाई लड़कर वाल्मीकि बस्ती में आग लगने वाले तथा वाल्मीकि पिता पुत्री को जिंदा जलाने वाले आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुँचवा देगा।

रजत कल्सन के उत्पीड़न की कहानी मिर्चपुर कांड से शुरू होती है।

☞ मिर्चपुर कांड के दौरान मुकदमे की सुनवाई कर रही दिल्ली की रोहिणी कोर्ट की जज कामिनी लॉ के मिर्चपुर के दौरे के वक्त जातिवादी गुंडों द्वारा रजत कल्सन पर हमला किया गया जिसमें एक तत्कालीन सरकारी अधिकारी की वजह से उनकी जान बची।

☞ मिर्चपुर कांड के दौरान उनके हांसी मॉडल टाउन स्थित कार्यालय में उनकी केस की फाइलों को चोरी कर नष्ट कर दिया गया, शिकायत करने पर पुलिस ने कार्रवाई करने की बजाय रजत कल्सन पर ही झूठा मुकदमा दर्ज कर दिया।

☞ मिर्चपुर कांड से जुड़े कुछ वकीलों ने 2011 में अधिवक्ता रजत कल्सन के बुजुर्ग पिता जिनका हाल में ही ब्रेन हेमरेज का ऑपरेशन हुआ था उनके ऊपर अधिवक्ता रजत कल्सन को मिर्चपुर केस से हटाने का दबाव बनाया गया तथा उनके मना करने पर उनके ऊपर हमला किया गया, इसके उपरांत अधिवक्ता रजत कल्सन के पिता की शिकायत पर कार्यवाही करने की बजाय पुलिस ने जाति विशेष के वकीलों के की शिकायत पर अधिवक्ता रजत कल्सन , उनके वकील पिता व भाई, दो स्थानीय पत्रकारों, उनके जूनियर वकीलों, उनके दो गनमैन के खिलाफ हत्या प्रयास का मुकदमा दर्ज कर दिया गया तथा जिसके चलते इन सभी के पीछे पुलिस की टीमें लगा ढ़ी गयी तथा अधिवक्ता रजत कल्सन के परिजनों तथा साथियों को 3 महीने भूमिगत रहने के बाद पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट से अग्रिम जमानत मिली।

☞ मिर्चपुर कांड में दलित समाज की पैरवी करने की वजह से पूरे हरियाणा की जाति विशेष की खाप पंचायतो ने पूरे हरियाणा में के राष्ट्रीय राजमार्गों तथा रेलवे ट्रैक को जाम कर दिया था तथा उनकी मांग थी कि अधिवक्ता रजत कल्सन के खिलाफ राजद्रोह का मुकदमा दर्ज करके उसे जेल में डाला जाए, क्योंकि उसने हरियाणा का भाईचारा खराब किया है।

☞ मिर्चपुर कांड में दलितों की पैरवी करने से नाराज जाति विशेष के लोगों ने 2014 में सिरसा में एक विवाह कार्यक्रम के दौरान अधिवक्ता रजत कल्सन पर गुंडो से जानलेवा हमला कराया गया तथा तलवारों से उनके सिर पर वार किए गए। इस दौरान अधिवक्ता रजत कल्सन के साथ हरियाणा पुलिस के दो गनमैन भी मौजूद थे जो वहां पर मूकदर्शक बन खड़े रहे।

☞ हरियाणा की कई खाप पंचायतों ने अधिवक्ता रजत कल्सन का वकालत का लाइसेंस कैंसिल कराने के लिए पंजाब व हरियाणा बार काउंसिल को कई बार पत्र लिखें ताकि बतौर वकील रजत कल्सन समाज की पैरवी न कर सके।

☞ अधिवक्ता रजत कल्सन ने दलित समाज के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करने के बारे में पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, फिल्म अभिनेत्री युविका चौधरी तथा तारक मेहता का उल्टा चश्मा की अभिनेत्री मुनमुन दत्ता उर्फ बबीता जी तथा योग गुरु बाबा रामदेव के खिलाफ मुकदमें दर्ज कराने का काम किया जिसके चलते इनमें से कुछ सेलिब्रिटीज की गिरफ्तारी हुई तथा बाकी सेलिब्रिटीज के खिलाफ अदालत में मुकदमे विचाराधीन है तथा इन सेलिब्रिटीज के समर्थक सोशल मीडिया पर रजत कल्सन को जान से मारने की धमकी देते रहते हैं तथा बाबा रामदेव के समर्थक ने तो पत्र लिखकर रजत कल्सन को जान से मारने की धमकी दी थी।

☞ भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में 2 सितंबर 2017 को हिसार के सेशन जजों की गांव भाटला के दौरे के वक्त जातिवादी गुंडो की 300 से अधिक की भीड़ ने जजों व पुलिस के सामने रजत कल्सन पर हमला किया तथा उनकी मोब लिंचिंग की कोशिश की । जिसके चलते बड़ी मुश्किल से रजत कल्सन की एक ईमानदार पुलिस अधिकारी ने जान बचाई तथा वहां से निकाला।

☞ भाटला में जजों की टीम के सामने हमला कर रजत कल्सन की मोब्लिंचिंग करने के मसले पर अधिवक्ता रजत कलसन ने जान बचाकर भागते समय व्हाट्सएप्प पर पुलिस अधीक्षक हांसी को एक शिकायत लिखकर व्हाट्सएप्प किया परंतु पुलिस ने रजत कल्सन की शिकायत पर कार्रवाई करने की बजाय अधिवक्ता रजत कल्सन तथा गांव भाटला के सामाजिक बहिष्कार के योद्धाओं के खिलाफ राजद्रोह व अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया जिसके चलते अधिवक्ता रजत कल्सन व भाटला के पीड़तों को तीन महीने भूमिगत रहना पड़ा तथा पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट से उन सब की अग्रिम जमानत हुई।

☞ भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में अधिवक्ता रजत कल्सन की कॉल्स को गैरकानूनी तरीके से इंटरसेप्ट करके उनके खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज किए गए ।

यहां तक की सरकार ने अब भी रजत कल्सन के व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा अन्य सोशल मीडिया को भी सर्विलांस करने का काम किया है जिससे उनकी प्राइवेसी बिल्कुल खत्म की गई जो कि उनके संवैधानिक का अधिकारों का हनन है।

☞ दलित अत्याचार के मामलों की पैरवी करने के चलते रजत कल्सन के खिलाफ हरियाणा सरकार ने जींद, हिसार, हांसी व अन्य जगहों पर एक दर्जन से अधिक आपराधिक मुकदमे दर्ज किये है जिनमे हत्या प्रयास व राजद्रोह तक के मुकदमे शामिल हैं।

☞ हरियाणा सरकार ने अधिवक्ता रजत कल्सन को हरियाणा पुलिस मुख्यालय में स्थित गोपनीय रिकॉर्ड में आतंकवादियों के कॉलम में तृतीय श्रेणी का अपराधी घोषित किया है, तृतीय श्रेणी का अपराधी वह होता है जिसके ऊपर हत्या, डकैती ,रेप व आतंकवाद जैसे आरोपो मुकदमे दर्ज होते हैं ।

☞ अधिवक्ता रजत कल्सन को हिसार तथा जींद की जेल में कत्ल करने की साजिश रची जा रही है जिसके बारे में अधिवक्ता रजत कल्सन के कुछ क्लाइंट जो जेल से जमानत पर बाहर आए हैं उनके द्वारा पुख्ता सूचना दी गई है ,यही नहीं इस बारे में कुछ ऑडियो रिकॉर्डिंग्स भी है जिसमें अधिवक्ता रजत कल्सन को मारने की साजिश रची जा रही है। इस बारे में रजत कल्सन ने बार-बार पुलिस से सुरक्षा मांगी है, लेकिन हरियाणा पुलिस जानबूझकर पुलिस को सुरक्षा प्रदान नहीं कर रही है क्योंकि हरियाणा पुलिस मे सीआईडी व सुरक्षा शाखा में वही लोग तैनात हैं जो जातिवादी गुंडो के समर्थक हैं।

☞ भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित टीम की जांच के दौरान 5 जून को अधिवक्ता रजत कल्सन को सामाजिक बहिष्कार के आरोपियों द्वारा जिंदा जलाने की धमकी दी गई, जिस बारे में शिकायत करने पर भी पुलिस ने उनकी शिकायत पर कोई मुकदमा तक दर्ज नहीं किया।

☞ भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में दलित पीड़ित मीर सिंह को भी जान से मारने की धमकी दी गई जिस बारे भी पुलिस में शिकायत दी गई थी लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं कि इसके उपरांत भाटला सामाजिक बहिष्कार के कुछ पीड़ितों ने गांव से पलायन कर दिया ,जब अधिवक्ता रजत कलसन ने ये बातें अपने सोशल मीडिया पर डाली तो हरियाणा सरकार व हरियाणा पुलिस ने गैरकानूनी तरीके से अधिवक्ता रजत कल्सन के संविधान में प्रदत्त आर्टिकल 19 के तहत अधिकार को जब्त करते हुए उनके दोनों फेसबुक अकाउंट बंद कर दिए जो इस बारे फेसबुक ने नोटिफिकेशन भेज कर रजत कल्सन को सूचित किया था कि हरियाणा सरकार के कानूनी विभाग की तरफ से शिकायत मिलने पर आपका सोशल मीडिया अकाउंट बंद किया जा रहा है।

☞ भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में पुलिस की दलित विरोधी कार्यप्रणाली के खिलाफ अधिवक्ता रजत कलसन ने 20 जून को हांसी लघु सचिवालय में एक प्रदर्शन रखा था, जो इस प्रदर्शन को रोकने के लिए पहले तो हांसी पुलिस ने 19 जून को रजत कलसन के घर पर रेड की तथा रजत कल्सन के पीछे पुलिस लगा दी गई, जिसके बाद अधिवक्ता रजत कलसन ने किसी तरह से 20 तारीख के प्रदर्शन को संबोधित किया। इसके बाद 21 तारीख को हांसी पुलिस की 6 गाड़ियों ने अधिवक्ता रजत कल्सन के घर पर रेड की तथा करीबन 35-40 पुलिस कर्मियों में अधिवक्ता रजत कल्सन के घर को घेर लिया तथा हांसी महिला थाना की एसएचओ, हांसी के डीएसपी, हांसी सदर थाना के एसएचओ व अन्य पुलिस अधिकारी अधिकता रजत कल्सन के घर में घुस गए तथा उनकी पत्नी तथा दोनों छोटे बच्चों को डराने की कोशिश की व अधिवक्ता कल्सन की पत्नी को धमकी दी कि अगर अधिवक्ता रजत कलसन हमारे सामने पेश नहीं हुआ तो तुम्हें दोनों बच्चों सहित थाने में बिठा लेंगे।

☞ पुलिस रजत कल्सन को दो साल पुराने मामले में गिरफ्तार करना चाहती थी, जिस बारे में हिसार की अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश की अदालत ने अधिवक्ता रजत कल्सन अग्रिम जमानत दी है तथा पुलिस को फटकार भी लगाई है ।

☞ पुलिस रजत कल्सन का मोबाइल कब्जे में लेना चाहती है तथा जिस तरह से भीमा कोरेगांव में वकीलों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के मोबाइल फोन तथा लैपटॉप में सरकार द्वारा कब्जे में लेकर उनमे टूल किट डालकर उन्हें फर्जी तरीके से आतंकी गतिविधियों में शामिल दिखाया था ,इसी तरह से पुलिस कल्सन के मोबाइल को कब्जे में लेकर उसमें टूल किट इंप्लांट कर अधिवक्ता रजत कल्सन को अर्बन नक्सलाइट घोषित करना चाहती है तथा उन्हें लंबे समय के लिए जेल में बंद करना चाहती है।

इसलिए सभी दलित समाज के जागरूक लोगों से अनुरोध है कि इससे पहले की पुलिस रजत कल्सन को जातिवादी गुंडो के हमले में मरवा दे या उन्हें अर्बन नक्सली घोषित कर सालों साल के लिए जेल में डाल दे ,हमें अपने समाज के लिए आवाज उठाने वाले रजत कल्सन के लिए उनके साथ खड़ा होना पड़ेगा व उनकी मदद करनी पड़ेगी नहीं तो सरकार उनकी आवाज को बंद कर देगी तथा फिर हरियाणा में दलितों की आवाज उठाने वाला कोई जिंदादिल वकील या सामाजिक कार्यकर्ता नहीं बचेगा।

चाहे भाटला का मुद्दा हो चाहे मिर्चपुर का मामला हो या फिर हरियाणा में दलित समाज से जुड़ा कोई भी अत्याचार का मामला हो, ये सारे के सारे मामले सामाजिक मामले है इसलिए हमें पार्टी व संगठन से ऊपर उठकर एकजुट होना होगा।

इसलिए आपसे अनुरोध है कि अधिवक्ता रजत कल्सन की आवाज मजबूत करने के लिए तथा उनको न्याय दिलाने के लिए 14 जुलाई को सुबह 10 बजे हिसार के क्रांतिमान पार्क में इकट्ठा होने का काम करें।

रजत कल्सन दलित अधिकार कार्यकर्ता

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**